

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४१

प्रबन्ध आ निबन्ध
समालोचना

सिद्धान्त आ निबन्ध

छप्पन मूल इकाईक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

मूल कृतिकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४१

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

प्रथम खण्ड : सिद्धान्त आ निबन्ध

मूल कृतिकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय • खण्ड ४१

मूल ग्रन्थ : प्रबन्ध • निबन्ध • समालोचना — सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल स्रोत : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • ISSN 2229-547X

आकार : ६ × ९ इंच • अध्ययनक सीमा : प्रथम खण्डक प्रबन्ध १-२७ आ निबन्ध २८-५६।

मूल पाठक शीर्षक आ उद्धरण मूल पुस्तकक अनुसार; वर्तमान पुस्तकमे समालोचनात्मक विवेचन आ पाठाधारित निष्कर्ष संकलित अछि।

अनुक्रमणिका

१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना	६
२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता	८
३. नव्य-न्यायक दृष्टि : प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य	९
४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र	११
५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र	१३
६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र	१४
७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र	१६
८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र	१७
९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र	२०
१०. नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र	२२
११. मैथिली हाइकू / हैकू / क्षणिका	२३
१२. दोहा / रोला / कुण्डलिया	२५
१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र	२६
१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच	२८
१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार : पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति	३०
१६. कुणालक नाट्य-शिल्प : लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता	३१
१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन	३३
१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य : रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति	३४
१९. वैचारिक धरातल : समानान्तर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच	३५
२०. मैथिली लेल एकटा नारीकेन्द्रित समीक्षाशास्त्र : कामिनी आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक कृतिसभ	३६
२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र — दोसर प्रकरण	३९

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र	४१
२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान	४२
२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास	४
२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली : क्षेत्रकार्यपर आधारित अध्ययन	४६
२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान	४
२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली	४८
२८. रचना लिखबासँ पहिने...	५०
२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी	५१
३०. साहित्यमे लोक-तत्त्व : गाथा, नृत्य आ नाटक	५२
३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली	५३
३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान	५४
३३. अभिनय पाठशाला	५५
३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ	५६
३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव	५७
३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष	५८
३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली	५८
३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव	५९
३९. शब्द-विचार : सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली	६०
४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला : बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे	६१
४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि	६२
४२. वजन प्रबन्धन : एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव	६३
४३. एनी एनी आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार	६४
४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श	६५

४५. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श	६६
४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श	६७
४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि	६८
४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था : एकटा विमर्श	६९
४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन	६९
५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्तसमागमक पुनर्पाठ	७०
५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श	७१
५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) प्रसंग	७२
५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक : संस्था, आन्दोलन आ आलोचना	७३
५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी : संगणक, छायांकन, कुँजीपटल, अन्तर्जाल आ ई-प्रकाशन	७४
५५. अन्तर्जाल आ मैथिली	७५
५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार	७६

सैद्धान्तिक प्रबन्ध आ निबन्धक समीक्षा

१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना

एहि प्रारम्भिक प्रबन्धक विशिष्टता एकर प्रश्नवाची आरम्भमे अछि। लेखक साहित्य आ कलाक प्रयोजनसँ समीक्षा-सिद्धान्तक आवश्यकता धरि पहुँचैत छथि। ओ साहित्यकें मनोरञ्जन अथवा उपदेशक एकटा मात्र वर्गमे नहि बान्हैत छथि; निरुद्देश्यताक कलात्मक सम्भावना सेहो स्वीकार करैत छथि।

एहि स्वीकारोक्तिक बाद हुनकर तर्क सामाजिक न्याय, पाठकीय मुक्ति, भाषिक उत्तरदायित्व आ आलोचकक नैतिक संयम दिस बढ़ैत अछि। एही द्वैतमे प्रबन्धक मुख्य बौद्धिक तनाव अछि: कलाक स्वायत्तता मानल जाय, अथवा सामाजिक प्रयोजनकें गुणवत्ताक अन्तिम प्रमाण बनाओल जाय? लेखक दुनू पक्षकें स्थान दैत छथि, मुदा हुनकर निर्णयक कसौटी प्रायः सामाजिक उत्तरदायित्व दिस झुकैत अछि।

प्रबन्धमे वैदिक पाठ-संरक्षणक विधिसभ आ संगीत-कला-साहित्यक परम्पराक उल्लेख कऽ समीक्षा-विवेकक ऐतिहासिक धरातल तैयार करबाक प्रयास अछि। पदपाठसँ घनपाठ धरि स्मरण-प्रणालीक चर्चा आ सामवेदक संगीतात्मक भूमिकाकें लेखक कलात्मक विधानक ऐतिहासिक उदाहरण मानैत छथि। मुदा पाठकें अक्षुण्ण रखबाक तकनीक आ कलाक मूल्य निर्धारित करबाक समीक्षात्मक पद्धति एकहि क्रिया नहि थिक। पहिल पाठ-संरक्षणक साधन अछि, दोसर अर्थ, रूप आ प्रभावपर निर्णयक प्रक्रिया। प्रबन्धक इतिहास-दृष्टि एहि अन्तरकें स्पष्ट कयने रहितय तँ ओकर दार्शनिक आधार आर सुदृढ़ होइतय।

प्लेटो आ अरस्तूक उल्लेखसँ लेखक साहित्यक सत्य, अनुकरण, आनन्द आ दार्शनिक अर्थक प्रश्न उठबैत छथि। तत्पश्चात् रस, ध्वनि आ शास्त्रीय भारतीय परम्पराक विवेचन अवैत अछि। पश्चिमी सिद्धान्तकारक चर्चामे फूको, बाख्तिन, लाकाँ, बार्थ, देरिदा, नारीवादी आलोचक आ उत्तर-औपनिवेशिक विचारक एकहि प्रबन्धक अन्तरगत समाहित छथि। एहन व्यापकता पाठककें अनेक पद्धतिक प्रवेश-द्वार दैत अछि; किन्तु एकर जोखिम ई अछि जे भिन्न दार्शनिक परम्पराक विशिष्ट प्रश्नसूत्र छोट सारवाक्यमे सिमटि सकैत अछि। उदाहरणस्वरूप,

विमर्शद्वारा सत्यक निर्माणक प्रश्न आ पाठमे भाषिक संरचनाक प्रश्न सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा तिनकर प्रमाण-प्रक्रिया समान नहि। संक्षिप्त परिचयक बाद अवधारणागत अन्तरक क्रमबद्ध तुलना अपेक्षित अछि।

प्रबन्धक सभसँ ठोस आलोचनात्मक प्रसङ्ग पुस्तक पढने बिना ओकरा प्रशंसित अथवा निन्दित करबाक विरुद्ध लेखकक प्रतिवाद अछि। ओ एकटा कथाक वास्तविक घटनाक्रम आ ओकर विषयमे प्रकाशित सकारात्मक निष्कर्षक बीच विसंगति देखबैत छथि। एहि दृष्टान्तसँ लेखक बतबैत छथि जे शीर्षक अथवा पूर्वधारणा पढिकऽ समीक्षा लिखब पाठ-साक्ष्यक विकल्प नहि भऽ सकैत अछि। एतय हुनकर प्रतिपादन मात्र नैतिक उपदेश नहि; ई समीक्षाक ज्ञानमीमांसात्मक शर्त अछि। आलोचकक व्याख्या मूल पाठक घटना, कथन आ सन्दर्भसँ परीक्षणयोग्य होयबाक चाही। एहि कसौटीकेँ अन्य समीक्षा-विधामे समान रूपसँ लागू करब एहि प्रबन्धक उपयोगी योगदान अछि।

अन्तर्जाल, अभिव्यक्तिक स्वाधीनता, प्रतिलिप्यधिकार आ सामग्रीपर प्रतिबन्धक प्रश्न समाविष्ट कऽ प्रबन्ध पारम्परिक सौन्दर्यशास्त्रसँ सार्वजनिक संचारक नैतिकता धरि पहुँचैत अछि। एहि विस्तारमे लेखकक चिन्ता स्पष्ट अछि: सूचना-सुलभता आ सर्जकक अधिकार दुनू बचल रह्य। तथापि कानूनक समयसीमा, यान्त्रिक सामग्री-नियन्त्रण आ डिजिटल प्रतिकृतिसम्बन्धी दावासभकेँ स्रोत, क्षेत्राधिकार आ संस्करणक आधारपर पृथक सत्यापनक आवश्यकता अछि। साहित्यिक मूल्यक प्रतिपादन आ विधिक तथ्यक प्रतिपादनक प्रमाण-मानक अलग होइत अछि। ग्रन्थक प्रामाणिकता एहने भेदकेँ सुरक्षित रखलासँ बढ़ैत।

एहि प्रबन्धक आलोचनात्मक उपलब्धि आलोचककेँ समाजसँ पृथक, केवल शब्दक खेलमे मग्न निर्णायक नहि मानब अछि। लेखकक लेल आलोचकक आत्मसंयम, श्रमक सम्मान, सामाजिक विविधताक प्रति संवेदना आ मूल पाठक सम्पूर्ण वाचन अनिवार्य अछि। सीमा ई जे समानता-न्यायक मूल्य आ कलात्मक गठनक मूल्यक मध्य टकराव भेला पर निर्णयक विस्तृत रूपरेखा स्पष्ट नहि बनैत। एकर उत्तर एकरूप नैतिक मानदण्ड थोपबाक बदला पाठ-आधारित बहुकसौटी पद्धतिसँ भेटि सकैत अछि: भाषिक शिल्प, रचनात्मक संगति, ऐतिहासिक स्थिति, सामाजिक प्रभाव आ विरोधी व्याख्याक परीक्षण। ई प्रबन्ध ओहि पद्धतिक आवश्यकताकेँ बलपूर्वक सामने अनैत अछि।

२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता

दोसर प्रबन्धक विस्तार छोट अछि, मुदा विषय नव प्रयोगक औपचारिकता सँ जुडल अछि। लेखक दूटा अलग काव्यरूप प्रस्तुत करैत छथि: पाँतिक लम्बाइक आवर्तनपर आधारित पुनरावृत्तिमूलक कविता आ दृश्य आकृति बनबैत आकार-कविता। एहि वर्गीकरणक महत्त्व ई जे कविता केँ केवल छन्दक श्रव्य अनुक्रम नहि मानि पृष्ठपर ओकर दृश्य व्यवस्था सेहो अर्थनिर्माणक साधन मानल गेल अछि।

पहिल उदाहरणमे दूर देश दिस गमन, पुरनका परिचित संसारसँ अलग होयब, रस्ता बिलायब आ फेर आरम्भक सम्भावना आवर्तित कथ्य बनैत अछि। कविताक पाँतिसभ छोट-पैघ भऽ कऽ यात्रा आ अस्थिरताक अनुभवकेँ दृश्य लय प्रदान करैत अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे एहन पुनरावृत्तिमे ध्वनिक आवृत्ति अनिवार्य नहि; पाँतिक विस्तारक फेर-फेर अवतरण मुख्य संकेत अछि। एहि सिद्धान्तक सम्भावना अछि, मुदा आलोचनात्मक प्रश्न रहैत अछि: जँ पाँतिक लम्बाइमे कोनो मापनीय अथवा पहचानल जा सकय एहन आवर्ती अनुक्रम नहि हो, तँ मात्र असमान पाँतिक समूहकेँ पैटर्न-कविता मानबाक आधार की होयत? उदाहरणक वास्तविक पाँति-क्रम, अक्षर-संख्या वा दृश्य माप स्पष्ट कयलासँ रूपक कसौटी अधिक परीक्षणयोग्य होइत।

दोसर उदाहरणमे गाछक छवि आ 'चेन्हासी'क धुँधलायब एक-दोसरासँ सम्बद्ध अछि। शब्दकेँ क्रमशः छोट खण्डमे तोड़ि, अलगा पाँतिपर रखलासँ आँखिक गतिकेँ नियन्त्रित करबाक प्रयत्न होइत अछि। एतय पाठककेँ मात्र कथ्य नहि, अक्षरक स्थान सेहो पढ़य पडैत अछि। चित्रात्मकता आ अर्थक सम्बन्धक कारण ई रचना आकार-कविताक नीक परीक्षणक्षेत्र बनैत अछि। मुदा साधारण देवनागरी पाठक पुनर्मुद्रण, भिन्न फॉन्ट अथवा ई-पुस्तकक स्वचालित पाँति-विन्यासमे आकृति बदलि सकैत अछि। तँ आकार-कविताक प्रामाणिक अध्ययनमे मूल पृष्ठक दृश्य विन्यास सुरक्षित रखब पाठ-साक्ष्यक आवश्यक अङ्ग थिक।

प्रबन्धक “मैथिलीमे पहिल बेर” सम्बन्धी उद्घोषणाकेँ विधागत इतिहासक स्थापित निष्कर्ष नहि, लेखकक दावा मानि जाँचब चाही। एहन ऐतिहासिक प्राथमिकताक प्रमाण लेल पूर्व पत्रिका, प्रकाशित कविता, हस्तलिखित प्रयोग आ

तिनकर तिथि खँगालब आवश्यक होयत । एहि स्रोत-पुस्तकमे देल उदाहरण मात्रसँ मैथिलीक समस्त पूर्व काव्यपरम्परामे एहन प्रयोग अनुपस्थित छल, से सिद्ध नहि होइत अछि । एहि सावधानीसँ लेखकक रचनात्मक योगदान घटैत नहि; उलटे मौलिक प्रयोग आ साहित्येतिहासक दावाक बीच उचित दूरी बनैत अछि ।

एहि लघु प्रबन्धक वास्तविक देन मैथिली कवितामे अक्षर, पाँति, श्वेत स्थान आ दृश्यरूपकें समीक्षाक विषय बनेब अछि । एहिमे छन्दशास्त्रक विस्तारक सम्भावना देखाइत अछि, जँ अनुप्रयुक्त परीक्षणमे पाठकक दृष्टि-गति, पाठ-विराम, आवृत्तिक नियम आ अर्थ-आकृतिक परस्परता मापनयोग्य रूपमे स्पष्ट कयल जाय । आकार मात्र सजावट नहि, अर्थकें पढ़बाक अलग विधि बनि सकैत अछि—एहि सम्भावनाक दिशामे प्रबन्ध एकटा सार्थक आरम्भ अछि ।

३. नव्य-न्यायक दृष्टि : प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य

तेसर प्रबन्ध अत्यल्प विस्तारमे नाटक आ ज्ञानमीमांसाक सेतु बनबैत अछि । लेखक गोनुक युक्तिपूर्ण विजय, सुकन्याक दृष्टि-संबन्धी कथन, श्रुवावतीक अर्थवत्ता, अतिरथक विवेक आ लोकगाथाक प्रामाण्यकें नव्य-न्यायक शब्दावलीमे पढ़बाक प्रस्ताव रखैत छथि । एकर महत्त्व ई अछि जे लोकनाट्य अथवा कथा-परम्पराकें मात्र मनोरञ्जनक वस्तु नहि, ज्ञान बनबाक सामाजिक प्रक्रिया मानल गेल अछि । मुदा प्रस्तावित सम्बन्धकें दार्शनिक प्रमाण मानबाक लेल पाठक दृश्य आ तर्कक रूप एकहि तरहँ विस्तारसँ देखेबाक आवश्यकता अछि ।

लेखक 'चालिस चोर' मे बल आ बुद्धिक द्वन्द्वकें प्रमा आ अनुमानक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि । एतय सावधानीसँ भेद करब आवश्यक अछि: सफल चाल, चतुर निर्णय, यथार्थ ज्ञान आ प्रमाणजन्य निश्चित ज्ञान एकहि अर्थक शब्द नहि थिक । गोनुक कोन निरीक्षण आधार बनैत अछि, ओहि निरीक्षणसँ की सामान्य सम्बन्ध ग्रहण होइत अछि, निष्कर्ष कोन अछि आ ओकर सत्यता केना स्थापित होइत अछि—एहि चारू स्तरक पुनर्निर्माण कयने नव्य-न्यायक शब्दावली केवल उपमा रहबाक जोखिम घटत । लेखकक प्रस्ताव व्याख्याक नीक आरम्भ अछि, सिद्ध अनुमान-रचना एखन नहि ।

‘सुकन्या’क उदाहरणमे आँखि मूनला पर वृक्ष नहि देखायब आ वृक्षक वास्तवमे उपस्थित रहबक अन्तर चर्चित अछि। एहि दृष्टान्तसँ ज्ञेयक सत्ता आ ज्ञाताक प्रत्यक्ष बोधकेँ पृथक करबाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि। किन्तु अप्रत्यक्षता, अनुपलब्धि, अभाव आ अभावक ज्ञानक भेदक तार्किक सूक्ष्मता एतय पर्याप्त विस्तार नहि पबैत अछि। कोनो वस्तु नहि देखायब मात्रसँ ओकर अभाव सिद्ध नहि होइत, मुदा एहि कथनसँ अपने आप ज्ञानक सभ सकारात्मक सिद्धान्त सेहो सिद्ध नहि भऽ जाइत। प्रमाणक प्रसङ्ग, इन्द्रिय-सन्निकर्ष आ ज्ञान-स्थितिक विशिष्टता स्पष्ट करबाक जरूरत अछि।

श्रुवावती आ अतिरथक उदाहरणमे लेखक सम्बन्ध आ गुण-चयनक बौद्धिक विवेक देखैत छथि। ई रोचक पाठ सम्भावना अछि, कारण नाटकीय पात्रक निर्णय प्रायः कतेको सम्भव अर्थक मध्य चयनक परिणाम होइत अछि। तथापि सामान्य अर्थमे “अर्थवान” होयब आ नव्य-न्यायक विशिष्ट अवच्छेदक अथवा सम्बन्ध-विचार एकरूप नहि अछि। नाटकक भाषा, पात्रक उद्देश्य आ दार्शनिक परिभाषा तीनूकेँ अलग रखैत पुनः तुलना करब चाही।

अन्तिम अनुच्छेद लोकस्मृति आ लोकज्ञानक प्रामाण्यक प्रश्न उठबैत अछि। सलहेस-गाथा, गोनू-चक्र आ विदापत-नाचकेँ सांस्कृतिक ज्ञानक भण्डार मानब मूल्यवान प्रस्ताव अछि। मुदा कोनो परम्परा ऐतिहासिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण होयब आ ओकर प्रत्येक कथन तथ्यगत रूपेँ प्रमाणित होयब भिन्न विषय अछि। लोकस्मृतिक सामाजिक सत्य, ऐतिहासिक घटना, नाटकीय रूपक आ नैतिक दृष्टान्तकेँ पृथक-पृथक पढ़ब अधिक सटीक निष्कर्ष देत।

प्रबन्धक मुख्य उपलब्धि परम्परागत ज्ञानमीमांसाक शब्दावलीसँ मैथिली लोकनाट्यक नव पाठ सम्भव बनब अछि। एकर मुख्य सीमा तथ्यगत नहि, पद्धतिगत अपूर्णता अछि: प्रतिज्ञा अछि, उदाहरणक संकेत अछि, मुदा औपचारिक तर्क-क्रम आ प्रतिपक्ष-परीक्षण संक्षिप्त अछि। मूल नाटकक सम्बद्ध दृश्य, पात्रक वचन आ घटनाक क्रमकेँ समानान्तर रखि विश्लेषण करबासँ एहि प्रस्तावक आलोचनात्मक बल आर बढ़त। लोकज्ञानक सम्मान आ दार्शनिक कठोरता दुनूकेँ संग रखबाक ई खण्ड उचित अवसर उपलब्ध करबैत अछि।

पहिल तीन प्रबन्धक अन्तर्सम्बन्ध

पहिल प्रबन्ध समीक्षा आ नैतिक उत्तरदायित्वक व्यापक प्रतिज्ञा रखैत अछि; दोसर प्रबन्ध कविता-पाठक दृश्य संरचनाक विशिष्ट उदाहरण दैत अछि; तेसर प्रबन्ध प्रमाण-विवेकक शास्त्रीय शब्दावलीकें नाटकीय अर्थपर लागू करैत अछि। एहि क्रमकें सामान्य सँ विशिष्ट दिस गमनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। एकटा साझा प्रश्न तीनू ठाम पुनः उपस्थित होइत अछि: समीक्षाक निर्णय केवल आलोचकक रुचिपर नहि, तर्क आ उपलब्ध पाठ-साक्ष्यपर निर्भर केना रहत? पहिल एकर नैतिक आवश्यकता कहैत अछि, दोसर रूपगत कसौटीक परीक्षण माँगैत अछि, तेसर ज्ञानमीमांसात्मक स्पष्टताक चुनौती रखैत अछि।

तीनू अध्ययनक निष्कर्ष ई नहि जे प्रयोग, सामाजिक पक्षधरता अथवा लोकपरम्परा शास्त्रीय कसौटीसँ बाहर अछि। निष्कर्ष ई अछि जे नव प्रयोगक रक्षा ओकरा विशिष्ट पाठ-रूपमे देखला, स्रोतक सत्यापन केलासँ आ विरोधी व्याख्याक सामना केलासँ होइत अछि। एहि अर्थमे “समीक्षाक समीक्षा”क वास्तविक काम लेखकक उद्घोषणा दोहराएब नहि, हुनकर प्रश्नसभकें प्रमाणसहित आर कठोर रूपमे परखब थिक।

४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

चतुर्थ प्रबन्ध मैथिली गद्यक आन्तरिक विधा-सीमा निर्धारित करबाक प्रयास अछि। लेखक विहनि कथाकें कथा, लघुकथा आ उपन्याससँ पूर्णतः अलग, बंद रूप मानबाक विरोध करैत छथि। मूल प्रस्ताव ई अछि जे विहनि कथा पहिने कथा थिक, तकर बाद आकारगत रूप। अनुभव आ कल्पनाक संयोगसँ जन्मल छोट घटना, एक पक्षक विवेचन अथवा संक्षिप्त कथात्मक स्थिति एकर आधार बनि सकैत अछि। ई व्याख्या विधाकें पृष्ठसंख्याक कठोर अनुशासनसँ मुक्त करैत अछि, मुदा संगहि शिल्पक पहचानकें जटिल बनबैत अछि। जँ दू पाँतिसँ पाँच पृष्ठ धरि लम्बाइ सम्भव हो, तँ कथा-विन्यासक आन्तरिक गठन, समयक संकुचन आ अर्थक तीव्रता आकारसँ बेसी निर्णायक कसौटी बनत।

प्रबन्ध त्वरित उपस्थापन आ स्थायी साहित्यिक प्रभावक बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर करैत अछि। लेखकक मतमे तुरन्त चकित करबाक जुगति विहनि कथाक अनिवार्य गुण नहि; असमय लिखल अनुभव केवल क्षणिक चमत्कारमे सिमटि सकैत अछि। एहि सन्दर्भमे कथ्यकै समय दऽ पकब देवाक आग्रह आलोचकीय दृष्टिसँ सार्थक अछि। तथापि तत्काल बौद्धिक झटका अपने आप सतही नहि होइत: कोनो एक क्षणक झलक जीवनक दीर्घ विसंगतिक खुलासा कऽ सकैत अछि। तँ समीक्षाक प्रश्न ई नहि जे अन्त चमत्कारी अछि कि नहि, वरन् ई जे अन्तिम संकेत पूर्ववर्ती क्रिया आ अर्थ-संरचनाक संग कतेक संगत अछि।

लेखक घटना-शृंखलाक पूर्णता, वर्णनक संयम आ पात्रक अनावश्यक विस्तारसँ बचबाक पक्षधर छथि। एहि तर्कमे विहनि कथाक शिल्प केवल घटबाब अथवा छोटा करबाक नाम नहि, कथ्यक आवश्यक अंशक चयन बनैत अछि। मुदा घटनाक एकहि शृंखला कथा पूर्ण करैत अछि कि नहि—एहि प्रश्नक उत्तर सभ पाठमे एकरूप नहि होयत। किछु विहनि कथामे अनुपस्थित घटना, मौन आ अपूर्णता स्वयं अर्थ बनबैत अछि। एकरा कमी ठहराएबासँ पहिने लेखकक जानि-बूझि रचल विराम आ अनजाने छूटल कडीक भेद जाँचल चाही।

जेम्स जाँयसक डब्लिनर्स, चेखव आ खलील जिब्रानक उल्लेखसँ लेखक लघु कथा-विधाक तुलनात्मक क्षितिज बढ़बैत छथि। जाँयसक कथासभमे अचानक बोध अथवा अनुभूतिक क्षणकै लेखक मैथिली विहनि कथाक दृष्टान्त मानैत छथि। एहि तुलनाक सम्भावना अछि, मुदा विदेशी संग्रहक समस्त कथाकै समान रूपेँ विहनि कथा ठहरायब लेल अलग-अलग कथाक अन्तःगठन देखब आवश्यक अछि। ‘एपिफनी’ एक प्रकारक बोधात्मक रचना-क्षण अछि, सम्पूर्ण विधाक एकमात्र निर्धारक नहि।

दुर्गानन्द मण्डलक ‘किसनामुट्टी’, उमेश मण्डलक ‘रुपैया क ढेरी’, राजदेव मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल आ आन रचनाकारक उल्लेखसँ प्रबन्ध स्थानीय साहित्यिक उदाहरणक धरातल पबैत अछि। लेखक शब्दावलीक स्वाभाविकता, स्त्री-सशक्तीकरण आ सामाजिक न्यायकै समीक्षाक प्रश्न बनेबैत छथि। मुदा नामोल्लेख आ श्रेष्ठता-निर्णयक बीच मूल कथा-पाठक आवश्यक प्रमाण रहिते अछि। एकहि समीक्षात्मक अनुच्छेदमे कृति-विशेषक निर्णायक दृश्य, शब्द-चयन आ प्रतिपक्षक सम्भावना प्रस्तुत कयलासँ एहि प्रस्तावक प्रामाणिकता आर

बद्धितय। एहि प्रबन्धक मूल उपलब्धि ई अछि जे संक्षिप्त कथाक भीतर अर्थक स्थायित्व, सामाजिक अनुभव आ रूपगत संयमकेँ एक संग विचारबाक आग्रह करैत अछि।

५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र

पाँचम प्रबन्ध चतुर्थक विधागत तर्ककेँ आगाँ बढ़बैत लघुकथाक व्यापक जीवन-क्षेत्रपर विचार करैत अछि। विहनि कथाक अपेक्षा बेसी कथात्मक अवसर, किन्तु उपन्यासक तुलनामे सीमित विस्तार—ई लेखकक आरम्भिक भेद अछि। लेखक गाम, नगर आ प्रवासक जीवनमे सामाजिक प्रतिष्ठा, जाति, आर्थिक परिस्थिति आ स्त्रीक स्वाधीनताक अलग रूप चिन्हैत छथि। एतय लघुकथाक सीमा केवल शब्दगणना नहि, बल्कि कम पृष्ठमे सामाजिक सम्बन्धक जटिलता उपस्थित करबाक रचनात्मक कौशल अछि। मुदा प्रवासी साहित्य लेल एकदम स्वतंत्र समीक्षाशास्त्रक आवश्यकता घोषित करबाक बदला देखेबाक चाही जे कोन कसौटी समान अछि आ कोन कसौटी परिवर्तित होइत अछि।

मूल प्रबन्ध नारीवादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणात्मक, संरचनावादी, उत्तर-संरचनावादी आ उत्तर-आधुनिक विचारधारासँ साहित्यिक पाठक सम्पर्क करबैत अछि। बहुविध पद्धतिक एहि परिचयमे एकटा मूल्यवान सम्भावना अछि: लघुकथा एकहि दृष्टिसँ समाप्त नहि होइत। मुदा विचारकसभक सिद्धान्त जखन छोट-छोट सार-वाक्यमे एक संग अबैत अछि, तखन अनेक अवधारणाक ऐतिहासिक अन्तर धुँधला पड़बाक जोखिम अछि। मार्क्सक द्वन्द्वात्मक पद्धति, फ्रायडक अचेतन, बाख्तिनक संवाद, फूकोक सत्ता-ज्ञान आ देरिदाक विखण्डन एक-दोसराक पर्याय नहि छथि। समीक्षाक अन्तिम विश्वसनीयता एहिसँ निर्धारित होयत जे विशिष्ट कथाक शब्द, दृश्य आ पात्र-संबन्धपर कोन सिद्धान्त कतेक फलदायी अछि।

प्रबन्धक सभसँ तीक्ष्ण हिस्सा बिना मूल कथा पढ़ने सकारात्मक समीक्षा लिखबाक प्रवृत्तिक प्रतिवाद अछि। ‘नमाजे शुकुराना’क प्रसङ्गमे लेखक एक प्रकाशित समीक्षकक साम्प्रदायिक सौहार्दविषयक निष्कर्षक विरोधमे अपन कथासार प्रस्तुत करैत छथि। हुनकर प्रतिवादक बल एहि प्रश्नमे अछि जे समीक्षकक मूल्य-निर्णय आ कथाक वास्तविक घटना एक-दोसरासँ मेल खाइत

अच्छि कि नहि। मुदा ई विवादक अन्तिम निर्णय करबाक लेल कथाक प्रमाणित सम्पूर्ण प्रति, उद्धृत समीक्षाक पाठ आ प्रसङ्गक समानान्तर वाचन आवश्यक अछि। लेखकक प्रस्तुत कथासार केँ जांचक संकेत मानल जा सकैत अछि, स्वतंत्र पाठ-साक्ष्यक विकल्प नहि।

लेखक अत्यधिक प्रशंसा, व्यक्तिगत आक्षेप आ समीक्षकक विद्वत्ता-प्रदर्शनसँ सावधान करैत छथि। समीक्षा कृतिक हो, लेखकक सम्पूर्ण जीवनक वर्णन मात्र नहि; शैलीक विशेषता, कथात्मक अन्तर, छूटल पक्ष आ सम्भावित विरोधी वाचन पहचानल जाय—ई प्रतिपादन व्यावहारिक अछि। लेखक लगभग हजार शब्दक समीक्षाक अनुशंसा करैत छथि, मुदा शब्दसीमा एक साहित्यिक सामान्य नियम नहि बनि सकैत अछि। किछु जटिल कथा संक्षिप्त टिप्पणीमे नहि खुलत, आ किछु सरल कथाक परीक्षण कम शब्दमे सम्भव अछि। आलोचनात्मक श्रमक माप सामग्रीक आवश्यकतासँ होयबाक चाही।

एहि प्रबन्धक महत्त्व समीक्षा-नैतिकता आ सामाजिक आलोचनाकेँ जोड़ब अछि। किन्तु सामाजिक न्याय अथवा लेखकक राजनीतिक विचारकेँ मुख्य निर्णायक बनायबासँ कथात्मक विडम्बना, अविश्वसनीय कथावाचक, मौन, बहुअर्थक प्रतीक आ असहज अन्तिम स्थितिक कला गौण पड़ि सकैत अछि। उपयोगी समीक्षाशास्त्रक लेल रचनाक रूपगत उपलब्धि, सामाजिक इतिहास, भाषिक संस्कार आ पात्रक अन्तर्विरोधकेँ अलग-अलग परखि तकर बाद संयुक्त निर्णय उचित अछि। लेखकक मौलिक आग्रह—पढ़ल पाठपर आधारित स्पष्ट, संयमित समीक्षा—एहि बहुविध परीक्षणक केन्द्र रहबाक योग्य अछि।

६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

छठम प्रबन्ध उपन्यासक उत्पत्ति आ आधुनिक विकासक तुलनात्मक प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि। बाणभट्टक 'कादम्बरी'मे शूद्रक, वैशम्पायन सुग्गा आ चाण्डाल कन्याक प्रसङ्ग लेखककेँ कथाक बहुस्तरीय गठन देखयबाक अवसर दैत अछि। तकर बाद 'डॉन क्विक्जोट' आ अंग्रेजी उपन्यास-परम्पराक उल्लेखसँ लेखक शास्त्रीय आख्यान आ आधुनिक उपन्यासक बीच ऐतिहासिक सम्बन्ध बनबैत छथि। एहि तुलनाक उपयोगिता अछि, मुदा संस्कृत गद्यकाव्य, आरम्भिक यूरोपीय दीर्घ कथा आ आधुनिक मुद्रित उपन्यासकेँ एकहि विधागत

नामक अन्तर्गत रखबासँ उत्पत्तिक पृथक सामाजिक, भाषिक आ पाठकीय परिस्थिति बिसरल जा सकैत अछि। विधागत समता जाँचबाक लेल केवल लम्बाइ नहि, कथाकारक स्थिति, काल-संरचना, संवाद आ सामाजिक परिवेशक गठन सेहो आवश्यक अछि।

प्रबन्ध उपन्यासकें बहुस्वरक गद्यरूप मानैत अछि—जतय वाद-विवाद, प्रेमाख्यान, चरित्र, भूगोल, इतिहास आ हास्य-व्यंग्य परस्पर पैसैत अछि। ई विवरण उपन्यासक सम्भावित व्यापकता स्पष्ट करैत अछि। किन्तु ई सभ तत्त्व एकसाथ उपस्थित होयब प्रत्येक उपन्यासक अनिवार्य शर्त नहि। किछु उपन्यास अत्यल्प पात्र, सीमित स्थान अथवा खण्डित कालानुभवक आधारपर असाधारण प्रभाव रचैत अछि। तें समीक्षाक उचित आरम्भ रचनाक अपन संरचनात्मक नियम चिन्हब अछि, तैयार नमूनाक अनुरूप ओकरा ढालब नहि।

लेखक विचारधाराक कलात्मक उपस्थिति लेल पानिमे घुलल नून आ ऊपर तैरैत तेलक उपमा प्रयुक्त करैत छथि। ई एहि प्रबन्धक सभसँ स्मरणीय आलोचनात्मक कसौटी अछि। एकर आशय ई जे रचनाकारक सामाजिक दृष्टि पात्रक जीवन, संघर्ष आ क्रियामे समाहित हो; कथावाचकक खुलल घोषणा मात्र बनि नहि रहय। जगदीश प्रसाद मण्डल आ चतुरानन्द मिश्रक प्रसङ्ग एहि विचारक समर्थनमे अनल गेल अछि; यात्री आ धूमकेतुक साहित्यक संग लेखक तुलनात्मक निर्णय करैत छथि। तथापि ई तुलना लेखकक पक्षधर प्रतिपादन अछि, अन्तिम प्रमाणित निर्णय नहि। चारू रचनाकारक निर्दिष्ट मूल कृतिक दृश्य आ कथन-रचनाक तुलनासँ मात्र उपमाक विवेचनात्मक सामर्थ्य जाँचल जा सकत।

भाषा-सन्दर्भमे प्रबन्ध तथाकथित संकीर्ण मानकीकरणक विरोध करैत मिथिलाक अनेक सामाजिक समूह आ क्षेत्रक बोलीक समावेशपर बल दैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक 'शम्भूदास'क आरम्भिक अंश उद्धृत कऽ मैथिलीक किर्यारूप आ वाक्य-संरचनाक वैकल्पिक प्रयोग देखयबाक प्रयास अछि। एहि सन्दर्भमे कृतिक बोलीगत स्वाभाविकताक रक्षा आवश्यक अछि, मुदा सभ प्रसङ्गमे क्रियापद अथवा सहायकरूपक लोप समान रूपेँ ग्राह्य अछि, से अनिवार्य निष्कर्ष नहि। संवाद, आख्यानात्मक वाक्य, ऐतिहासिक पाठ आ आधुनिक मानकीकृत गद्यक आवश्यकतामे भेद राखब अधिक उपयोगी होयत।

ऐतिहासिक आ साहित्यिक उदाहरणक विस्तार एहिक बल आ सीमा दुनू अछि। लेखकक लेखक-जीवन सम्बन्धी कथन, दलगत अनुभव आ प्रकाशन इतिहास साहित्यिक मानदण्डक तर्कमे स्थान पबैत अछि। मुदा एहन व्यक्तिगत अनुभवकेँ अभिलेख, साक्षात्कार आ स्वतन्त्र स्रोतसँ अलग पहिचानल जरूरी अछि। प्रबन्धक महत्त्व उपन्यासक जीवित सामाजिक धरातल आ औपचारिक कला बीच सम्बन्धक आग्रहमे अछि। एकरा विकसित करबाक सर्वोत्तम उपाय प्रत्येक उपन्यास लेल कथावाचक, घटनाक समय, पात्रक विकल्प, भाषिक स्तर, विचारधारात्मक तनाव आ अन्तिम परिणामक स्वतंत्र साक्ष्य-सारणी बनायब होयत।

७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

सातम प्रबन्ध बालसाहित्यकेँ पृथक साहित्यिक अनुशासन मानैत अछि, वयस्क साहित्यक छोट अथवा सरल अनुकृति नहि। लेखक शिशु, बाल आ किशोर पाठकक भिन्न विकास-अवस्था चिन्हैत छथि; एक ठाम ०-५, ५-१२ आ १२-१८ बर्षक विभाजन प्रस्तुत अछि। संगहि ओ मानैत छथि जे समान उमेरक सभ बच्चाक बौद्धिक ग्रहणशीलता एकरूप नहि होइत। एहि स्वीकारोक्तिसँ वर्गीकरणक कठोर सीमा अपने आप सापेक्ष बनैत अछि। समीक्षामे वास्तविक पाठकक भाषा-अनुभव, पठनस्तर आ भावात्मक सुरक्षा जाँचब जन्म-वर्ष मात्र देखबासँ बेसी फलदायी होयत।

प्रबन्ध वैदिक आख्यान, लोककथा, जातक, पंचतन्त्र, हितोपदेश, ऐसोपक कथासँ आधुनिक मैथिली बालरचना धरि दीर्घ ऐतिहासिक क्षितिज खींचैत अछि। ई पद्धति बालसाहित्यक कथात्मक स्रोत अनेक परम्परामे खोजनाइ सिखबैत अछि। मुदा प्राचीन आख्यान मूलतः बालक लेल रचल छल कि बादक युगमे बालपाठकक योग्य रूपान्तर पेलक, ई अलग प्रश्न अछि। एहि भेदकेँ नहि राखलासँ आधुनिक बालसाहित्यक ऐतिहासिक जन्मक सन्दर्भ ओझरायल रहत। ग्रन्थमे प्राचीन सभ्यताक कालानुक्रमिक आ सांस्कृतिक प्रसारविषयक विस्तृत दावासभ सेहो अछि; हुनकर पुनर्परीक्षण मूल ऐतिहासिक स्रोतक आधारपर स्वतंत्र करबाक चाही।

मैथिली बालसाहित्यक विषयक चर्चामे विज्ञान, समाजविज्ञान, चित्रकथा, लोकनाटक, पर्यावरण आ सामाजिक विषमताक प्रश्न सम्मिलित अछि। लेखकक मतमे शिशु अथवा किशोरकेँ कठिन सामाजिक सत्यसँ सर्वथा बचायब आवश्यक

नहि; प्रस्तुति ओकर उमेर आ अनुभवक अनुरूप होयबाक चाही। ई महत्त्वपूर्ण सौन्दर्यात्मक आ शैक्षिक कसौटी अछि। बालपात्र केवल नैतिक उपदेश ग्रहण करयवला नहि, प्रश्न करयवला, निर्णय लेयवला आ कल्पना करयवला व्यक्ति सेहो थिक। तें पाठकक स्वायत्तता, भय आ करुणाक सन्तुलन, दृश्य-रूपक स्पष्टता आ बिना प्रत्यक्ष उपदेशक अर्थनिर्माण विशेष मूल्याङ्कन-विषय होयत।

भाषिक विमर्शमे लेखक संयुक्ताक्षर, ङ आ ञक प्रयोग तथा स्वाभाविक मैथिली शब्दावलीक पक्षधर छथि। पाठकक ध्वनि-ग्रहण आ परम्परागत भाषारूपक संरक्षण हुनकर प्रमुख चिन्ता अछि। मुदा बालपाठकक आरम्भिक वाचनमे लिखित जटिलता बढ़ला पर पहुँच कम भऽ सकैत अछि; तें मूल भाषिक विशेषता बचेनाइ आ आयु-अनुरूप सुलभ लेखन दुनूक संतुलन चाही। अक्षरचिन्हक सटीकता, टंकणक पठनीयता, चित्रक सार्थकता आ आवर्तित शब्दक शैक्षिक उपयोग अलग जाँचब उचित अछि।

काश्यप कमल, शिवकुमार झा 'टिल्लू', दुर्गानन्द मण्डल, जगदानन्द झा 'मनु', वृषेश चन्द्र लाल आदि रचनाकारक उल्लेख प्रबन्धकें विस्तृत स्थानीय उदाहरण दैत अछि। 'गोलबा' आ 'चोनहा' सन कृतिक बालमनोविज्ञानपर लेखक मूल्याङ्कन करैत छथि, मुदा प्रत्येक कृतिक मूल्य-निर्णय ओकर वास्तविक दृश्यक साक्ष्यसँ अलग जाँचब आवश्यक अछि। अन्ततः एहि प्रबन्धक मुख्य देन एकर बहुपक्षीय प्रश्न अछि: बालसाहित्य कोना बालकक भाषा, आनन्द, जिज्ञासा, सामाजिक समझ आ कल्पनाक विकासमे सहायक होइ, आ एकर आलोचना केना विशिष्ट पाठकक अनुभवपर आधारित रहय।

८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

अष्टम प्रबन्ध मैथिलीमे अनुवादकें साहित्यिक आदान-प्रदानक मात्र तकनीकी क्रिया नहि, भाषिक आ सांस्कृतिक अर्थक नवनिर्माण मानबाक दिशा खोलैत अछि। लेखक प्राचीन भाष्य-परम्परा, कथान्तर आ आधुनिक अनुवादक इतिहासक चर्चा कऽ मूल भाषा, लक्ष्य भाषा आ मध्यस्थ भाषाक अन्तर सामने अनैत छथि। मैथिलीसँ आन भाषामे आ आन भाषासँ मैथिलीमे प्रत्यक्ष

रूपान्तरणक संगहि अंग्रेजी, हिन्दी अथवा नेपाली मध्यस्थ पाठक उपयोगक प्रश्न उपस्थित अछि। एहि ठाम अनुवादक श्रेयक स्पष्टता एकटा मूल आलोचनात्मक शर्त अछि: जे व्यक्ति मूल पाठ सँ अंग्रेजी बनेलक, तकर कार्य आ अंग्रेजीसँ मैथिली रूपान्तरण करनिहारक कार्य दू अलग भाषिक निर्णय-स्तर अछि।

प्रबन्ध शब्दशः निष्ठा आ भावार्थक संप्रेषणक बीच आवश्यक तनाव चिन्हैत अछि। कहबी, ग्राम्य व्यवहार, सम्बोधन, पुरान शब्द, बोलीक व्याकरण आ देशकालक प्रसङ्ग अर्थनिर्माणमे सहायक छथि। मुदा प्रत्येक पुरान शब्द लेल लक्ष्य भाषामे समान रूपसँ पुरान शब्द खोजब अपन आपमे सफल अनुवादक गारंटी नहि। मूलक प्राचीनता कखन शिल्पगत अर्थ दैत अछि, कखन केवल समय-परिवेश बतबैत अछि, से अलग विचारबाक चाही। अनुवादक लक्ष्य केवल अनजान शब्दक बाह्य रूप बचेनाइ नहि, पाठकक अनुभवमे अर्थक समरूप प्रभाव बनायब सेहो अछि।

लेखक नाटक, कविता, कथा आ वैज्ञानिक/शैक्षिक पाठक अनुवादमे अलग शिल्पगत माँग स्पष्ट करैत छथि। नाट्य-रूपान्तरणमे संवाद बोलबाक सहजता, पात्रक स्वर आ प्रस्तुति-अवधि; कवितामे लय, बिम्ब आ पाँतिक गति; वैज्ञानिक पाठमे पारिभाषिक सटीकता आ संकेतक स्थिरता—ई भेद व्यावहारिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि। लेखक नाटकक अनुवादकेँ विशेष कठिन मानैत छथि। कठिनताक ई क्रम एक सम्भावित अनुभवजन्य निर्णय अछि, सार्वत्रिक सिद्धान्त नहि; जटिल दार्शनिक गद्य वा ध्वनिप्रधान काव्य कखनो अधिक कठिन सिद्ध भऽ सकैत अछि।

प्रबन्ध गद्यसँ पद्य अथवा कथा सँ नाटकमे रूपान्तरणकेँ भाषान्तरसँ अलग करैत अछि। एहि विभाजनक प्रयोग खण्ड ४३क संस्कृत नाटक-अनुवाद, खण्ड ४४क रेडियो नाट्य-रूपान्तरण आ खण्ड ४६क अंग्रेजी मध्यस्थ मार्गसँ मैथिलीमे आयल साहित्यक अध्ययनमे सीधा उपयोगी होयत। विशेषतः कोनो अनूदित कथाक नाट्यरूप बनेला पर मूल अर्थक हानि, दृश्यात्मक परिवर्तन आ पात्रक वाक्-अधिकार स्वतः परिवर्तित होइत अछि। एहि परिवर्तनकेँ प्रत्येक बेर 'त्रुटि' मानबाक बदला आवश्यक रूपान्तरण आ अवांछित अर्थविचलनक बीच भेद करब समीक्षाक मुख्य काम थिक।

संगणकीय अनुवादविषयक परिच्छेदमे लेखक शब्द-संग्रहक आधारपर स्वचालित अनुवादक सम्भावना देखबैत छथि, संगहि अर्थ-विकृतिक उदाहरण उठबैत छथि। आरम्भिक पारिभाषिक कोशक उपयोग महत्त्वपूर्ण रहल हो, तथापि किछु सय अथवा हजार शब्दक समतुल्य-सूची तैयार भेला मात्रसँ त्रुटिविहीन सम्पूर्ण अनुवाद सुनिश्चित नहि होइत। बहुअर्थी पद, वाक्य-विन्यास, मुहावरा आ सांस्कृतिक अन्विति अलग परीक्षण माँगैत अछि। प्रबन्धक टिकाउ उपलब्धि मूल-मध्यस्थ-लक्ष्य पाठक त्रिकोण आ अर्थ-प्रमाणक आवश्यकता स्थापित करबाक दिशा अछि; एकरा विकसित करबाक लेल मूल उपलब्धि, अनुवादकक भूमिका आ पाठभेदक क्रमबद्ध साक्ष्य-सारणी उपयोगी होयत।

प्रबन्ध ४-८ : विधागत अन्तर आ साझा समीक्षा-पद्धति

विहनि कथा, लघुकथा आ उपन्यासक क्रममे लेखक विस्तारक उपलब्धि अवसरक आधारपर विधागत भेद करैत छथि; बालसाहित्यक प्रसङ्गमे पाठकक उमेर आ अनुभव निर्णायक बनैत अछि; अनुवादमे अर्थक भाषान्तर आ सांस्कृतिक परिवेश विषय बनैत अछि। पाँचू प्रबन्ध केँ एकहि सूत्रमे जोड़निहार तत्व अछि—समीक्षा मूल रचनाक वास्तविक शिल्प आ पाठकीय स्थितिसँ उत्पन्न हो, मात्र पूर्वनिर्मित मतसँ नहि। किन्तु प्रत्येक विधाक खास प्रमाण मानक अछि: विहनि कथामे अर्थक संकुचन, लघुकथामे दृश्य-पात्र-अनुभवक संगति, उपन्यासमे व्यापक समय-समाज-भाषा-संरचना, बालसाहित्यमे आयु-अनुकूल ग्रहणशीलता, आ अनुवादमे भाषा-पाठक अन्तरस्तरीय समता।

एहि आठ प्रारम्भिक अध्ययनक एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक उपलब्धि लेखकक सामाजिक न्याय, भाषिक स्वाभाविकता आ पाठाधारित निर्णयपर जोर अछि। तथापि स्थानीय उदाहरणक श्रेष्ठता-निर्णय, विश्वसाहित्यक विधागत तुलनाक दावे आ इतिहास-विषयक कुछ सामान्यीकरण स्वतंत्र मूल साक्ष्य माँगैत अछि। समीक्षा-कर्मक जिम्मेदारी एहि भेदकेँ निरन्तर चिह्नित करब थिक: कोन कथन मूल ग्रन्थक प्रमाणित तथ्य अछि, कोन लेखकक प्रतिज्ञा, आ कोन वर्तमान आलोचनात्मक प्रस्ताव।

१. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

नवम प्रबन्धक विस्तार आ विन्यास एहि संग्रहक आरम्भिक सिद्धान्त-प्रकरणसभसँ भिन्न अछि। आरम्भमे पद्यक लय, बिम्ब, छन्द आ सामाजिक अर्थक आलोचना उपस्थित अछि; तकर बाद गजलशास्त्रक विस्तारित अनुलग्नकमे अरबी-फारसी परम्परा, उर्दू गजल, भारतीय संगीतक स्वर-ताल, वैदिक आ लौकिक छन्द, मात्रा-गणना आ मैथिली उच्चारणक प्रश्न विस्तार पबैत अछि। एतेक भिन्न विषयक एकत्रीकरणक मूल उद्देश्य मैथिली पद्यक विधागत आत्मविश्वास गढ़ब देखाइत अछि। मुदा आलोचनात्मक पाठमे ई स्पष्ट राखब आवश्यक अछि जे कविताक सौन्दर्यनिर्णय, छन्दशिक्षण आ भाषा-सम्पादन तीनटा पृथक प्रश्न छथि; पहिलक निर्णायक आधार पाठक अनुभव, दोसरक गणनात्मक शुद्धता आ तेसरक प्रामाणिक भाषिक प्रयोग होइत अछि। एहि त्रिभाजनसँ प्रबन्धक उपलब्धि आ एकर आन्तरिक असमानता दुनू स्पष्ट होइत अछि।

प्रारम्भिक प्रतिज्ञामे छन्दोबद्धता केँ पद्यक कसौटी बनाओल गेल अछि, मुदा आधुनिक मुक्तछन्दक रचनाकेँ सेहो काव्यक अर्थमे स्थान देबाक आग्रह भेटैत अछि। ई द्वन्द्व उपेक्षणीय नहि: जँ छन्दक अर्थ निर्धारित मात्रा-विधान धरि सीमित हो, तँ मुक्तछन्दक ध्वन्यात्मक आवर्तन, विराम, पाँतिक गति आ बिम्बात्मक संयोजन कोन वर्गमे पड़त? लेखक हरिमोहन झा आ गोपाल जी झा 'गोपेश'क उद्धरण लऽ कथ्यक संप्रेषणीयता पर चर्चा करैत छथि। एहिठाम समीक्षा लेल उपयोगी प्रश्न अछि—कोनो कविता दुरूह छथि से मात्र ओकर दुर्बलता नहि; दुरूहताक भीतर रचनात्मक सघनता, अथवा विचारक अस्पष्टता, कोन कारण काम करैत अछि, तकर प्रमाण शब्द-क्रम आ बिम्बक सम्बन्धसँ देबाक चाही। पद्यकेँ गद्यक उल्टा मात्र मानब एहि समृद्ध सूक्ष्मताकेँ समेटि नहि पबैत अछि।

प्रबन्ध बूचजीक कविताक मार्क्सवादी, ऐतिहासिक, संरचनावादी, नारीवादी, विखण्डनवादी आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय वाचनक प्रस्ताव दैत अछि। सैद्धान्तिक बहुलता मूल्यवान अछि, कारण एकहि कवितामे ध्वनि-रस-औचित्यक सँग-सँग श्रम, जाति, लिंग आ सत्ता-संबन्धक अर्थ देखल जा सकैत अछि। मुदा अलग परम्पराक अवधारणासभकेँ बिना आलोचनात्मक मध्यस्थताक एकहि सूचीमे रखबासँ पाठक वास्तविक अन्तर ओझरायल रहत।

भारतीय रसतत्त्व अनुभूतिक कलात्मक गठन जाँचैत अछि, जखन कि सामाजिक इतिहास कृतिक उत्पादन आ संस्थागत परिस्थितिक जाँच करैत अछि। समीक्षकक जिम्मेदारी अछि जे सिद्धान्तक नामक प्रदर्शन नहि, कोनो विशिष्ट पाँति, आवर्तन अथवा चुप्पीमे ओकर उपयोग दिखाबधि। लेखकक साहित्यिक व्यक्तित्वसभपर देल मूल्यनिर्णय सेहो एहि पाठ-साक्ष्यक कसौटीसँ अलग नहि रहि सकैत अछि।

‘मैथिली गजल समीक्षाशास्त्र’ अनुलग्नक प्रबन्धक स्वतन्त्र आ विस्तृत अंश अछि। एहिमे शेर, मिसरा, मतला, रदीफ, काफिया, बहर आ रुक्नक परिचय; तकर बाद स्वर, राग, ताल, अवग्रह, ह्रस्व-दीर्घ, वैदिक छन्द आ गण-विन्यासक अनुशीलन अछि। लेखक मैथिली गजलक भाषा-सापेक्ष छन्दविधान विकसित करबाक पक्षधर छथि आ ऋग्वैदिक वार्णिक पद्धतिक उपयोगक प्रयोग करैत छथि। ई एकटा सर्जनात्मक प्रस्ताव अछि; तथापि अरूजक बहर आ वैदिक छन्दक गणना अलग ध्वनिशास्त्रीय आधारपर बनल अछि। तें गजलक मिसरामे वास्तविक उच्चारण, दीर्घ-ह्रस्व, यति आ आवर्तनक सुसंगत प्रमाणक बिना दुनू प्रणालीक पूर्ण समतुल्यता स्थापित नहि कएल जा सकैत अछि। प्रयोगकें मान्यता देब आ ओकर सार्वत्रिकता प्रमाणित करब दू पृथक कार्य छथि।

मूल पाठमे गायत्री, त्रिष्टुप् आ जगती नामसँ प्रस्तुत गजल, अन्य गजलक नमूना, वार्णिक-मात्रिक गणनाक बहुसंख्यक उदाहरण आ उच्चारण-सम्पादनक निर्देश उपस्थित अछि। ई सामग्री आलोचककें केवल सिद्धान्त नहि, वास्तविक पाँति देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा कएक ठाम संधि-विच्छेद, दीर्घस्वर, संयुक्ताक्षर आ लिखित अक्षरक गणना एक-दोसरासँ बदलल अवस्था मे अबैत अछि; तकर मूल्यांकन गीतक गायल उच्चारणक सँग तुलनासँ कयल जाय।

स्रोतमे मूल उदाहरणक कतिपय टंकण-स्थान ओ स्वरचिह्न विकृत देखाइत अछि, तें काव्यदोषक आरोप लगाएबाक पहिने पाठ-मुद्रणदोषक भेद निर्धारित होयबाक चाही। एकहि छन्दक बहु दृष्टान्तमे समान विधिसँ गणना कयला पर मात्र लेखकक प्रस्तावक पुनरुत्पादनीयता सिद्ध होयत।

एहि प्रबन्धक सांस्कृतिक विमर्शमे जातीय अभिजनता, कथित काव्य-दुरूहता, संस्थागत प्रशंसा आ साहित्यिक प्रतिष्ठाक प्रश्न बारम्बार अबैत अछि। ई प्रश्न साहित्यिक संसारक महत्त्वपूर्ण अंश छथि, मुदा आलोचककें स्पष्ट करबाक अछि जे कोनो कविताक सामाजिक पक्षधरता ओकर कलात्मक सफलताक एकमात्र

प्रमाण नहि, आ कलात्मक असफलता लेखकक सामाजिक पहचानसँ स्वतः सिद्ध नहि। एहि विवेकसँ लेखकक सुधारवादी आग्रह आर मजबूत होइत अछि। समग्र रूपेँ नवम प्रबन्ध मैथिली काव्य-समीक्षा, गजल-निर्माण, संगीत-विधान आ भाषिक प्रशिक्षणक समृद्ध सामग्री राखैत अछि; ओकर सर्वोत्तम सम्भावना ई सामग्रीकेँ वर्गीकृत कऽ पाठाधारित छन्द-परीक्षणक विधि बनेबामे अछि।

१०. नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

दसम प्रबन्धक आरम्भिक उल्लेख रामखेलावन मण्डल, बिन्देश्वर मण्डल आ कटघटरा-शिवाजीनगरक मंडलीक माध्यमसँ होइत अछि। 'रेशमा-चूहड़', 'शीत-वसन्त', 'अल्हा-ऊदल' आ 'नटुआ दयाल' सन पद्यनाटिकाक नाम तथा पूर्णियासँ सुपौल-सहरसा-समस्तीपुर दिस घूमैत 'पिआ देसाँतर'क मंचन-स्मृति प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि सामग्रीक मूल्य ई अछि जे नाटकक इतिहास केवल मुद्रित ग्रन्थ आ नामी निर्देशकक अनुक्रम नहि, यात्रारत दल, गामक लोककलाकार आ स्मृतिक प्रदर्शनक इतिहास सेहो अछि। तथापि मंडलीक वर्ष, मंचनस्थल आ कलाकारक परिचयकेँ मौखिक साक्ष्य तथा उपलब्ध कार्यक्रम-पत्रसँ मिलान केलासँ ई महत्त्वपूर्ण कथन ऐतिहासिक दृष्टिसँ आर मजबूत होयत।

लेखक लोकधर्मी आ नाट्यधर्मीक भेदक व्याख्या करैत लोकधर्मीकेँ गामक नाटकक भौगोलिक पर्याय मानबाक भ्रम दूर करय चाहैत छथि। हुनक विश्लेषणमे स्वभाविक देह-क्रिया, आंगिक संकेत, लोकव्यवहार आ शैलीगत परिष्कार अलग उपकरण छथि। ई भेद रंगमंचीय पाठमे अत्यन्त उपयोगी अछि। मुदा लोकधर्मीकेँ सहज रूप आ नाट्यधर्मीकेँ ओकर 'परिष्कृत' रूप कहब अनिवार्य विकास-क्रम नहि थिक; दुनू अभिनय-शैलीक अलग कलात्मक नियम रहि सकैत अछि। लोक-प्रदर्शनक संगीत, दर्शकसँ प्रत्यक्ष संवाद आ रूपान्तरित पात्र-विन्यास स्वयं विशिष्ट कौशलक माँग करैत अछि। एहि समता-बोधसँ लेखकक समानान्तर रंगमंचक प्रतिज्ञा अधिक सुगठित बनैत अछि।

प्रबन्ध भरतक नाट्यशास्त्रक रंगपीठ, नेपथ्य, रंगशीर्ष, आगमन-निर्गमन, अभिनय आ रसोत्पत्तिक चर्चा करैत अछि। नाट्यशास्त्रक सत्ताइसमा अध्यायमे अभिनयक सफलतासम्बन्धी मूल्याङ्कनक उल्लेख विशेष ध्यान

देवाक योग्य अछि, कारण एकर माध्यमसँ प्रदर्शनक आलोचना केवल नाटकक कथानक नहि, मंचित क्रियाक गति, भूमिका, दर्शकीय सहृदयता आ त्रुटिक प्रश्न बनैत अछि। एहि विवरणक समकालीन प्रयोग लेल एकटा मंचनक अभिनेताक उच्चारण, दृश्यक संक्रमण, संकेतक सटीकता आ दर्शक-प्रतिक्रियाक अलग परीक्षण आवश्यक अछि। रंगमंचक लिखित निर्देश आ वास्तविक अभिनयकें एकहि प्रमाण मानलासँ समीक्षा अधूरी रहि जाएत।

‘चीनीक लड्डू’, ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’, ‘भफाइट चाहक जिनगी’ आ आन नाटकक प्रसङ्गमे लेखक कथा-स्थिति, सामाजिक विवशता आ रंगमंचीय प्रयोग जोड़ैत छथि। ‘नो एण्ट्री’क नकली धर्मराज-चित्रगुप्त आ बन्द द्वारक स्थिति सत्ता, पहचान आ अस्तित्वक प्रश्न उठबैत अछि; ‘भफाइट चाहक जिनगी’मे चाह-दोकान आ कविताक मंचक बीच काम आ कला-संबन्ध प्रस्तुत अछि। एहि संक्षिप्त कथ्य-चिन्हसभसँ नाटकक सम्भावित अर्थ स्पष्ट होइत अछि, मुदा वास्तविक मंचनीयता जाँचबाक लेल पात्रक प्रवेश, स्थान-विन्यास, वक्तव्यक लय आ संघर्षक दृश्यात्मक रूपकें सेहो जाँचल जाय। ‘उत्तर-आधुनिक’ सन शीर्षक मात्रक आधारपर नाटकक सम्पूर्ण शिल्पक निर्णय नहि होयबाक चाही।

दसम प्रबन्ध जाति-आधारित अपमानजनक शब्दावली आ रंगमंचक एकाधिकारक प्रतिवाद करैत अछि। साहित्येतिहासक एहि आलोचनात्मक दृष्टिक महत्त्व अछि: जकरा इतिहासक केन्द्रसँ हटाओल गेल, ओकर मंचन, स्वर आ लेखकीय श्रेय पुनः अभिलेखमे अनब आवश्यक अछि। मुदा व्यक्तिविशेषक नीयत अथवा पूर्व मंचनक प्राथमिकतासम्बन्धी तीक्ष्ण दावा तिथि-साक्ष्य बिना निश्चित तथ्य मानल नहि जा सकैत। ई भेद राखि आलोचना कयलासँ समानान्तर रंगमंचक पक्षधरता क्षीण नहि होइत, बल्कि प्रामाणिक बनैत अछि। प्रबन्धक विशिष्ट उपलब्धि लोकनाट्यक अभिलेख, शास्त्रीय नाट्यविचार आ समकालीन सामाजिक समावेशनकें एकहि समीक्षा-क्षेत्रमे अनबाक प्रयत्न अछि।

११. मैथिली हाइकू / हैकू / क्षणिका

एगारहम प्रबन्ध जापानी हाइकूक इतिहास आ ओकर मैथिलीमे रचनात्मक ग्रहणक प्रसङ्ग उठबैत अछि। मात्सुओ बाशो, वाका-टनका, रेन्गा आ होक्कुक उल्लेखसँ लेखक ५-७-५क लघु रूपक पृष्ठभूमि रचैत छथि। एहि इतिहासमे

दरबारी आ लोक-रुचिक अन्तर सेहो चिन्हायल अछि। मूल प्रस्ताव अछि जे लघु कविताक गुणवत्ता आकारक अल्पतासँ नहि, अनुभूतिक तीव्रता आ रूपक संयमसँ बनैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि: तीन पाँतिक रचना मात्र लिखला सँ हाइकू सिद्ध नहि होइत, कारण कविताक अन्तिम बोध ओहि संक्षिप्त ध्वनि-चित्र सम्बन्धमे उत्पन्न होयबाक चाही।

लेखक मैथिलीक देवनागरी लिपि आ उच्चारण-व्यवस्थाकेँ हाइकूक ५-७-५ विन्यास लेल विशेष उपयुक्त मानैत छथि। तथापि जापानी मोरा, मैथिली वर्ण, अक्षर आ मात्रा चारू केँ एकरूप मानल नहि जा सकैत अछि। हाइकूक जापानी ५-७-५ संरचनाक भाषिक इकाई आ मैथिली वार्णिक गणनाक इकाईमे अन्तर स्पष्ट केलाक बिना मात्र अनुकरणक शुद्धता प्रमाणित नहि होयत। ई लेखकक रचनात्मक प्रस्तावक खण्डन नहि, बल्कि ओकर भाषावैज्ञानिक आधार स्पष्ट करबाक माँग अछि। मैथिलीमे ५-७-५ आधारित नव प्रयोग नीक भऽ सकैत अछि, भले ओकर गणनात्मक आधार जापानी परम्परासँ रूपान्तरित हो।

प्रबन्ध किराजीक विराम, श्वासक प्रवाह, तीन ध्वनिखण्ड आ दृश्यात्मक अनुभूतिक सम्बन्धपर विचार करैत अछि। रचना-निर्देशमे एकहि श्वासमे पाठक बात सेहो उपस्थित अछि। एहिठाम कविताक आन्तरिक मोड़ निर्णायक होइत अछि—प्रारम्भिक दृश्य, परिवर्तित अनुभूति आ अन्तिम संकेत कोना एक दोसराक अर्थ बदलैत अछि। यति आ मौनकेँ केवल विरामचिह्नक यान्त्रिक प्रयोग नहि मानि कविता-पाठक गति आ अप्रकट अर्थक साधन रूपेँ जाँचब चाही। एहि आधारपर प्रत्येक प्रस्तुत मैथिली उदाहरणक मूल्याङ्कन स्वतंत्र होयबाक योग्य अछि।

मूल पाठमे मैथिली रचनाक संग अंग्रेजी रूपान्तर सेहो सम्मिलित अछि। ई सामग्री संक्षिप्त काव्यक अनुवाद-परीक्षणक महत्त्वपूर्ण अवसर दैत अछि: चित्रक कोण, रंगक बोध, क्रियाक काल आ मौनक स्थान कतेक बचल? अंग्रेजी रूपान्तरणमे शब्दसंख्या अथवा लयक विस्तार मूलक तीव्रता बदलि सकैत अछि। तहिना मैथिलीमे ध्वनिसमृद्ध शब्दक अंग्रेजी समतुल्य अर्थपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर स्वरगति अलग रहि सकैत अछि। एहि प्रबन्धक प्रमुख उपलब्धि छोट काव्य-रूपकेँ वर्तनी, उच्चारण, ऐतिहासिक रूपान्तर आ काव्यात्मक अनुभूतिक साझा प्रश्न बनायब अछि; ओकर सीमा भाषासभक छन्दगणनाक भेदकेँ पूर्ण स्पष्ट नहि करब अछि।

१२. दोहा / रोला / कुण्डलिया

बारहम प्रबन्ध दोहा, रोला आ कुण्डलियाक मात्रिक गठनक शिक्षणपर केन्द्रित अछि। लेखक दोहाक चारू चरणक क्रम १३-११-१३-११ मात्रा बतबैत छथि; रोलाक पाँतिमे ११-१३क आवर्तन रखैत छथि; कुण्डलियामे दोहाक अन्तिम चरणक पुनरागमन आ आरम्भ-अन्तक शब्द-साम्यकें केन्द्र बनबैत छथि। एहि गणनात्मक विवरणसँ पाठककें छन्द पहचानबाक प्रायोगिक आधार भेटैत अछि। तथापि कुण्डलियाक सफलता निर्दिष्ट मात्रा पूरा कऽ देलासँ मात्र नहि, पुनरावृत्त पाँतिक अर्थ-विस्तार आ समाप्तिमे आरम्भक नव व्यंजना बनबासँ निर्धारित होयत।

प्रबन्धक प्रारम्भमे प्रस्तुत 'छत्ता' सम्बन्धी कुण्डलियामे दिनक अन्हार, समयक विकरालता आ प्रश्न-उत्तरक अस्थिरता चित्रित अछि। दोहाक छन्द-पाँति रोला दिस घुरैत काल कथ्यक आरोह बदलैत अछि; शब्द-दोहराव केवल स्मरणक सुविधा नहि, भावक आवर्तन आ चक्राकार स्थिति सेहो रचैत अछि। एही कारण कुण्डलियाक 'कुण्डली' रूपकें यान्त्रिक जोड़ मानब अपर्याप्त अछि। एकर कलात्मकता पहिल कथनक अन्तिम पुनर्पाठमे अछि। लेखकक छन्द-निर्देशमे पुनरावृत्तिक नियम मजबूत अछि; एहि नियमक सौन्दर्यात्मक परिणामपर आर विस्तृत विवेचन एकरा पूर्ण बनबैत।

ह्रस्व-दीर्घ, गुरु-लघु, संयुक्ताक्षर, हलन्त आ गण-विन्यासक परिच्छेदमे लेखक देवनागरी लिखन आ मैथिली उच्चारणक अन्तर्सम्बन्ध जाँचैत छथि। एहिठाम चारि सावधानी आवश्यक अछि: लिखित चिह्न आ उच्चरित मात्रा हमेशा एक नहि; संयुक्ताक्षरक भार शब्दक स्थितिसँ परिवर्तित भऽ सकैत अछि; गायल पाठक संधि-विराम बोलचालसँ भिन्न होइत अछि; आ मुद्रणदोषकें रचनाकारक छन्ददोष नहि ठहराओल जा सकैत अछि। एहि भेदसँ प्रत्येक गणना-पंक्तिक पुनर्जाँच सम्भव अछि। चारि प्रकारक स्थिति मिलेनाइ समीक्षाक कठोरता नहि, शिल्पक प्रति उत्तरदायित्व अछि।

प्रबन्धक उपलब्धि अछि, मैथिलीमे छन्द लिखबाक लेल पाठकक हाथमे वास्तविक गणना-विधि देब। मुदा छन्द-सौन्दर्यक पूरा आलोचना लेल मात्रासंगति, भाव-गति, आन्तरिक तुक, पदावलीक स्वाभाविकता आ कथ्यक

नैतिक/सामाजिक आग्रहक अलग मूल्याङ्कन चाही। नियमक स्पष्ट प्रस्तुति एहि प्रबन्धक शक्ति अछि; प्रामाणिक काव्यपाठमे ओकर सूक्ष्म परीक्षण एकर आगामी आवश्यकता अछि। छन्दक साधना भाषा-परीक्षणक संग जुडल रहय, मुदा लिखित मानकीकरणक नामपर स्वाभाविक मैथिली उच्चारणक सर्जनात्मक विविधताकें दबाओल नहि जाय—ई एहि अध्ययनक निष्कर्ष अछि।

पद्य आ नाटक : नवम सँ बारहम प्रबन्धक तुलनात्मक निष्कर्ष

नवम प्रबन्धक विस्तृत छन्द-संगीत-विवेचन आ एगारहम-बारहम प्रबन्धक हाइकू, दोहा, रोला आ कुण्डलिया-विवेचन एकहि व्यापक प्रश्नक तीन रूप छथि: भाषाक लिखित आकृति आ उच्चरित लयक भीतर साहित्यिक अर्थ कोना गठित होइत अछि? नवम प्रबन्ध स्वर-ताल आ बहुविध गजलक उदाहरण दैत अछि; एगारहम अल्प शब्दमे दृश्यक सूक्ष्मता देखैत अछि; बारहम पाँतिक आवर्तन आ मात्रानियम स्पष्ट करैत अछि। एकर तुलनात्मक परीक्षणमे प्रयोगक विधागत भेद सुरक्षित रहबाक चाही।

दसम प्रबन्ध एहि लयात्मक प्रश्नकें अभिनय, देह, स्थल आ दर्शकक सामाजिक अनुभव दिस विस्तारित करैत अछि। गीत आ अभिनयक सम्बन्ध होइतहुँ कविता आ मंचनक प्रमाण एकसमान नहि; मंचित पाठ लेल प्रस्तुति-अभिलेख, ध्वनि, दर्शक-प्रतिक्रिया आ निर्देशकक निर्णय अलग तथ्य छथि। समीक्षामे आंतरिक सौन्दर्य, सामाजिक पक्षधरता आ ऐतिहासिक प्राथमिकताक दावा सभक प्रमाण अलग-अलग राखब एहि चारू अध्ययनक साझा नियम बनैत अछि।

१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

तेरहम प्रबन्ध पहिल अध्यायक आलोचनात्मक घोषणाकें बहुविध सामाजिक आ शास्त्रीय धरातलपर विस्तारित करैत अछि। आरम्भमे लेखक छापाखाना, अन्तर्जाल, ई-प्रकाशन आ मुद्रित पोथीक परस्पर सम्बन्धपर विचार करैत छथि। हुनकर मतमे अन्तर्जाल केवल छापाक प्रतिस्पर्धी नहि, कम वितरण-व्यवस्था बला भाषाक साहित्यक नव पहुँच बनाबयवला माध्यम अछि। एहि दृष्टिक व्यावहारिक महत्त्व अछि: मैथिलीक साहित्यिक केन्द्रसँ दूर पाठककें तत्काल सामग्री उपलब्ध होएब, प्रवासी पाठकसँ सम्बन्ध बनब आ पुरान सामग्रीक

डिजिटल पुनर्प्राप्ति सम्भव होइत अछि। तथापि 'शून्य लागत' आ वितरण-समस्याक पूर्ण समाप्ति सन कथन ऐतिहासिक आशावादी आकलन छथि; सम्पादन, संरक्षण, सर्वर, सुगम्यता आ प्रतिलिप्यधिकारक वास्तविक व्यय आ सीमासभक स्वतन्त्र परीक्षण अपेक्षित अछि।

प्रबन्धमे कथा, कविता आ पाठकीय प्रसारक विश्लेषणसँ लेखक साहित्यिक सार्वजनिक जीवनक प्रश्न उठबैत छथि। कविता कम पढ़ल जाएबाक लेखकक धारणा पाठक-संख्याक प्रत्यक्ष सर्वेक्षण बिना सामान्यीकरण मात्र रहत; तथापि एहि आशंकाक भीतर एक वास्तविक साहित्यिक समस्या अछि—रचनाक भाषिक दुरुहता, प्रकाशन-वितरण, विद्यालयीय पहुँच आ पाठकीय अभ्यासक अन्तर्सम्बन्ध। आलोचनाकँ एहि कारकसभक भेद राखबाक चाही। कथा-उपन्यासक लोकप्रियता आ कविताक पाठकीय संकटक तुलना परिमाणक अनुमान नहि, पाठ-पाठक-माध्यमक अन्तर्निहित रूपक तुलना सँ शुरू कयल जाय।

'मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्त्व'क क्रमबद्ध विवेचनमे व्यक्तिगत अनुभव आ सार्वजनिक जीवनक सम्बन्ध, कृतिक ऐतिहासिकता, लेखकक सामाजिक उत्तरदायित्व, प्रतिष्ठा आ जातीय संरचना, औपनिवेशिक आ आधुनिक परिस्थिति, विचारधारात्मक एकरूपता तथा समीक्षामे संयम सन अनेक प्रश्न पंक्तिबद्ध अछि। ई सूची एकटा विस्तृत कार्यपत्रकक सम्भावना दैत अछि, मुदा एकर सभ तत्त्व समान स्तरक नहि। किछु नैतिक मानक, किछु पाठ-गठनक कसौटी, किछु इतिहासक तर्क आ किछु राजनीतिक आदर्श छथि। उदाहरणार्थ, आलोचकक शिष्टता आ काव्यक ध्वन्यात्मक संरचना कृतिक दू भिन्न परीक्षण-बिन्दु छथि। एहि वर्गीकरणक अभावमे साहित्यिक निर्णय अनजाने सामाजिक पसिन्नगीक निर्णय बनि सकैत अछि।

पाश्चात्य सैद्धान्तिक परिचयमे मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, नवइतिहासवाद, जादुई यथार्थवाद, नारीवादी आलोचना आ उत्तरआधुनिकताक उल्लेख अछि। भारतीय खण्डमे रस, ध्वनि, स्फोट, अलंकार, औचित्य, वक्रोक्ति आ आन शास्त्रीय विचार उपस्थित छथि। लेखक एकहि समीक्षाक्षेत्रमे दुनू बौद्धिक परम्पराकँ अनबाक आकांक्षा रखैत छथि। तथापि सिद्धान्तक सूचीक लम्बाइ समीक्षा-पद्धतिक परिपक्वताक प्रमाण नहि। एतय

आवश्यकता अछि जे प्रत्येक विचार-पद्धतिक अपन मूल प्रश्न निश्चित कयल जाय—अर्थ कोना बनैत अछि, पाठकक अनुभूति कोना घटित होइत अछि, समाजक सत्ता रचनामे कोना सक्रिय अछि, आ भाषा अपन घोषित अर्थसँ कोना भिन्न अर्थ उत्पन्न करैत अछि।

स्रोतक किछु ऐतिहासिक उदाहरण—वर्ण-व्यवस्था, लोकसमाज, मध्यकालीन काव्य, राजनैतिक घटना आ विशिष्ट कथाकारक श्रेष्ठतासम्बन्धी निर्णय—लेखकक प्रतिज्ञाक भाग छथि। हुनका स्वतंत्र सत्यापन बिना समीक्षाक निष्कर्षक रूपमे स्वीकार नहि कयल जा सकैत अछि। विशेषतः कोनो साहित्यिक परम्पराक सम्पूर्ण समाजपर प्रभावक दावा करबाक लेल पाठ, प्रकाशन, समाजशास्त्रीय प्रमाण आ विपरीत दृष्टान्तक आवश्यकता अछि। एहि भेदकें अपनायबासँ मूल प्रबन्धक सामाजिक समानता आ साहित्यिक उत्तरदायित्वक आग्रह स्पष्ट रूपेँ मूल्याङ्कित भऽ सकैत अछि।

तेरहम प्रबन्धक अन्तिम भागमे विहनि कथा, लघुकथा आ समीक्षाक नमूना पुनः अबैत अछि। एहि पुनरागमनसँ पहिलक विधागत प्रबन्धसभसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध देखाइत अछि, मुदा पुस्तक-संरचनामे अनावश्यक पुनरुक्तिक सम्भावना सेहो बढ़ैत अछि। कृतिक विशिष्टता जाँचबाक क्रममे नमूना-कथा, आलोचनात्मक दावा आ पाठभेदकें स्वतंत्र दैत ई सामग्री उपयोगी बनाओल जा सकैत अछि। समग्र उपलब्धि मैथिली समीक्षाकें डिजिटल सार्वजनिकता, सामाजिक इतिहास आ बहुपरम्परागत सौन्दर्यविवेकसँ जोड़बाक व्यापक प्रतिज्ञा थिक; एकर मुख्य सीमा एतेक व्यापक परिधिक विषयसभकें एकरूप तर्क-क्रममे निबद्ध करबाक कठिनता अछि।

१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

चौदहम प्रबन्ध मैथिली नाटकक परम्परा, आधुनिक मंचक विकास आ लोक-शास्त्रीय अभिनयक सम्बन्धक विस्तृत साक्ष्य-संकलन अछि। नाट्यशास्त्रक उत्पत्ति-वृत्तान्त, ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम', अंकिया नाट आ कीर्तनियाँक प्रसङ्गसँ आरम्भ होइत ई विवेचन आधुनिक नाट्यदल आ रचनाकारसभ धरि पहुँचैत अछि। एहि ऐतिहासिक विस्तारक मुख्य मूल्य ई अछि जे मुद्रित नाटकक इतिहास आ वास्तविक मंचन-परम्पराक इतिहासकें एक-दोसरसँ संवादमे अनैत अछि। मुदा उत्पत्तिक पुराणकथा, शास्त्रीय नाट्यपरम्परा, ऐतिहासिक

मंचन आ आधुनिक समकालीन संस्मरण अलग प्रमाण-श्रेणी छथि; एकरा एकहि अविच्छिन्न रेखामे रखबासँ ऐतिहासिक रिक्ति ओझरायल रहत।

मूल आलेख रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, 'सुन्दर संयोग'क विभिन्न प्रस्तुति, जीवन झा, ईशनाथ झा, उदयनारायण सिंह 'नचिकेता', गोविन्द झा, गुणनाथ झा, महेन्द्र मलंगिया, सुधांशु शेखर चौधरी आ आन रचनाकार/संस्थाक विवरण दैत अछि। कतिपय उल्लेखमे मंचन-वर्ष, निर्देशक, स्थल आ उत्सवक सूचना उपलब्ध अछि। एहि सामग्रीकेँ प्रलेखित प्रदर्शन-पञ्जीमे बदलला पर आधुनिक मैथिली रंगमंचक इतिहास लेखन लेल विशेष लाभ होयत। उदाहरणार्थ, 'सुन्दर संयोग'क १९७४ आ १९८३क मंचनसन्दर्भक उपयोग तखन अधिक विश्वसनीय होयत जखन कार्यक्रम-पत्र, समाचार वा प्रतिभागीक साक्षात्कार द्वारा स्थान-कालक पुष्टि हो। अनुक्रम मात्र छपाइ नहि, प्रमाणित प्रदर्शन-इतिहास आवश्यक अछि।

समीक्षाक नाट्यशास्त्रीय पक्षमे अभिनय, रस, रंगपीठ आ लोकोन्मुख प्रस्तुति पर्याप्त स्थान पवैत अछि। लेखक रंगमंचक भाषा, सामाजिक संवाद आ स्थलीय संदर्भ देखबैत छथि। ई प्रबन्ध पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे नाटकक साहित्यिक पाठ आ ओकर मंचित रूप दुनूक आलोचना संभव अछि, मुदा दुनूक प्रश्न भिन्न होयत। लिखित संवाद अर्थसंरचना दैत अछि, जखन कि मंचित उच्चारण, अन्तराल, प्रकाश, देह-गति आ दर्शकक प्रतिक्रिया अलग दृश्यार्थ रचैत अछि। केवल कथासार देलापर मंचनक सफलताक निर्णायक मूल्याङ्कन सम्भव नहि। ई अनिवार्य भेद ऐतिहासिक लेखनसँ आधुनिक प्रदर्शन-अध्ययन धरि प्रबन्धक आन्तरिक सेतु बनैत अछि।

महेन्द्र मलंगियाक 'छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल' आ लोककथाक स्रोतविषयक विवेचन प्रबन्धक तीक्ष्ण विवादात्मक अंश अछि। स्रोतक रूपान्तर, पात्रक जातीय पहिचान, लोककथा आ नाटकक नवीनता पर लेखकक स्पष्ट मत अछि। मुदा कोनो नाटककारक असल अभिप्राय अथवा जातीय पूर्वाग्रहक निश्चित निर्णय केवल चयनित पाँति अथवा आलोचकक निबन्धसँ नहि कयल जाउ। मूल नाटकक सम्पूर्ण दृश्य, मंचनरूप, संभावित पाठान्तर आ प्रतिपक्षक व्याख्याक निरीक्षण आवश्यक अछि। एहि विधिसँ सामाजिक आलोचना व्यक्तिगत आरोप नहि, प्रमाणनिष्ठ साहित्यिक मूल्याङ्कन बनत।

ग्रामीण कृषिसंस्कृति, कन्यादान, दहेज, बेरोजगारी, स्त्री-स्वायत्तता, बालशिक्षा, विस्थापन आ पर्यावरण-प्रसङ्ग प्रबन्धमे नाटक-विषयक उदाहरणक रूपमे अबैत अछि। 'टाटाक मोल'क कन्याविवाह-भूमि-संकट तथा 'भऽ जाएब छू'क बाल-पर्यावरणक मंचीय प्रयोग सामाजिक सन्दर्भक महत्त्व देखबैत अछि। लेकिन कथ्यक नैतिक महत्त्व आ कलाक मंचनीयता अलग मानक छथि: सामाजिक विषय मूल्यवान होइतहुँ संवादक विश्वसनीयता, दृश्य-तनाव आ अभिनयक व्यवहारिक कठिनता समीक्षा माँगैत अछि। एहि अन्तरकें सम्यक स्थान देलासँ समानान्तर रंगमंचक प्रस्ताव अधिक प्रभावी भऽ सकैत अछि।

प्रबन्धक महत्त्व केवल प्रसिद्ध नामसभक सूची नहि; ई लोककलाकार आ गामक दलक मौखिक परम्परा, शास्त्रीय रूपक आ नवीन नाट्य-समस्याक सहअस्तित्व दिखबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा स्रोत-स्तरक असमानता, मूल्यनिर्णयक तीव्रता आ पुनरावृत्त नाटक-इतिहासक विवेचनमे अछि। एहि विशाल पाठसँ एक समुचित अध्ययन-विधि निकलैत अछि: पहिने प्रमाणित मंचन-पञ्जी, तकर बाद रचनावार पाठ-साक्ष्य, तेसर चरणमे वास्तविक प्रस्तुतिक साक्ष्य, आ अन्तमे साहित्यिक-सामाजिक निर्णय।

१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार : पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति

पन्द्रहम प्रबन्ध आकारमे छोट, मुदा तुलनात्मक रंगमंच-विचारक महत्वपूर्ण घोषणापत्र अछि। लेखक नाटककें केवल लिखित साहित्य नहि मानि अभिनय, दर्शक, लोकस्मृति, मंचस्थान, संगीत आ प्रस्तुति-व्यवहारक संयुक्त कला मानैत छथि। 'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक'क उदाहरणमे पाठक वाक्य आ मंचक जीवित क्रियामे भेद करबाक आग्रह भेटैत अछि। ई पद्धति नाट्य-समीक्षाक प्रामाणिकता लेल आवश्यक अछि, कारण पाठक शब्द मंचपर आवाज, गति, विराम आ दृश्यात्मक सम्बन्ध ग्रहण करैत अछि; एहि रूपान्तरणक बाद ओकर अर्थ आ प्रभाव बदलि सकैत अछि।

मूल आलेख भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति, पाश्चात्य अनुकरण-अभिज्ञान-मेटाथिएटर, चीनी रिक्त-पूर्ण सौन्दर्यदृष्टि आ इजरायली प्रदर्शन-अध्ययनकें

चारि तुलनात्मक दिशा मानैत अछि। ई बौद्धिक विस्तार आकर्षक अछि; मुदा प्रत्येक क्षेत्रक विचारक अथवा विशिष्ट परम्पराक मूल ग्रन्थ निर्विवाद रूपसँ उपस्थित नहि अछि। तें समीक्षामे 'चीनी सौन्दर्यदृष्टि' वा 'इजरायली रंग-अध्ययन' केँ एकल, सर्वमान्य सूत्र मानि प्रयोग नहि होय। कोन नाट्य-ग्रन्थ, कोन ऐतिहासिक रंगरूप आ कोन प्रदर्शन-संकेत सन्दर्भ बनैत अछि, से निश्चित होयबाक चाही। अन्यथा तुलनात्मकता केवल भौगोलिक नामक सूची रहि जाएत।

लेखकक प्रमुख पद्धतिगत प्रतिज्ञा ई अछि जे सिद्धान्तक आरोपण नहि, मूल दृश्यक प्रश्नसँ अवधारणाक चयन हो। एहि नियमक महत्त्व एहि बातमे अछि जे रंगमंचीय तुलना समानता देखेबाक खेल नहि; ओकर उद्देश्य अलग स्थितिमे विकसित अभिनय-भाषासभक अन्तर चिन्हब होय। मिथिलाक लोकनाचमे सूग्गा-कथावाचक, विपटा अथवा समाजीक उपस्थितिक प्रभावकेँ बाहरी रंग-सिद्धान्तसँ तुलना कयल जा सकैत अछि, मुदा प्रथम प्रमाण ओहि दृश्य-क्रियाक पाठ आ उपलब्ध मंचन मात्र होयत। 'अलगाव' सन नाम उचित तखने, जखन दर्शक-संबोधनक वास्तविक प्रविधि देखल गेल हो।

एहि संक्षिप्त प्रबन्धक उपलब्धि स्पष्ट कार्य-विधान थिक: पाठ, मंचनीयता, प्रदर्शनक सामाजिक संदर्भ आ तुलनात्मक अर्थकेँ एकत्र देखब। एकर सीमा प्रमुख अवधारणाक तत्काल उदाहरणसँ प्रामाणिक सम्बन्ध पूरा नबनब अछि। आगेक कृतिक परीक्षणमे दृश्य-पञ्जी, मंच-संकेत, पात्र-वक्ता, श्रोता-दर्शक स्थिति आ अर्थक संभावित बहुलताक अलग टिप्पणी राखलासँ प्रस्ताव ठोस शोध-विधि बनि सकैत अछि।

१६. कुणालक नाट्य-शिल्प : लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता

सोलहम प्रबन्ध कुणालक नाटकमे तीन शैलीक सहअस्तित्व प्रतिपादित करैत अछि: संस्कृत नाट्यक पूर्वरंग, सूत्रधार-नटी आ वन्दना; मिथिलाक लोकनाचक समाजी, विपटा, सूग्गा-कथावाचक, गीत-नृत्य आ दर्शक-संबोधन; तथा आधुनिक रंगमंचक आत्मसन्दर्भिता आ भूमिका-विच्छेद। एहि विश्लेषणक मूल सामर्थ्य एहि बातमे अछि जे प्राचीन आ आधुनिककेँ एक-दोसरक विरोधी रूप नहि,

नाटककारक सक्रिय संसाधन मानल गेल अछि। लोकप्रदर्शनक सजीवता केवल शास्त्रीय संरचनाक सजावट नहि, बल्कि कथन-क्रम, ताल आ दर्शकक प्रत्यक्ष सहभागिताक माध्यम थिक।

लेखक ब्रेख्तक 'महाकाव्यात्मक रंगमंच' आ विरचन/अलगाव-प्रभावसँ कुणालक प्रयोगक सम्बन्ध देखैत छथि। 'चालिस चोर'क भाँट-वृत्त, भूमिका-त्याग आ वैकल्पिक अन्तक प्रसंग; 'बिदापत'मे विपटाक कथाक गति पर हस्तक्षेप; आ 'कुसमा-सलहेस'मे हिरामन-विपटाक आपसी सम्बोधन—ई दृष्टान्त वास्तविक प्रस्तुति-प्रविधिक स्तरपर चर्चा योग्य छथि। तथापि दर्शकक अभिनयक कृत्रिमता याद दियाबऽ वाला प्रत्येक लोकनाट्य-उपकरण ब्रेख्तसँ ऐतिहासिक रूपसँ उत्पन्न नहि। मिथिलाक लोकनाच अपन स्वतन्त्र विकासक्रम रखैत अछि; तुलना रूपगत समानता देखबैत अछि, प्रभाव अथवा उत्पत्तिक प्रमाण नहि। एहि भेदकें मानला पर भारतीय लोक-प्रयोगक ऐतिहासिक स्वायत्तता सुरक्षित रहैत अछि।

मूल प्रबन्ध 'चालिस चोर'क ४५-मिनट, ६०-मिनट आ एक-घंटाक प्रस्तुतिरूप आ ध्वनि-नाट्य शृंखलाक तेरह प्रकरणक उल्लेख करैत अछि। ई सूचना रचनाक माध्यम-परिवर्तनशीलता देखबाक अवसर दैत अछि। तथापि समयक तीन विकल्पमे कथानक आ पात्रविन्यास की-कतेक बदलैत अछि, तकर तर्क उपलब्ध पाठक पूर्ण संस्करणसभ देखलाक बाद मात्र कयल जा सकैत अछि। तेरह रेडियो प्रकरणक कथन सेहो प्रस्तुत स्रोतक सूचना अछि; स्वतंत्र प्रसारण-अभिलेख नहि भेटलापर वास्तविक प्रसारणक निश्चित तिथि नहि जोड़ल जाय। एहन अनुशासित भेद स्रोतक प्रति अन्याय नहि, ओकर शोध-मूल्यक संरक्षण थिक।

बहु-पात्रक एकहि अभिनेता द्वारा अभिनयक सम्भावना, रिक्त मंच, स्वर-परिवर्तन आ प्रत्यक्ष दर्शक-संवाद कुणालक कथित मंचीय व्यवहारिकताक संकेत छथि। ई संकेत लोककलाकारक सीमित संसाधनमे नाट्य-उत्पादनक उपयुक्त उपकरण बनि सकैत छथि। मुदा अभिनयक अर्थ केवल किफायत नहि—एक कलाकारक बहु-भूमिका परिवर्तन दर्शककें पात्रक सामाजिक पहिचानपर नव प्रश्न सेहो दऽ सकैत अछि। एहि कारण एकर सौन्दर्यात्मक निर्णयकें लागत-समयक उपयोगितासँ आगाँ लऽ जएबाक चाही। सोलहम प्रबन्धक महत्त्व कुणालक नाट्य-भाषाकें विभिन्न परम्पराक सर्जनात्मक संवादक रूपमे पढ़बाक दृष्टि देब

अच्छि; तकर आधारकेँ प्रत्येक मूल दृश्यक प्रमाणसँ अधिक विस्तार देब एकर मुख्य आलोचनात्मक आवश्यकता अच्छि।

१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन

सत्रहम प्रबन्ध लालदासक 'मिथिला रामायण'क चयनित कुण्डलिया-पदक मात्रिक आ पाठसम्पादकीय परीक्षण अच्छि। लेखकक अनुसार मूल ग्रन्थक प्रधान छन्द चौपाइ अच्छि, मुदा रूपमाला, गीतिका, दोहा, रोला आ कुण्डलियाक प्रयोग सेहो भेटैत अच्छि। एहि निरीक्षणसँ कृतिक काव्यात्मक विविधता सामने अबैत अच्छि; तथापि 'पञ्चानवे प्रतिशत चौपाइ' सन संख्यात्मक कथन मूलक सम्पूर्ण पदगणना बिना स्वतंत्र प्रमाणित मानल नहि जा सकैत अच्छि। चयनित कुण्डलियासभक महत्त्व ओकर अल्प संख्यामे रहबासँ कम नहि होइत, कारण दुर्लभ छन्द कतेक सार्थक नाटकीय अथवा भक्तिपरक घुमाव रचैत अच्छि, ई मूल पाठक आन्तरिक प्रश्न अच्छि।

प्रबन्ध दोहाक १३-११-१३-११ मात्राक विन्यास आ रोलाक ११-१३क आवर्तनक आधारपर कुण्डलियाक संयोग स्पष्ट करैत अच्छि। सुन्दरकाण्डक अन्तसँ प्रस्तुत चारि कुण्डलियाक उदाहरण एहि शिक्षणकेँ ग्रन्थ-साक्ष्य दैत अच्छि। चयनित पाँतिसभमे शरणागतक संरक्षण, भवसागर सँ पार उतारब, भक्ति आ अनुग्रहक भाव उपस्थित अच्छि। ई पद केवल धार्मिक उद्घोष नहि; दोहाक अपेक्षाकृत संकुचित भाव रोला-पाँतिक विस्तारित कथनमे घुमि आत्म-स्मरणक चक्र बनबैत अच्छि। छन्दक व्याकरण आ भावक अन्तर्प्रवाहक एहि परस्पर सम्बन्धक प्रदर्शन प्रबन्धक एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अच्छि।

पाठ-सम्पादनक सन्दर्भमे लेखक ह्रस्व-दीर्घ, अनुस्वार, संयुक्ताक्षर, हलन्त आ उच्चारण-गणनाक उदाहरण दैत छथि। मूल पाठक कतिपय स्थानमे शब्दरूपक संशोधन सम्बन्धी तर्क अच्छि, आ सम्पादक वा प्रूफरीडरक अशुद्ध हस्तक्षेपक आलोचना सेहो अच्छि। मुदा कोनो दोषक जिम्मेदारी निश्चित कयला लेल हस्तलिखित प्रति, प्रथम मुद्रण, बादक संस्करण आ अन्य साक्ष्यक तुलनात्मक मिलान अनिवार्य अच्छि। एकटा पाठरूप वर्तमान संस्करणमे दोषपूर्ण भेटबासँ ई प्रमाणित नहि होइत जे दोष मूल रचनाकारक नहि, सम्पादकक अच्छि—आकि

एकर विपरीत। एहि कारण पाठान्तर-सारणी आ उपलब्ध मुद्रणक तिथिक्रम एहि अध्यायक निष्कर्षकेँ दृढ़ करयवला आवश्यक साधन होयत।

प्रबन्ध गंगा सम्बन्धी पदमे 'अघनासिनी' आ 'अघनाशिनी' सन रूपक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। नामरूप, अर्थसम्बन्ध आ स्थाननामक व्युत्पत्ति एतय एकसाथ उपस्थित छथि, किन्तु भौगोलिक नाम आ काव्यक प्रयोगकेँ समान मानबामे सावधानी चाही। ध्वनि-साम्य शब्दार्थक ऐतिहासिक प्रमाण नहि होइत। साहित्यिक समीक्षा लेल मुख्य प्रश्न ई अछि जे प्रचलित पाठक शब्दार्थ भक्तिपरक प्रसङ्गमे कोन प्रभाव बनबैत अछि, आ पाठान्तर भेला पर छन्दक गणना कतेक बदलैत अछि। तात्पर्य ई नहि जे कठिन पाठ स्वतः सही अछि, बल्कि अर्थ, छन्द आ पाठपरम्पराक त्रिकोणसँ निर्णय हो।

एहि प्रबन्धक समग्र मूल्य मूल काव्यक किछु पाँतिकेँ छन्दशास्त्रीय प्रमाणक धरातलपर पुनः पढ़बाक प्रयासमे अछि। लालदासक ग्रन्थक सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धि एहने चारी कुण्डलियासँ मापल नहि जा सकैत अछि; मुदा चयनित पाँतिक सूक्ष्म मात्रागणना व्यापक सम्पादन-प्रणालीक नमूना बनि सकैत अछि। वार्षिक-मात्रिक नियम, वास्तविक उच्चारण, काव्यार्थ, पाठभेद आ मूल प्रतिक सत्यापन पाँचू अलग तह राखलासँ ई आलोचना शोधयोग्य बनैत अछि।

१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य : रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

अठारहम प्रबन्ध कुणालक नाटकमे भाषाक एकरूपता नहि, विविध रजिस्टरक कलात्मक उपयोगपर केन्द्रित अछि। लोकनाट्यप्रधान नाटकसभमे ग्रामीण मैथिली, मुहावरा, तुकबन्दी, गान आ मुखर व्यंग्य; प्रेमप्रधान पौराणिक नाटकसभमे तत्सम-प्रधान, अपेक्षाकृत परिनिष्ठित भाषा—लेखक एहि दू स्वरक अन्तर देखबैत छथि। ई निरीक्षण उपयोगी अछि, कारण नाटकक पात्र केवल कथाक वाहक नहि, अपन बोलीक द्वारा परिवेश, सामाजिक दूरी, आत्म-पहिचान आ स्मृतिक उपस्थितिक निर्माण करैत अछि। तथापि लोकभाषा मात्र हास्य आ तत्सम भाषा मात्र गरिमाक माध्यम थिक, एहन कठोर विभाजन आरोपित करब उचित नहि; मूल संवादमे जखन शैलीक सीमा पार होइत अछि, तखने रचनाक अर्थगत तनाव खुलैत अछि।

लेखक 'सरदारीक मुरेठा', 'लहठी', 'चुमाओन बनाम श्राद्ध' आ 'धूर्त-शिरोमणि'क द्व्यर्थक संकेतकेँ वक्रोक्तिक उदाहरण मानैत छथि। एहि पदसभमे वस्तुक सामाजिक प्रयोग आ काव्यात्मक निहितार्थ अलग भऽ सकैत अछि। 'लहठी'क प्रतीक चूड़ीक अलंकारिक अर्थक सँग बन्धनक अर्थ उत्पन्न कऽ सकैत अछि; मुदा कोन दृश्यमे वक्ता ई अर्थ देइत अछि आ दोसर पात्र की प्रतिक्रिया दैत अछि, तकरा देखला बिना व्यंग्यार्थकेँ निश्चित नहि मानल जाय। वक्रोक्ति शब्दक मात्र विचित्र प्रयोग नहि, कथनस्थितिमे अर्थक अपेक्षित बाटसँ विचलन थिक।

'विदापत'मे विद्यापति-पदक समापनात्मक प्रयोग आ 'सुकन्या'मे वसन्त-पदक उपस्थिति परम्पराक स्मृतिकेँ वर्तमान रंगमंचीय अनुभवमे अनबाक उपक्रम अछि। ई गीतसभ मंचपर आवाज, काल-सूचकता आ सांस्कृतिक पहचानक काम करि सकैत अछि। एहि सम्बन्धमे रस-ध्वनि-वक्रोक्तिक विवेचन फलदायी अछि, मुदा ध्वनि-सिद्धान्तक 'व्यञ्जना' आ रंगमंचक श्रव्य ध्वनिव्यवस्थाक अन्तर सेहो सुरक्षित रखब। मूल पद, कुणालक रूपान्तर आ प्रस्तुति-प्रसङ्ग एकसंग देखला पर स्पष्ट होयत जे काव्यस्मृति केवल उद्धरण अछि आकि नाटकक क्रियाक अनिवार्य अंग बनि गेल अछि। प्रबन्धक उपलब्धि भाषाकेँ मंचक जीवित क्रिया मानब अछि; ओकर सीमा प्रस्तुत दावासभकेँ दृश्यवार पाठसाक्ष्यक सँग कम विस्तारसँ रखब अछि।

११. वैचारिक धरातल : समानान्तर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच

उन्नीसम प्रबन्ध कुणालक नाट्य-संसारकेँ समानान्तर साहित्यक वैचारिक धरातलपर पढ़ैत अछि। लेखकक मूल प्रतिज्ञा ई अछि जे मैथिलीक संस्थागत साहित्येतिहासमे हाशियापर राखल लोककलाकार, लोक-देवता, वंचित समुदाय आ स्त्री-पात्रकेँ रंगमंचक केन्द्रमे आनब साहित्यिक इतिहासक पुनर्संरचना थिक। एहि प्रश्नक महत्त्व केवल विषयगत समावेशन नहि; लोककलाकारक गीत, वक्तव्य, मंचस्थान आ कथन-अधिकार नाटकक संरचनामे कोना काम करैत अछि, ई निर्णायक अछि। केवल वंचित पात्रक उल्लेख होएबासँ कृतिक दृष्टि स्वतः समावेशी सिद्ध नहि होइत; पात्रक अपन निर्णय आ कथनक स्वतंत्रता देखब आवश्यक अछि।

‘कुसमा-सलहेस’मे सलहेसक लोकदेवता रूप आ सामाजिक प्रतिरोध,
 ‘विदापत’मे विद्यापतिक लोक-प्रदर्शनात्मक पुनर्पाठ, आ प्रेमप्रधान नाटकसभमे
 श्रुवावती, सुकन्या, श्वेता आ सुप्रभाक निर्णय-अधिकार लेखकक मुख्य उदाहरण
 छथि। ई उदाहरण परस्पर समान नहि: पहिलमे समुदाय आ लोकस्मृतिक
 राजनीतिक अर्थ, दोसरमे काव्य-प्रतिष्ठाक लोकमंचीय अर्थ, तेसरमे पौराणिक
 आख्यानक भीतर नारीक स्वायत्तता मुख्य प्रश्न अछि। एकहि ‘प्रतिरोध’ शब्दमे
 तीनू केन्द्रीय अर्थ समेटि देलासँ हुनकर विशिष्टता क्षीण भऽ सकैत अछि।
 प्रत्येक नाटकमे विरोधी सत्ता, उपलब्ध विकल्प आ अन्तिम नाटकीय परिणाम
 अलग देखब अधिक सटीक पद्धति होयत।

प्रबन्ध हिन्दू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय आ दलित-स्त्री-लोक आवाजक
 उपस्थितिकेँ आदर्श वैचारिक परिणति मानैत अछि। एहि उपलब्धिक प्रशंसा
 लेखकक व्याख्या रूपेँ स्पष्ट रहबाक चाही; सम्पूर्ण नाट्यसंग्रहक सामाजिक
 मूल्यांकन लेल विरोधाभासी दृश्य, पात्रक मौन, लोककथाक परिवर्तन आ
 प्रस्तुति-व्यवहारक कठिनाई सेहो देखब आवश्यक अछि। ‘नारेबाजी नहि, कथा
 भीतर विचार’—ई प्रस्ताव सहमतियोग्य आलोचनात्मक कसौटी बनि सकैत
 अछि, किन्तु कृति एहि कसौटीपर कोना खरी उतरैत अछि तकर प्रमाण स्वतंत्र
 नाट्यदृश्यसँ दियौ। उन्नीसम प्रबन्धक विशेष महत्त्व संस्था-केंद्रित
 साहित्येतिहासक विकल्पक रूपमे लोकमंचक सांस्कृतिक अभिलेख सामने अनब
 अछि; एकर आलोचनात्मक शक्ति पाठ-प्रमाणक कठोरतासँ बढत।

२०. मैथिली लेल एकटा नारीकेन्द्रित समीक्षाशास्त्र : कामिनी आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक कृतिसभ

बीसम प्रबन्ध एहि संग्रहक महत्त्वपूर्ण विस्तृत आलोचनात्मक प्रकरण अछि।
 कामिनीक ‘खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री’ आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक ‘लेस्वियन
 कॉन्टिन्युअम’क अध्ययनमे स्त्री-अनुभव, पितृसत्तात्मक परम्परा, विवाह-
 परिवार, देह, भाषा, स्मृति, स्नेह आ यौनिक स्वायत्तता परस्पर जुड़ैत अछि। ई
 विषय एकटा सामान्य ‘नारी-चित्रण’क समीक्षा नहि; साहित्यक पात्रकेँ अपन
 जीवनक अर्थ निर्धारित करबाक अधिकार अछि कि नहि, कथनक आवाज ककर
 हाथमे अछि, आ सांस्कृतिक प्रतीक स्त्रीक अनुभवकेँ खोलैत अछि कि ओकरा

रोकैत अछि—ई मूल प्रश्न बनैत अछि। समीक्षाक बहुस्तरीयता एहि प्रश्नसभक संग न्याय करबाक लेल आवश्यक अछि।

कामिनीक शीर्षक 'खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री' स्त्रीक सामाजिक भूमिका आ आत्मबोधक बीचक तनावकें सार्थक दृश्यात्मक रूप दैत अछि। मूल प्रबन्ध माय, बेटी, पत्नी आ समाजक अपेक्षाक बीच बँटल अस्तित्व; नोरक अर्थ; कन्यादान आ तिल-कुशक प्रतीक; द्रौपदीक पुनर्पाठ; तथा श्रम, असमानता, कोमलता आ प्रतिरोधक प्रसङ्गमे कविता-पाठ करैत अछि। एहि पाठक शक्ति ई अछि जे परम्परागत वस्तुकेँ स्थिर अर्थ नहि, जीवनक अनुभवसँ बदलैत अर्थक रूपमे पढ़ैत अछि। उदाहरणार्थ, कन्यादानक संस्कारक कथनमे 'दान' शब्द भावनात्मक अलगाव आ स्त्रीक वस्तुकरणक प्रश्न उत्पन्न करि सकैत अछि। तथापि कविता-कविताक स्वर अलग रहबाक चाही: कोनो पाँति तीव्र विरोध प्रस्तुत करैत अछि, तखन आन पाँति स्मृति, चाहना वा सहमतिक जटिल अनुभव व्यक्त कऽ सकैत अछि।

नोर, फूल, धरती, कोख, धार आ देहक प्रतीकसभक अर्थ एकहि सामूहिक स्त्री-छविमे समेटब उचित नहि। कामिनीक कविताक समीक्षा कखनो मिथिलाक व्यवहारक विशिष्ट सामग्री पकड़ैत अछि, मुदा कखनो नैतिक प्रतिज्ञाक तीव्रता कलात्मक अन्तरकें दबा दैत अछि। एतय प्रश्न अछि—कविताक वक्ता किस स्थिति सँ बजैत छथि? प्रथम पुरुषक 'हम' अनुभवक व्यक्तिगत दस्तावेज थिक अथवा सामूहिक स्त्री-स्वरक कलात्मक रचना? काव्यात्मक उच्चारणक एहि स्थितिकें जाँचल बिना वास्तविक जीवनक समस्त स्त्रीक प्रतिनिधित्वक दावा नहि होयबाक चाही। ई भेद आलोचनाकें स्त्रीक कथित 'एक' अनुभवकें पुनः रूढ़ बनेबासँ रोकैत अछि।

प्रबन्ध भारतीय रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक साथ गङ्गेशक नव्य न्याय, पाश्चात्य नारीवाद आ अन्य दार्शनिक धाराक तुलनात्मक उपयोगक प्रयत्न करैत अछि। प्रमा, व्याप्ति, अवच्छेदक, प्रत्यय-वक्रोक्ति आ रस-

साधारणीकरणक शब्दावली काव्य-पाठक विशिष्ट तार्किक पहलू खोलि सकैत अछि, मुदा दार्शनिक पदक तकनीकी अर्थ आ कविताक उपमात्मक अर्थ अलग अछि। कोनो कविता सामाजिक सम्बन्धक सूक्ष्म बोध देइत अछि, एतबासँ नव्य-न्यायक प्रत्यक्ष अथवा अनुमानक सम्पूर्ण औपचारिक संरचना स्वतः

स्थापित नहि होइत । जँ न्यायीय पद प्रयोग कयल जाय, तँ ओकर तर्करूप, प्रतिज्ञा आ मूल पाठक शब्दगत साक्ष्य स्पष्टीकरण सहित देखाओल जाय । बिनु एहि मध्यस्थताक तुलना अवधारणाक मात्र अलंकरण बनि सकैत अछि ।

‘लेस्बियन कॉन्टिन्युअम’क समीक्षा प्रबन्धक दोसर प्रमुख धुरी अछि । एहि प्रसङ्गमे स्त्री-स्त्री सम्बन्ध, इच्छाक सामाजिक भाषा, भय, आत्मपरिचय, सांस्कृतिक वर्जना आ साहित्यिक अभिव्यक्तिक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि । एहिठाम विश्लेषणक प्राथमिकता पात्रक अपन अनुभव, काव्यिक कथन आ सम्बन्धक अन्तरंग नैतिकता होयबाक चाही, नहि कि बाहरी सामाजिक वर्गीकरणक सूची । ‘क्वीर’ शब्दक अन्तर्गत विविध यौनिक आ लैंगिक अनुभव अबैत अछि, मुदा समलैंगिकता, उभयलैंगिकता, लैंगिक पहिचान आ ट्रान्स अनुभवकेँ एक-दोसरक पर्याय मानल जाय तँ समीक्षा अपन उद्देश्यसँ विचलित होयत । एहि भिन्नताकेँ स्पष्ट करब कृतिक जटिलताक प्रति सम्मान अछि ।

कामिनी आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक काव्य-दृष्टिक तुलना करैत एकर केन्द्र कखन सामाजिक भूमिकाक विखण्डन, कखन प्रेमक संरचना आ कखन संबंधक स्वायत्त नैतिकता बनैत अछि, से अलग देखब उचित होयत । सामाजिक अपमानक प्रतिरोध दुनू ठाम संभव अछि, मुदा प्रतिरोधक काव्यशिल्प—प्रश्नवाचक पुनरावृत्ति, देहगत बिम्ब, कटाक्ष, मौन, स्नेहक प्रत्यक्ष उद्घोष अथवा कथनक विस्थापन—एकसमान नहि । मूल प्रबन्धक अनेक स्थाने विशिष्ट पाँतिक बाद पूर्वनिर्धारित दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत होइत अछि; आलोचनात्मक प्रामाणिकता लेल पाठक अन्य संभाव्य अर्थ सेहो जाँचल जाय । सिद्धान्तक वैचारिक सहानुभूति कविता-कौशलक प्रमाणक विकल्प नहि ।

एहि प्रकरणमे लूस इरिगरे, पाश्चात्य नारीवादी चिन्तन, सांस्कृतिक परम्परा, चीनी दार्शनिक अवधारणा आ क्रान्तिकारी विचारकसभक उल्लेख सेहो अछि । विचारकसभक ऐतिहासिक अवधारणा, मूल ग्रन्थक प्रसङ्ग आ मैथिली कृतिक भाषिक स्थिति अलग-अलग जाँचल जाय; अवधारणाक साम्यकेँ प्रभाव अथवा वंशानुक्रमक निश्चित प्रमाण नहि मानल जाउ । एहि व्यापक तुलनात्मक सामग्रीक उपलब्धि स्त्री-अनुभवकेँ केवल करुणा आ त्यागक घिसल छविमे नहि समेटि, ज्ञान, देह, अधिकार आ सम्बन्धक जटिल साहित्यिक समस्या बनायब अछि । मुख्य आलोचनात्मक आवश्यकता ई अछि जे दर्शनक विस्तार मूल

कविताक स्वर केँ ओझरा नहि दियए आ कोनो वैचारिक घोषणाक कारण काव्य-पाठक विरोधाभास लुप्त नहि हो।

बीसम प्रबन्धक समग्र मूल्य सामाजिक दृश्यता, स्त्रीक स्वनिर्णय आ साहित्यिक अर्थक बहुलताकेँ एक साझा समीक्षाशास्त्रक रूपमे प्रस्तुत करबाक प्रयत्नमे अछि। एकर सीमा उदाहरणक तीव्र विस्तार, कतिपय अवधारणाक असमान सुस्पष्टता आ कृतिक विशिष्ट शिल्पक ऊपर सिद्धान्तक अधिक भार अछि। एहि कारण समुचित नारीकेन्द्रित मैथिली आलोचनाक कसौटी रहतः मूल कविता आ ओकर सम्भावित अर्थ, वक्ताक स्थितिक परीक्षण, काव्यशिल्पक गठन, सामाजिक सन्दर्भक प्रत्यक्ष प्रमाण आ आलोचकक आत्मसंयम—ई पाँचू एक संग चलथि।

२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र — दोसर प्रकरण

एकैसम प्रबन्ध मैथिली कथा-पाठक सामाजिक वर्ग, जाति-उत्पीड़न, श्रम, दमन आ प्रतिरोधक कसौटीपर पढ़बाक विस्तृत प्रयत्न अछि। लेखक प्रभास कुमार चौधरीक ‘इन्द्रधनुष’, अशोकक ‘प्रतिलोम’ आ रमेशक ‘कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो’ केँ प्रमुख अध्ययन-सामग्री बनबैत छथि। ई चयन कथित दलित साहित्यक एकरूप चरित्र नहि, भिन्न सामाजिक स्थिति आ कलात्मक विन्यासक तुलना सम्भव बनबैत अछि: गामक सामन्ती सत्ता विरुद्ध आन्दोलन, अनुष्ठानभितर विद्यमान सामाजिक पदानुक्रम, आ प्रवास-अभाव-आधुनिक वस्तुक विडम्बना। दलित समीक्षाशास्त्रक प्रश्न एहि कथासभकेँ केवल पीडाक विवरण नहि, पात्रक क्रिया आ संरचनात्मक शक्तिक सम्बन्धरूपेँ पढ़ब अछि।

‘इन्द्रधनुष’क विवेचनमे अनिल, सरोज, महेश, काशी चौधरी, नामीबाबू आ सुट्टा सन पात्र सामाजिक तनावक केन्द्र बनैत छथि। मजदूरी, पंचायत, स्वामीत्व आ संगठित प्रतिरोध कथ्यक राजनीतिक रूप दैत अछि। मुदा कथा-नायकक विचार केँ लेखकक विचारक समतुल्य मानि लेबासँ पाठक जटिलता क्षीण भऽ सकैत अछि। कौन पात्रक निर्णयसँ संघर्षक दिशा बदलैत अछि, कथावाचक कोन सामाजिक दूरी राखैत अछि, आ अन्तिम परिणाम परिवर्तनक वास्तविक उपलब्धि अछि, कि आकांक्षा—एहि प्रश्नपर आलोचना टिकबाक चाही। मूल

प्रबन्धक विविध अंशमे 'इन्द्रधनुष'क लेखक-पहिचानक उल्लेख एकरूप नहि देखाइत अछि; अन्तिम प्रकाशनमे निश्चित अभिलेखीय अथवा मूल पुस्तक-साक्ष्यसँ ओकर सत्यापन आवश्यक अछि।

'प्रतिलोम'क श्राद्ध-सम्बद्ध ब्राह्मण हवेलीक परिवेशमे धार्मिक अनुष्ठान, छुआछूत, भोजन-पानि, अपमान आ सामाजिक ऊँच-नीचक व्यवस्था कथात्मक उपकरण बनैत अछि। ई स्थाननियोजन महत्त्वपूर्ण अछि, कारण घरक भीतरक स्थानिक विभाजन सामाजिक सत्ता-कर्मक दृश्यरूप बनि सकैत अछि। लेखक भारतीय ध्वनि-रस आ पाश्चात्य सामाजिक विश्लेषणक माध्यमसँ एहन दृश्यक भिन्न अर्थ पढबाक प्रयास करैत छथि। मुदा धार्मिक क्रियाक मात्र उपस्थिति अन्यायक पूर्ण कलात्मक व्याख्या नहि; दृश्य-क्रम, पात्रक व्यवहार आ अनुष्ठानक दोहरा अर्थ मिलेनाइ आवश्यक अछि।

'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'क अध्ययनमे पंजाबसँ घुरल व्यक्ति, पिताक मृत्यु, अभाव आ रेडियो सन आधुनिक वस्तुक सामाजिक अर्थ मुख्य बनैत अछि। रेडियो एक साथ आकांक्षा, गतिशीलता, अपमान आ व्यक्तिगत अधिकारक संकेत बनि सकैत अछि। प्रबन्ध नव्य-न्यायक 'अवच्छेदक' आ 'प्रतियोगिता' सन अवधारणाक सहायतासँ रेडियोक अर्थ-विन्यास प्रस्तुत करैत अछि। ई रोचक रूपक अछि; तथापि तार्किक पदक शास्त्रीय परिभाषा आ कथा-समीक्षाक व्याख्यात्मक प्रयोगकेँ समान ठहराओल जाय तँ भ्रम बनत। वस्तु टूटबाक घटना एक भौतिक तथ्य, कथाक भीतर एक नाटकीय निर्णय आ आलोचकक दृष्टिमे एक प्रतीक—तीनूकेँ अलग राखब आवश्यक अछि।

प्रबन्धमे अम्बेडकर, मार्क्सवादी विचार, फैनन, भारतीय काव्यशास्त्र आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक अलग-अलग उपयोग अछि। एहि बहुस्तरीय विवेचनक विशेष मूल्य तब अछि जखन जाति आ वर्गक परस्पर सम्बन्ध मानैतहुँ दुनूक विशिष्ट ऐतिहासिक संरचना सुरक्षित राखल जाय। जाति केवल आमदनीक स्तर नहि, जन्माधारित प्रतिष्ठा, विवाह, सामाजिक दूरी आ सांस्कृतिक अधिकारक व्यवस्था सेहो अछि। तहिना वर्ग केवल जातिक दोसर नाम नहि। एहि भेदकेँ नबुझने तुलनात्मक आलोचना दोसर शोषण-प्रणालीक वस्तुगत रूप ओझरा सकैत अछि।

मूल आलेखक अन्तिम अंशमे तीनू कथाक अंग्रेजी अनुवादक संदर्भ आ प्रकाशनस्रोतक उल्लेख अछि। आलोचनात्मक सत्यापन लेल मूल मैथिली कथा, प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद आ समालोचनात्मक पुनर्पाठक वाक्यगत अन्तर महत्वपूर्ण अछि। स्रोत-पुस्तकक कथावाचकक कथन, आलोचकक सिद्धान्तपरक अनुमान आ अनुवादकक निर्णय अलग-अलग पहिचानल जाय। एकैसम प्रबन्धक मुख्य उपलब्धि दलित अनुभवकें साहित्यिक अर्थ-निर्माणक केन्द्रमे रखब अछि; एकर कठिनाई बहुविध सिद्धान्तक सही अनुप्रयोग आ मूल कथानकक संग ओकर अनुपात बनब अछि।

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

बाइसम प्रबन्ध अपेक्षाकृत छोट, मुदा दलित साहित्यक पृष्ठभूमिमे अनुवाद आ समानान्तर मैथिली आन्दोलनक भूमिका स्पष्ट करैत अछि। लेखक गुजराती, ओडिया आ तेलुगु दलित साहित्यमे उपस्थित प्रतिरोधक अनुभव मैथिलीमे अनूदित भेला पर स्थानीय साहित्यक विषय, शब्दावली आ सामाजिक प्रश्नमे परिवर्तन आएका दावा करैत छथि। एहि दावामे एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक समस्या अछि: साहित्यिक नव प्रयोगक प्रभाव प्रमाणित करबाक लेल प्रकाशन-तिथि, मूल पाठ, अनुवाद, पाठकीय पहुँच आ बादक मैथिली लेखनक तुलना आवश्यक अछि। एकहि विचारक समानता ऐतिहासिक प्रभावक पर्याप्त प्रमाण नहि।

लेखक मैथिलीक स्थापित साहित्यिक परम्पराक दरबारी, भक्तिपरक आ अभिजन चरित्रक आलोचना करैत छथि। ई दृष्टि इतिहासमे वंचित समुदायसभक साहित्यिक उपस्थितिक पुनः अनुसन्धान लेल प्रेरक अछि, मुदा सम्पूर्ण पूर्ववर्ती परम्पराकें एकहि सामाजिक वर्गक प्रतिनिधि मानि लेबासँ ओहि परम्पराक आन्तरिक विविधता ओझरायल रहि सकैत अछि। स्रोत मे उल्लिखित कालखण्डक लोकगीत, जाति-विशेषक आख्यान, मौखिक परम्परा आ अनुपलब्ध पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष साक्ष्यक स्वतंत्र पञ्जी आवश्यक अछि। आलोचनाक उद्देश्य बहिष्करणक इतिहासकें देखेबाक संगहि पूर्वक स्थापित सरल चित्रक स्थानमे दोसर सरल चित्र नहि बनायब होयबाक चाही।

दू दलित-समीक्षाशास्त्र प्रबन्धक पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट अछि, किन्तु एकैसमक विस्तृत तीन-कथा अध्ययन आ बाइसमक अनुवाद-सांस्कृतिक

प्रस्तावक उद्देश्य अलग अछि। पहिलमे पात्र, वस्तु, संवाद आ सामाजिक सत्ता-संबन्धक मूल पाठसँ प्रमाण देखबाक अछि; दोसरमे भाषान्तर आ साहित्यिक संस्थाक परिवर्तनक ऐतिहासिक आधार। दूनूकें अलग आलोचनात्मक इकाई मानब उचित अछि। बाइसम प्रबन्धक योगदान मैथिली साहित्यक सीमाकें क्षेत्रान्तरक अनुभवसँ विस्तारित करबाक विचारमे अछि; ओकर आवश्यक विस्तार अनुवादक वास्तविक प्रविष्टि, पुस्तक-पञ्जी आ ग्रहणक सत्यापित प्रमाण अछि।

२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

तेइसम प्रबन्ध गजेन्द्र ठाकुरक 'मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान'क विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि। मूल पाठमे ठेठी-अंगिका, बज्जिका, भाषा-शिक्षण, व्याकरण, रचना, क्षेत्रकार्य, संगणकीय साधन आ भाषिक इतिहासक संयुक्त परियोजना वर्णित अछि। लेखक एहि ग्रन्थकें केवल परम्परागत शुद्ध-अशुद्ध वर्तनीक कोश नहि, भाषाक बहुस्तरीय सामाजिक जीवनक अध्ययन मानैत छथि। ई दृष्टि महत्त्वपूर्ण अछि, कारण भाषा-व्याकरण शब्दरूपक नियम देइत अछि, भाषा-विज्ञान वास्तविक प्रयोगक वर्णन करैत अछि, आ रचनाशास्त्र अलग विधामे भाषा प्रयोगक सौन्दर्यात्मक आवश्यकताक परीक्षण करैत अछि। ई तीनू उद्देश्य समन्वित रहि सकैत अछि, मुदा एकर प्रमाण-पद्धति एक नहि।

प्रबन्ध मूल कृतिक भाषिक क्षेत्रसँ भिन्न मूल्यमानक प्रश्न उठबैत अछि: मानक रूप ककर आधारपर चुनल जाय, क्षेत्रीय प्रयोगक प्रतिनिधि नमूना केहन हो, आ सामाजिक प्रतिष्ठाक आधारपर बोलचालक कोनो रूपकें स्वतः अशुद्ध मानल जाय कि नहि? ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक ध्वनि, क्रियारूप, सम्बोधन आ शब्दावलीक उदाहरण एहि दिशामे उपयोगी छथि। किंतु भिन्न बोलीक तुलना लेल क्षेत्र, वक्ताक उमेर, सामाजिक स्थिति, प्रयोगक प्रसङ्ग, रेकर्डिङ अथवा लिखित साक्ष्यक सूचना जरूरी अछि। बिना पद्धतिगत नमूना विवरणक संख्या-आधारित दावे—जेना स्वर-व्यञ्जनक निश्चित संख्या—विस्तृत भाषिक समुदायपर लागू नहि कयल जा सकैत अछि।

संग्रहक एहि अध्यायमे भारतीय व्याकरणपरम्परा—पाणिनि, भर्तृहरि, मीमांसा आ नव्य न्याय—क संग पाश्चात्य भाषा-विज्ञान, चोम्स्की, चीनी, जापानी, तिब्बती आ इजरायली भाषा-चिन्तनक तुलना प्रस्तुत अछि। तुलनात्मक विस्तार भाषाकें विविध प्रश्नसँ देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा पाणिनीय नियम-रचना, आधुनिक औपचारिक उत्पादक व्याकरण, वर्णनात्मक समाजभाषाविज्ञान आ जापानी भाषिक इतिहासक लक्ष्य अलग छथि; केवल भाषा पर विचार करबाक कारण हुनका सभकें समतुल्य सिद्धान्त मानल नहि जाउ। एकर उचित उपयोग प्रत्येक प्रणालीक विशिष्ट प्रश्न निर्धारित करब अछि: शब्द केना बनैत अछि; वक्ता केना अर्थ देइत अछि; वाक्यकोन संरचना स्वीकार करैत अछि; आ प्रयोगकें समाज कोना श्रेणीबद्ध करैत अछि।

मूल समीक्षाक विन्यासमे ठेठी-अंगिका अध्याय १-२०, बज्जिकाक क्रमबद्ध पाठ, भाषा-सम्पादनक प्रश्न, अभ्यास, आ भाषा-विज्ञानक विस्तृत शृंखला उल्लेखित अछि। कतिपय भागमे अध्याय १२५-१६० तथा ८१४-९०० धरि विस्तारक सूचना अछि। ई विशाल पाठक्रम व्यवस्थित शिक्षण-रूपमे मूल्यवान भऽ सकैत अछि, लेकिन पाठ्यक्रमक वास्तविक उपलब्धि 'अध्याय कतेक'सँ निर्धारित नहि होइत; विषयगत प्रगति, अभ्यासक स्तर, उदाहरणक सत्यता आ पूर्वधारणाक जाँच आवश्यक अछि। कोनो अभ्यास जाँ नियम-प्रयोग सिखबैत अछि तँ ओकरा संग भिन्न सामाजिक प्रसङ्गमे प्रयोगक अपवाद सेहो देबाक चाही। एहि पद्धतिसँ शिक्षण आ अनुसंधानक बीचक भेद सुरक्षित रहत।

भाषिक पहचान आ साहित्यिक आन्दोलनक प्रसङ्गमे लेखक विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक महत्त्व स्थापित करैत छथि। अभिजनता विरुद्ध बहुस्वरक प्रश्न अध्ययनक प्रमुख पक्ष अछि। तथापि 'कोन भाषा, कोन उपभाषा'क वैज्ञानिक विश्लेषण केवल सांस्कृतिक सम्मानक फैसला नहि; परस्पर बोधगम्यता, ऐतिहासिक ध्वनिपरिवर्तन, भाषिक संपर्क, समुदाय-अधिकार आ संस्थागत मान्यताक सम्मिलित परीक्षा थिक। भाषा-राजनीतिक आत्मपहिचानक सम्मान करबाक संगहि व्याकरणिक तथ्यकें स्वतंत्र जाँचल जाय। एहि भेदसँ ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक रूपगत विशिष्टता अधिक स्पष्ट रूपसँ संरक्षित रहि सकैत अछि।

तेइसम प्रबन्धक उपलब्धि एक विशाल बहुभाषिक, शिक्षणात्मक आ सामाजिक परियोजनाक पुस्तकवार आलोचना तैयार करब अछि। एकर मुख्य कठिनता कई स्तरक समीक्षा एकहि पाठमे जुड़ि गेलाक कारण प्रमाणक असमानता अछि: मूल पुस्तकक उद्धोष, वर्तमान समीक्षकक विश्लेषण, दूरस्थ भाषा-परम्पराक सामान्य परिचय आ डिजिटल युगक तकनीकी सम्भावना बीच सीमा राखब अनिवार्य अछि। एखनक समीक्षा मूल व्याकरणक स्वतन्त्र पूर्ण प्रतिपाठ नहि, मूल पुस्तकपर लिखल समीक्षाक आलोचनात्मक परीक्षण थिक; व्याकरणिक नियमक अन्तिम सत्यता लेल मूल ग्रन्थ आ प्रतिनिधि भाषिक डेटा देखब आवश्यक रहत।

२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

चौबीसम प्रबन्ध लिपिक सांस्कृतिक मिथकसँ आरम्भ कऽ चित्र, संकेत, लेखन, ध्वन्यात्मक लिपि, ब्राह्मी आ तिरहुताक सम्भावित ऐतिहासिक सम्बन्धक विस्तृत पाठ्य-यात्रा करैत अछि। लेखक मिश्र, मेसोपोटामिया, यूनान आ भारतक लिपि-उत्पत्तिक देवकथासभक चर्चा करैत छथि। एहन कथाक उल्लेख लिपि सम्बन्धी सांस्कृतिक मान्यताक प्रमाण अछि, लिपिक वास्तविक आविष्कार-तिथिक प्रमाण नहि। एहि विभेदक स्पष्टता लिपि-इतिहासक मूल आवश्यकता अछि। पाषाणकालीन चित्रक कलात्मक स्थिति आ क्रमबद्ध भाषिक लेखनक बीच लेखक जे भेद करैत छथि, से शोधक दृष्टिसँ उपयोगी अछि: चित्र देखब आ भाषा-पाठ पढ़ब दू भिन्न चिह्न-प्रक्रिया छथि।

ब्राह्मी, पूर्वी लिपिरूप, अभिलेख, नेपाल-मैथिल परिवेश आ तिरहुताक अक्षर-विकासक विवेचन प्रबन्धक मुख्य सामग्री अछि। विभिन्न कालक 'ट', 'म', 'ख', 'त' सन अक्षरक आकृति-परिवर्तनपर लेखक सूक्ष्म टिप्पणी दैत छथि। ई ग्राफिक तुलना अध्ययनक प्रत्यक्ष साधन बनि सकैत अछि, मुदा एकहि अक्षरक दृश्य-साम्यसँ वंशानुक्रमक निष्कर्ष नहि निकालल जाय। एकहि परिवारक अक्षरसभक एक साथ परिवर्तन, दिनांकित लेखन, सामग्री, अभिलेखक स्थानीयता आ मध्यवर्ती रूपक क्रम आवश्यक अछि। एखन उपलब्ध पाठक रूपरेखा मूल्यवान अछि, किन्तु फोटो, रेखांकन वा मानकीकृत रूपक अभावमे वर्णनक स्वतंत्र पुनर्परीक्षण कठिन भऽ सकैत अछि।

प्रबन्ध स्थान-लाघव आ प्रयत्न-लाघवक सहायतासँ अक्षरक लिखन-गतिक व्याख्या करैत अछि। कम लेखन-प्रयास कखन अक्षरक वक्रता घटबैत अछि, कखन संयुक्तरूप बनबैत अछि, आ कखन भौतिक लेखन-सामग्री परिवर्तन लबैत अछि—ई परीक्षणयोग्य प्रश्न छथि। मुदा सभ अक्षर-परिवर्तन एकहि ‘कम प्रयास’ सिद्धान्तसँ नहि बुझाएत; लेखन-साधन, सुलेखन-परम्परा, दफ्तरी व्यवहार आ पारस्परिक संपर्क सेहो कारण भऽ सकैत अछि। विभिन्न कारणक संयोगकें मानब अधिक वैज्ञानिक व्याख्या होयत।

मूल पाठमे समकालीन मैथिली वर्तनी, ध्वनि, छन्द, क्षेत्रीय बोलचाल, लिपिक चिह्न, तिरहुता-देवनागरी सम्बन्ध आ व्यवहारिक प्रशिक्षण सेहो सम्मिलित अछि। एहि प्रकार लिपिक इतिहास धीरे-धीरे भाषा-शिक्षणक विस्तृत प्रश्न बनि जाइत अछि। एहि मिश्रणक लाभ अक्षरकें निष्प्राण पुरातात्विक वस्तु नहि, जीवित भाषिक साधन मानब अछि। मुदा लिपिक प्राचीन रूप, लिपिक वर्तमान यूनिकोड रूप आ भाषा-व्याकरणक नियम तीनू पृथक स्तर छथि। तिरहुता लिखलासँ मैथिली ध्वनिक सम्पूर्ण भिन्न व्यवस्था स्वतः उत्पन्न नहि होइत; एकहि भाषा एकाधिक लिपिमे व्यक्त भऽ सकैत अछि।

उत्तर-पश्चिमी सेमिटिक वर्णमाला आ ब्राह्मी अक्षरक दृश्य-साम्यविषयक प्रसङ्ग विशेष सावधानी माँगैत अछि। वर्णमालाक नाम वा आकृतिक मिलान ऐतिहासिक सम्पर्क अथवा प्रत्यक्ष उद्भवक निर्णायक साक्ष्य नहि; प्रमाण लेल कालक्रम, लिपिलेख, भौगोलिक मार्ग आ लिपि-रूपक क्रमबद्ध परिवर्तन आवश्यक अछि। लेखकक तुलना विचारोत्तेजक होइतहुँ ई सामग्री अध्ययन-परिकल्पना रूपें राखब उचित अछि। तिरहुता सहित भारतीय लिपिसभक उद्भवक प्रश्नमे एक निश्चित वंशवृक्षक सरलीकरणसँ बेशी प्रकाशित अभिलेख-साक्ष्यक आधारपर अलग-अलग युगक परीक्षण चाही।

पाठमे अनुलग्नकसभक क्रम, विद्यार्थीक लेल अभ्यास-संकेत, अक्षर-रूपक विवरण आ तिरहुताक ऐतिहासिक अध्यायसभक संग शिक्षण-पद्धति सम्मिलित अछि। विद्यार्थीकें सभ अक्षरक विकास एकहि समयमे रटबेबाक बदला सीमित नमूना पर आकृति-क्रम समझेबाक लेखकक निर्देश व्यावहारिक अछि। एकर पूरक रूपमे दिनांकित अभिलेखक प्रतिचित्र, स्थान, सामग्री, अक्षरक मूल रूप,

प्रतिलिपि, उच्चारण-संदर्भ आ मतभेदक सन्दर्भ-सारणी दियला पर लिपि-शिक्षण कठोर शोध-दिशा लऽ सकत। चौबीसम प्रबन्धक असल महत्त्व इतिहास, लिपि-रचना आ भाषा-शिक्षणकें एकत्र करब अछि; ओकर विश्वसनीयताक कसौटी प्रत्येक ऐतिहासिक अक्षर-दावाक स्वतंत्र अभिलेखीय पुष्टि रहत।

२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली : क्षेत्रकार्यपर आधारित अध्ययन

पचीसम प्रबन्धक आधार लोकव्यवहारक कृषि आ मत्स्यपालन शब्दावली अछि। मूल पाठमे भौरी, भिरखा, अन्ता, बिसारी, हाटा आ कोरेन्ट जाल सन माछ, पकड़बाक साधनक नाम; हुनकर निर्माण-सामग्री, उपयोगक समय आ कार्य-पद्धतिक विवरण अछि। एहिमे सामान्य कोशक अर्थक अपेक्षा अधिक ठोस ज्ञान छिपल अछि: छोट-पैघ माछक भेद, नदी-कछारक पानी, दिन-रातिक व्यवहार, सूत-नायलनक प्रयोग, जालक भार आ फेंकबाक प्रक्रिया। एहि ज्ञानकें केवल 'शब्द' मानब पर्याप्त नहि; शब्द आ कर्मक संग-साथ अध्ययन आवश्यक अछि।

माछक नाम, रंग, पीठक बनावट, चाल-ढाल आ सुखायल स्थानमे जीवित रहबाक स्थानीय मान्यतासभक वर्णन जीववैज्ञानिक पहचानक आरम्भिक लोकसूचना होइ सकैत अछि। मुदा लोकनाम सदा एकटा निश्चित वैज्ञानिक प्रजातिसँ समतुल्य नहि; एकहि प्रजातिक क्षेत्रानुसार भिन्न नाम, आ एकहि लोकनामक भिन्न माछ लेल प्रयोग सम्भव अछि। कोश बनबैत समय स्थानीय उच्चारण, जलक्षेत्र, मौसम, सम्भावित वैज्ञानिक नाम, फोटो आ वक्ताक साक्षात्कार अलग अभिलेखित करब आवश्यक अछि। लेखकक सामग्री एहि दिशामे महत्त्वपूर्ण प्रारम्भ अछि।

कृषि-खण्डमे हल-बड़दक उपकरण, बीआक मात्रा आ खेतीक व्यवहारक उदाहरण उपस्थित अछि। यथा गेहूँ आ मकईक बीआ सम्बन्धी मात्रा विशिष्ट क्षेत्रीय अनुभवपर आधारित अछि; एकरा सभ माटि, बर्खा आ बीआ-प्रजाति लेल स्थायी कृषि-विज्ञानक सूत्र मानब उचित नहि। एहि कारण शब्दावलीक समीक्षामे तीन प्रश्न अलग रहत: स्थानीय नाम की अछि; लोकक व्यवहार कोना चलैत अछि; आ कृषि-विज्ञानक प्रमाणक संग ओकर सम्बन्ध की अछि। पचीसम प्रबन्धक महत्त्व मिथिलाक श्रमज्ञानकें लिखित स्रोत बनायब अछि। अधिक

विकसित संस्करणमे चित्रसहित वर्गीकरण, क्षेत्रवार शब्दभेद आ अवलोकनक तिथि देलासँ ई लोकविज्ञानक बहुमूल्य अभिलेख भऽ सकैत अछि।

२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान

छब्बीसम प्रबन्ध भाषाक दार्शनिक प्रतिपादन आ ओकर आधुनिक वर्णनात्मक विज्ञानक बीच सम्बन्धक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबैत अछि। आरम्भमे वैयाकरण, मीमांसक, नैयायिक आ बौद्ध दृष्टिक परिचय देल गेल अछि। शब्द-अर्थ सम्बन्ध नित्य मानब, वाक्यकेँ मुख्य अर्थ-इकाई मानब, पदक आधारपर ज्ञानक विश्लेषण करब आ भाषिक व्यवहारकेँ मानवीय विकल्प मानब—ई अलग ऐतिहासिक बौद्धिक प्रतिज्ञासभ छथि। एहि मतभेदकेँ एक प्रकारक आधुनिक ‘भाषा सिद्धान्त’ मानि समेटब उचित नहि। एतय लेखकक सफलता एहि विचारसभक साक्षात्कार करबेमे अछि; आलोचकक जिम्मेदारी मूल दार्शनिक प्रश्नक विशेषता अक्षुण्ण राखब अछि।

स्फोट आ शब्दब्रह्मक वैयाकरण विचारक चर्चा कएलाक बाद प्रबन्ध भाषाक सबसँ छोट अथवा मूल इकाई—वर्ण, पद कि वाक्य—क विवाद उपस्थित करैत अछि। प्रश्न केवल गिनतीक नहि, अर्थक उत्पत्तिक अछि: अलग ध्वनि अर्थ देइत अछि कि शब्दक सुसंगति अर्थ रचैत अछि, आकि समग्र कथनक प्रसङ्गमे अर्थ घटित होइत अछि? आधुनिक भाषाविज्ञानक ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान आ प्रयोगविज्ञान एहि प्रश्नकेँ एकाधिक विश्लेषण-स्तरपर बाँटैत अछि। तें प्राचीन दार्शनिक मत आ आधुनिक विश्लेषणक समानता देखबासँ पहिने हुनकर अध्ययनक वस्तु आ प्रमाणक पद्धतिक अन्तर पहचानल जाय।

फर्दिनाँ द साँस्यूरक संकेत-व्यवस्था, आधुनिक वर्णनात्मक भाषा-विज्ञान आ औपचारिक व्याकरणक सम्भावनाक उल्लेखसँ प्रबन्ध समकालीन अनुशासन दिस अग्रसर होइत अछि। लेखक वर्णनात्मक अध्ययनकेँ निर्देशात्मक शुद्धतासँ अलग करैत छथि। एहि भेदक महत्त्व मैथिली भाषा-सम्पादनमे विशेष अछि:

साहित्यिक प्रकाशन अपन वर्तनी-नियम तय कऽ सकैत अछि, मुदा एहि सम्पादकीय नियमकेँ समस्त लोकभाषाक प्राकृतिक सत्य नहि कहल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ, एकहि मूल क्रियाक क्षेत्रीय रूप भाषिक इतिहासक शोध-विषय रहि सकैत अछि, भले प्रकाशनक शैलीपुस्तिका एकर एकटा निश्चित रूप चुनैत हो।

पाठमे मैथिली उच्चारण, विभक्ति, संयुक्ताक्षर, ह्रस्व-दीर्घ, 'कएल/कयल', 'आएल/अयलाह' सन प्रयोग आ सम्मानसूचक क्रियाक विषयमे विस्तृत चर्चा अछि। एहि लेखकीय भाषिक निर्देशक स्रोत-इतिहासक तथ्य आ वर्तमान प्रमाणित लेखन-निर्देशिका अलग-अलग स्तरपर रखब चाही। सम्पादकीय सुधारक मूल आधार अर्थक यथार्थता, वाक्यक स्पष्टता आ वर्तमान मान्य प्रयोग हो; प्राचीन उद्धरण, पात्रक बोलचाल आ क्षेत्रीय उद्धृत रूप बिना स्रोतपरक कारण नहि बदलल जाय। एहि प्रकार प्रबन्धक व्यवहारिक उपयोग भाषा-शिक्षण आ प्रूफरीडिंगक बीच विवेकपूर्ण अनुशासन स्थापित करबाक दिशा अछि।

समाजभाषावैज्ञानिक प्रसङ्गमे प्रबन्ध रामावतार यादवक भाषा-विश्लेषण आ मैथिलीक उपभाषागत सामाजिक प्रतिष्ठापर चर्चा करैत अछि। एहि मुद्दामे ब्राह्मण आ अन्य जाति-समुदायक भाषिक रूपक असमान मूल्यांकनक प्रश्न उठैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठा भाषा-रूपक वैज्ञानिक श्रेष्ठताक प्रमाण नहि; तथापि शोधक लेल वास्तवमे कोन रूप के प्रयोग करैत अछि, कोन प्रसङ्गमे, आ ओकर प्रति समुदायक दृष्टि की अछि—ई प्रश्न प्रत्यक्ष डेटा सँ जाँचबाक अछि। केवल आलोचकक सामाजिक मतक आधारपर निश्चित ध्वनि अथवा रूपवैज्ञानिक निष्कर्ष निकालल उचित नहि।

छब्बीसम प्रबन्धक मुख्य उपलब्धि नव्य न्याय, शब्दप्रमाण, वैयाकरण-दर्शन, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ मैथिली सम्पादनकें एकत्र विचारबाक साहस अछि। एकर पद्धतिगत सीमा विभिन्न शास्त्रक मूल परिभाषा, अध्ययन-वस्तु आ प्रमाणक एक-दोसरसँ भिन्न रहबाक बोधक पर्याप्त विकास नहि होयब अछि। शब्दक दार्शनिक प्रमाण आ प्रकाशित पाठक वर्तनी एक नहि; भाषाक सामाजिक भिन्नता आ लेखकीय अशुद्धि सेहो एक नहि। एहि स्पष्ट भेदक आधारपर प्रबन्धक विचारधारात्मक विस्तार एक अनुशासित भाषादर्शनक आलोचनाने रूपान्तरित भऽ सकैत अछि।

२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली

सत्ताइसम प्रबन्ध डिजिटल मैथिलीक अभिलेखीय आ भाषिक इतिहासक एक महत्वपूर्ण स्रोत अछि। मैथिली विकीपीडिया, अनुवादक समुदाय, तिरहुता आ

कैथीक यूनीकोड, गूगल अनुवाद, अनुवाद-विकी, सामाजिक मञ्च आ ध्वनि-प्रणालीक प्रयोगक क्रममे लेखक अनेक व्यक्तिगत पत्राचार आ परियोजना-प्रसङ्ग रखैत छथि। एहि साक्ष्यक विशेष महत्त्व डिजिटल साहित्यक इतिहास लिखबाक लेल अछि, कारण वेबपर काजक बहुत अंश समाप्त पृष्ठ, बदलल पता अथवा अस्थायी मंचक संग हराएल जा सकैत अछि। उपलब्ध ई-मेल, कार्यक्रम-पत्र आ पुरान वेबपृष्ठक तिथि सुरक्षित करब ऐतिहासिक पुनर्रचनाक आधार बनि सकैत अछि।

अंशुमन पाण्डेय, राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य, मुजम्मिल आ आन व्यक्तिक योगदानक उल्लेख लेखकक विवरणमे भेटैत अछि। ई नामसभकें निश्चित परियोजना, भूमिका, तिथि आ अभिलेखक सँग जोडल गेलापर मात्र विश्वसनीय योगदान-पञ्जी तैयार होयत। कोनो मानकीकरण-प्रस्ताव तैयार करब, यूनीकोडक औपचारिक स्वीकृति भेटब, फॉण्ट उपलब्ध करब आ विकीपीडियाक स्वतंत्र भाषासंस्करणक स्थापना—ई अलग तकनीकी घटना छथि। इनकर कालक्रम मिलाएब आवश्यक अछि, नहि तँ एकहि समयक सामुदायिक प्रयासकें बादक पूर्ण तकनीकी उपलब्धिक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

मूल पाठमे २००८ सँ २०११ धरि विदेहक गोष्ठी आ अनुवाद-स्थानीयकरणक चर्चासभक तिथि, प्रारम्भिक विकीपीडिया-प्रयास आ संचार-विवरण प्रस्तुत अछि। एहि स्रोत-शृंखला पर आंशिक आधार राखि मिथिलाक डिजिटल समुदाय द्वारा उपेक्षित भाषामे स्वतन्त्र ज्ञान-संसाधन निर्माणक महत्त्व देखल जा सकैत अछि। मुदा प्रकाशित लेखमे व्यक्तिक कथन, पत्राचारक उद्धरण आ वर्तमान परियोजनाक उपलब्धि अलग श्रेणीमे रखब आवश्यक अछि। एकटा २०११क मत वर्तमान वेबसेवाक स्थिति नहि बतबैत; तत्कालीन विवादक अभिलेख सेहो आजुक मानकीकरणक निर्णय नहि होइत।

तिरहुता-कैथीक डिजिटल लेखनकें वर्तनी-मानकसँ गड़ुमड़ु नहि करबाक चाही। यूनीकोडक अक्षर-संकेतन, फॉण्टक आकृति, कुँजीपटल, पाठक खोजयोग्यता आ वास्तविक भाषिक लेखनक व्याकरण पाँचू अलग तकनीकी तह छथि। एकटा लिपिक अक्षर-संकेतन उपलब्ध होइतहुँ सुगठित पाठ-प्रदर्शन, संयोजकचिह्न, शब्द-विभाजन वा स्क्रीनरीडरक सहयोग अपूर्ण रहि सकैत अछि। एहि कारण

डिजिटल मैथिलीकें केवल 'फॉण्ट बनल' घटना नहि, दीर्घकालीन संगतता, पहुँच आ अभिलेखीय संरक्षणक परियोजना मानब फलदायी होयत।

सत्ताइसम प्रबन्धक मूल्य डिजिटल भाषिक इतिहासक आरम्भिक प्रत्यक्ष स्मृति आ स्थानीय पहल सभकें लिखित दस्तावेज बनायब अछि। एहि बहुमूल्य स्मृतिक आलोचनात्मक उपयोग लेल मूल संदेशक पूरा संदर्भ, पाठ्य-तिथि, उपलब्ध वेब-अभिलेख, पूर्व-परवर्ती तकनीकी संस्करण आ भूमिकाक श्रेय स्पष्ट राखब अपेक्षित अछि। एहि प्रकार साहित्यिक समानान्तरताक प्रश्न डेटा, खुलल पहुँच, लोकभाषा आ लिपिक स्वतंत्र उपयोगक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। ई अध्याय प्रथम खण्डक सैद्धान्तिक प्रबन्धसभक उपयुक्त डिजिटल समापन बनैत अछि।

२८. रचना लिखबासँ पहिने...

अठाइसम प्रबन्ध अपन शीर्षकसँ लेखन-पूर्वक तैयारीक संकेत दैत अछि, मुदा एकर वास्तविक विस्तार छन्दशास्त्र, उच्चारण, शब्दरूप आ कोशीय सामग्रीक विशाल संकलन धरि जाइत अछि। आरम्भमे लेखक पद्य-गद्यक भेद, वार्णिक-मात्रिक छन्द, गुरु-लघु, संयुक्ताक्षर आ लिखित स्वरक गणना स्पष्ट करबाक प्रयत्न करैत छथि। ई लेखकक शिल्पगत अनुशासनपर जोर दैत अछि: रचनाकार जे भाषा लिखैत छथि, ओकर ध्वनि, विराम आ छन्दक बुनियादी नियम बुझबाक चाही। तथापि भाषा-शिक्षण आ साहित्यिक सृजनक बीच अन्तर सुरक्षित रहनाइ आवश्यक अछि; केवल छन्दक नियम जानलासँ कविता अपने आप सफल नहि बनैत, जेकाँ छन्दमुक्त कविता छन्दहीन अज्ञानताक प्रमाण नहि।

मूल पुस्तकक एहि प्रकरणमे मैथिली उच्चारण आ प्राचीन-लोक शब्दरूपक असंख्य संक्षिप्त प्रविष्टि भेटैत अछि। एहन शब्द-संग्रह साहित्यिक रचनामे ऐतिहासिक रूप, भूली-बिसरी शब्दावली आ लोकजीवनक वस्तुगत नाम फेर प्रयुक्त करबाक प्रेरणा दैत अछि। मुदा अनियमित अक्षरक्रम, स्रोत-संदर्भक अस्पष्टता आ एकल पाँतिक बहुअर्थक प्रविष्टि शब्दकोशविज्ञानक दृष्टिसँ चुनौती छथि। कोनो शब्दक रूप बदलल स्थानिक उच्चारण अछि, ऐतिहासिक पाठान्तर अछि, कि टंकणदोष—तीनूक पहचान अलग होयबाक चाही। ग्रन्थक

शब्दसम्पदाकैँ सम्पादकीय उदाहरण रूपमे उपयोग करबाक पूर्व प्रमाणित पाठ आ जीवन्त स्थानीय प्रयोग मिलायब आवश्यक अछि।

शिक्षण-साहित्यक रूपमे प्रबन्धक सबसँ बड़ी सम्भावना एकर क्रमबद्ध अभ्यास-विधानमे अछि: ध्वनिक इकाई, मात्रा-गणना, उदाहरण, संशोधन, आ तकर बाद रचनात्मक प्रयोग। मुदा एकर विस्तृत शब्द-संग्रहक पहिल भागसँ तारतम्य जगह-जगह ढीला पडैत अछि। यदि छन्दशास्त्रीय सूत्र आ कोशीय प्रविष्टि अलग विभागमे रहथि, तँ पाठककैँ मुख्य प्रशिक्षण-पथ अधिक स्पष्ट बुझायत। ई सम्पादकीय सुझाव मूल सामग्रीक कटौतीक मांग नहि, ओकर विषयगत विन्यास स्पष्ट करबाक मांग अछि।

प्रबन्धक मौलिक महत्त्व भाषासँ रचनात्मक सम्बन्ध साधबाक गंभीर आग्रहमे अछि। रचना-साधनामे शास्त्रक ज्ञान, मातृभाषाक शब्दसंपदा, संप्रेषणक नैतिकता आ पाठकक श्रवण-संवेदना एक संग काम करैत अछि। एकर सीमा अनुभवजन्य भाषिक उदाहरणक प्रकाशित स्रोत, क्षेत्रीय प्रयोग आ अर्थ-निश्चयक अभाव अछि। नामक अनुरूप ई पाठ 'रचना लिखबासँ पहिने' तैयारीक कोश बनि सकैत अछि, यदि वर्तनी-व्याकरण, छन्द आ ऐतिहासिक शब्दावलीकैँ पृथक स्रोत-अनुशासनसँ व्यवस्थित कएल जाय।

२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी

उनतीसम निबन्ध तीन निकटवर्ती भाषिक पहिचानक शीर्षक लऽ स्थानीय राजनीति आ भाषिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत अछि। मूल पाठक मुख्य जोर 'मैथिली बाबू'क दलगत व्यवहार, पिछड़ल वर्गक प्रतिनिधित्वक दावासभ आ राजनीतिक गठजोड़पर पडैत अछि। एहि कारण निबन्धक शीर्षक भाषावैज्ञानिक तुलनाक अपेक्षा भाषा-राजनीतिक प्रतीक बनि जाइत अछि। ई अन्तर महत्वपूर्ण अछि: मैथिली, सुरजापुरी आ राजबंशीक ऐतिहासिक सम्बन्धक विवेचन लेल ध्वनि-सम्बन्ध, शब्दरूप, ऐतिहासिक अभिलेख आ समुदायिक आत्मपहिचानक स्वतंत्र अध्ययन आवश्यक अछि, जे एहि लघु निबन्धक प्रत्यक्ष केन्द्र नहि।

राजनीतिक व्यक्ति विश्वसनीयता, दलगत स्थिति आ सामाजिक प्रतिनिधित्वपर लेखकक आलोचना तीक्ष्ण अछि, मुदा नामसहित व्यक्तिगत निर्णयक वास्तविकता मूल प्रकाशित अभिलेख आ सम्बन्धित पक्षक प्रतिवादसँ

अलग सत्यापित होयबाक चाही। साहित्यिक समीक्षाक विषयसँ राजनीति जखन जुड़ैत अछि, तखन तथ्य, व्यंग्य, अनुमान आ लेखकक मतक भेद विशेष महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। लघु निबन्ध पाठककँ एहि भेदक आवश्यकता स्पष्ट देखबैत अछि।

एकर विशेष महत्त्व मैथिली भाषिक क्षेत्रक भीतर विविध समूहक राजनीतिक अदृश्यतापर प्रश्न उठब अछि। किन्तु भाषिक वैविध्यकँ केवल दलगत समीकरणक उदाहरण बना देब अपूर्ण होयत। सुरजापुरी-राजवंशी समुदाय स्वयं अपन भाषा-नाम, साहित्यिक व्यवहार आ ऐतिहासिक स्रोतक माध्यमसँ जे परिचय निर्धारित करैत अछि, ओकर सम्मानजनक स्वतंत्र अध्ययन अनिवार्य अछि। एहि भेदसँ निबन्धक सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न स्पष्ट रहैत अछि, आ भाषिक तथ्यपर अनपेक्षित निर्णय नहि थोपल जाइत।

३०. साहित्यमे लोक-तत्त्व : गाथा, नृत्य आ नाटक

तीसम प्रबन्ध लोकगाथा, नृत्य, संगीत आ नाटकक साझा प्रदर्शनमूलक चरित्रपर विचार करैत अछि। लेखक हाट-बजार, मेला, घर आ सार्वजनिक स्थलमे गाथागायक आ श्रोताक प्रत्यक्ष सम्बन्धक उल्लेख करैत छथि। एहि प्रसङ्गमे लोकगाथाक पाठ मुद्रित कविताक जकाँ स्थिर नहि; प्रदर्शनक समय, श्रोताक प्रतिक्रिया, गायकक स्मृति आ तात्कालिक अलंकरणक कारण बदलि सकैत अछि। ई मौखिक विविधता 'अपूर्ण' साहित्यक प्रमाण नहि, एक भिन्न रचनात्मक संरचनाक पहचान सेहो होइत अछि। आलोचनामे प्रत्येक प्रदर्शनक तिथि, स्थान, गायक आ पाठभेदक लेखा राखब उपयोगी होयत।

मूल प्रबन्ध लोरिक, सलहेस आ आन लोकदेवताक गाथाक उदाहरण दैत अछि। किछु प्रस्तुति श्रोताक सोझाँ आ किछु आराध्य देवताक सन्मुख होएबाक वर्णन रीतिगत परिस्थितिक अन्तर बतबैत अछि। एहि अन्तरसँ प्रसंगगत स्वर, गानक अनुशासन आ देवतासँ सम्बन्धक प्रकृति बदलि सकैत अछि। गाथामे वन्दना, क्षमायाचना, आशुकवित्त्व, युद्ध-वर्णन, जातीय आत्मपहिचान आ सामाजिक उत्त्थासक स्थान केवल लोकवर्णन नहि, कथाक अर्थ-विन्यासक अंग अछि।

मूल पाठमे मोहनजोदड़ोक नृत्यप्रतिमा आ वैदिक संदर्भक माध्यमसँ नृत्य-गीतक प्राचीनता देखेबाक प्रयत्न अछि। ई उदाहरण प्रदर्शन-परम्पराक ऐतिहासिक रुचि

जगबैत अछि, मुदा एक कालक नृत्यमुद्रा आ आधुनिक कथक अथवा मिथिलाक लोकनाचक बीच अखण्ड वंशानुक्रम सिद्ध नहि करैत अछि। रूपक समानता आ ऐतिहासिक निरन्तरताक भेद राखब आवश्यक अछि। लोकधर्मी-नाट्यधर्मीक चर्चा एक उपयुक्त सैद्धान्तिक साधन होइतहुँ शास्त्रीय 'परिष्कार'कें लोक-रूपक उपर श्रेष्ठताक निश्चित मानक नहि मानल जाय।

तीसम प्रबन्धक शक्ति लोकगाथाक जीवित प्रदर्शनक महत्त्व चिन्हब अछि। एकर सीमा आंशिक कालविन्यास आ मौखिक पाठक 'सुगठनक अभाव' सन एकरेखीय निर्णयमे अछि। लोकगायकक दर्शकीय संवाद, गीतक बीच विराम, बदलल पात्रक विस्तार आ स्थानिक उच्चारणक प्रामाणिक प्रतिलेख प्राप्त भेलापर ई सामग्री मिथिलाक मौखिक साहित्येतिहास लेल बहुमूल्य आधार बनि सकैत अछि।

३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

एकतीसम निबन्ध भाषा-शक्ति, हिन्दी-मैथिली सम्बन्ध, शब्दभण्डार, साहित्यिक पाठकीयता आ संस्थागत मानकीकरणक तीक्ष्ण प्रतिवाद अछि। लेखकक मुख्य आग्रह ई अछि जे साहित्यकार मातृभाषाक उपलब्ध शब्दसंपदाकें लऽ कऽ रचनात्मक रूपसँ सक्षम बनथि; सामाजिक व्यवहारसँ कटि कऽ आयातित पदावलीक अत्यधिक प्रयोग लेखनक स्वाभाविकता कम करि सकैत अछि। ई भाषिक व्यवहारक अर्थपूर्ण प्रश्न अछि, मुदा कोनो भाषा द्वारा दोसर भाषाक सम्पूर्ण 'हड़प' अथवा शब्दभण्डारक निश्चित कमी व्यापक समाजभाषावैज्ञानिक साक्ष्य बिना सिद्ध नहि होइत। सामाजिक अनुभवक एकतरफा राजनीतिक भाष्यकें भाषावैज्ञानिक निष्कर्ष नहि बनाओल जाय।

लेखक डेनिस भाषाक परीक्षा, अफ्रीकान्स-अंग्रेजी द्विभाषिक लेखक, मूल शब्दावलीक शिक्षण आ साहित्यिक छन्द-नियमक उदाहरणक माध्यमसँ भाषा-दक्षताक जटिलता देखबैत छथि। एहि तुलना सभक सन्दर्भ भिन्न अछि:

नागरिकता-परीक्षा प्रशासनिक भाषा-परीक्षण थिक, साहित्यिक शब्दभण्डार सौन्दर्यात्मक चयन अछि, आ सामाजिक बोलचाल स्थानिक व्यवहारक फल।

एहि तिनू के एकहि मानकपर तुलनाक बदला हुनकर अलग प्रयोजन स्पष्ट करब अधिक उपयोगी अछि। लेखकक 'विचारधारा पानिमे नून सन' उपमा एतहु उपस्थित अछि; भाषिक रूपमे विचारक स्वाभाविक प्रवेशक सर्जनात्मक महत्त्व

अच्छि, मुदा रूपक मात्रक आधारपर विशेष लेखकक सम्पूर्ण राजनीतिक प्रतिबद्धताक निर्णय नहि कयल जाउ।

निबन्ध संस्थागत साहित्य, सामाजिक प्रतिष्ठा आ जाति-आधारित मानकीकरणपर आलोचना करैत अच्छि। एहि प्रसङ्गमे जगदीश प्रसाद मण्डलक 'शम्भूदास'क भाषिक उदाहरण आ वास्तविक क्षेत्रकार्यक आग्रह उल्लेखनीय अच्छि। लेकिन लेखकीय प्रतिवादमे व्यक्तिविशेषक नीयत आ सार्वजनिक वक्तव्यविषयक विवाद सेहो समाहित अच्छि। हुनकर तथ्यगत प्रमाण, मूल प्रकाशित पाठ आ सम्बन्धित पक्षक प्रतिवाद स्वतंत्र जाँचल जाय। मैथिली मानकीकरणमे विविध जाति, धर्म आ क्षेत्रक बोलचालक समावेशन एक वैध लोकतान्त्रिक उद्देश्य अच्छि; ओकर उपयुक्त वैज्ञानिक पद्धति प्रतिनिधि भाषिक नमूना, प्रयोगक प्रसङ्ग आ स्पष्ट सम्पादकीय नियमक निर्माण होयत।

एकतीसम निबन्धक उपलब्धि मैथिली शब्दभण्डारक जीवित सामाजिक स्रोतपर बल देब अच्छि। एकर आलोचनात्मक सीमा polemical तर्क, साहित्यिक मूल्यनिर्णय आ भाषिक तथ्यक बीचक सीमा अस्पष्ट रहब अच्छि। साहित्यिक शब्दावलीक 'शुद्धता'क अंतिम निर्धारक केवल शब्दक लोकप्रचलन नहि, पात्र, समय, रचना-विधा, पाठक आ अर्थक अनुरूपता सेहो होइत अच्छि। एहि सूक्ष्मतासँ लेखकक समावेशी भाषा-दृष्टि और सुसंगत बनैत अच्छि।

३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

बतीसम प्रबन्ध मैथिलीक ऐतिहासिक स्थानकेँ भारोपीय भाषा-परिवारक व्यापक भाषावैज्ञानिक पृष्ठभूमिमे रखैत अच्छि। लेखक वंशवृक्षक उपमा, ध्वनि-सम्बन्ध, शब्दपरिवर्तन, वैदिक-लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ आधुनिक मैथिलीक परम्पराक चर्चा करैत छथि। एहि क्रममे ऐतिहासिक भाषिक सम्बन्ध बुझबाक मूल सिद्धान्त सामने अबैत अच्छि: कालक्रम, नियमित ध्वनिपरिवर्तन आ साझा नवाचारक आधारपर सम्बन्ध स्थापित होइत अच्छि। मुदा प्रत्येक ऐतिहासिक भाषाकेँ एक दोसरसँ सीध जन्मल 'सन्तान' मानि लेबापेक्षा मध्यवर्ती भाषिक रूप, क्षेत्रीय संपर्क आ समानान्तर विकासक जटिलता अधिक उपयोगी व्याख्या देइत अच्छि।

प्रबन्ध प्राकृतक भिन्न रूप, अशोकक अभिलेखक भौगोलिक भिन्नता आ मध्यकालीन साहित्यिक उदाहरण समाहित करैत अच्छि। ई सामग्री भाषाक

परिवर्तित ध्वनिक ठोस उदाहरण उपलब्ध करवैत अछि। तथापि अभिलेखक काल, लिपि, प्रदेश आ भाषिक विशेषताक सटीक पहचान बिना कोई एक रूपकें आधुनिक मैथिलीक प्रत्यक्ष स्रोत घोषित नहि करब। शब्दक मिलान नियमित ध्वनिसम्बन्धक प्रमाणक संग होएवाक चाही, नहि तँ संयोगसँ समान शब्द इतिहासक भ्रम उत्पन्न करत।

मूल पाठमे मिथिलाक उच्चारण, 'ड-ढ'क प्रयोग, चन्द्रबिन्दु, संयुक्ताक्षर, विभक्ति, सर्वनाम, क्रियारूप आ क्षेत्रीय शब्दपरिवर्तनक पर्याप्त सामग्री अछि। ई विस्तार भाषिक इतिहासकें केवल भाषा-परिवारक अमूर्त नक्शा नहि, वास्तविक मैथिली वाक्य-रूपक इतिहास बनवैत अछि। मुदा प्राचीन भाषिक डेटा, आधुनिक बोली-साक्ष्य आ प्रकाशनक निर्देशात्मक वर्तनी एकहि स्तरपर नहि राखल जाय। आधुनिक लेखनक लिए स्वीकृत वर्तनी व्यवहारिक निर्णय अछि; ऐतिहासिक भाषाक लुप्त रूप ओकर प्रमाणित अभिलेखक अधीन अलग विश्लेषण माँगैत अछि।

प्रबन्धक छन्दशास्त्र, वाक्यरचना आ प्रत्ययसूची सम्बन्धी विस्तार भाषाक विभिन्न तहक जानकारी दैत अछि, किन्तु एहि विस्तृतिक कारण मूल प्रश्न—भारोपीय परिवारमे मैथिलीक स्थान—क तर्क बीच-बीचमे ओझरायल रहैत अछि। एकटा अधिक सुगठित अध्ययनमे पहिने तुलना-पद्धति, तखन प्रमाणित कालक्रम, ओकर बाद ध्वनि-रूपविज्ञानक उदाहरण, आ अन्तमे आधुनिक मैथिली क्षेत्रक स्वतंत्र विकास राखल जाय। एहि विन्याससँ भाषाक साहित्यिक गरिमा आ वैज्ञानिक वंश-संबन्धक प्रश्न उचित रूपसँ अलग रहत। बतीसम प्रबन्धक महत्त्व भाषाक दीर्घकालीन इतिहासक अध्ययनक उद्यममे अछि; ओकर सीमा अनेकों उदाहरणक स्रोत-आधारित पूर्ण परीक्षण शेष रहब अछि।

३३. अभिनय पाठशाला

तेतीसम प्रबन्ध रंगमंच आ चलचित्र लेल अभिनयक प्राथमिक प्रशिक्षणक रूपमे रचल गेल अछि। लेखक बच्चाक प्रतीकात्मक खेलसँ अभिनयक अर्थ स्पष्ट करैत छथि—काल्पनिक चाहक पियाला स्वीकार करब, वस्तुक नक्कल करब, पात्रक क्रियाक संग मानसिक सहमति बनायब। एहि अनुभवसँ अभिनय केवल संवाद याद करब नहि, कल्पनाक स्थितिकें देह-स्वर-व्यवहारमे रूपान्तरित करब

सिद्ध होइत अछि। लेखक प्राथमिक विद्यालयक शिक्षक-प्रशिक्षण आ विदेह नाट्य-फिल्म उत्सवक पूर्वभूमिकाकें एहि पद्धतिसँ जोड़ैत छथि।

प्रबन्धमे स्वच्छता, औजारक उपयोग, सामूहिक खेल, कठपुतली आ बालकक रचनात्मक काजक चर्चा अभिनयक व्यापक शिक्षण-उद्देश्य देखबैत अछि। एहि विस्तारक लाभ रंगमंचकें जीवनक व्यावहारिक कौशलसँ जोड़ब अछि, मुदा अभिनय-पाठशालाक आन्तरिक क्रम—शरीर, श्वास, स्वर, प्रतिक्रिया, दृश्यनिर्माण, पात्रक लक्ष्य आ सामूहिक पूर्वाभ्यास—पृथक रूपसँ अधिक स्पष्ट होयबाक चाही। कालिदासक ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’क मंच-निर्देशक उदाहरण नाटकक लिखित संकेतकें वास्तविक क्रियामे बदलबाक दृष्टान्त बनैत अछि।

प्रबन्धक मुख्य उपलब्धि बालकक स्वाभाविक अनुकरणक क्षमताकें अभिनयशिक्षाक बुनियाद मानब अछि। ‘अभिनय सँ जिम्मेदार नागरिक बनब’ सन व्यापक शिक्षण-परिणामक दावा स्वतंत्र अध्ययन माँगैत अछि। तथापि कौशलक साझा अभ्यास, सहयोग आ आत्मविश्वासक विकासक सम्भावना तर्कसंगत अछि। एकर विकसित रूपमे वास्तविक अभ्यास-संकेत, आयुस्तर, मूल्याङ्कन आ प्रदर्शनक लघु अभिलेख जोड़ल जा सकैत अछि।

३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

चौंतीसम निबन्ध मंचनक लोकइतिहाससँ फिल्मी निर्माणक सामाजिक इतिहास दिस बढ़ैत अछि। रामखेलावन मण्डल आ बिन्देश्वर मण्डलक मंडली, ‘रेशमा-चूहड़’, ‘शीत-वसन्त’ आ अन्य पद्यनाटिका पूर्वक नाट्यप्रकरणसँ सम्बन्ध रखैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक अर्थ केवल सामग्री दोहराएब नहि; लेखक रंगमंचक मौखिक स्रोत आ चलचित्रक नव माध्यमक बीच समानान्तर सार्वजनिकता चिन्हबाक प्रयास करैत छथि। मुदा रंगमंचक इतिवृत्तकें पुनः कहबाक बदला एहि निबन्धमे माध्यम-परिवर्तनक अन्तरपर अधिक बल अपेक्षित अछि।

‘प्रीत के बाजी’ आ सम्बन्धित मैथिली फिल्म-निर्माणक प्रसङ्गमे निर्माता, गीतकार, नृत्यनिर्देशक आ स्थानीय उत्पादन-संस्थाक विवरण अछि। चलचित्रक अर्थ केवल कथाक चलचित्रण नहि, कैमरा, दृश्य-संयोजन, सम्पादन, ध्वनि आ प्रेक्षक-वितरणक परिणाम सेहो अछि। निबन्धक कलाकार-पञ्जी आरम्भिक

दस्तावेज होइतहुँ समीक्षाशास्त्रीय पूर्णता लेल रिलीज-वर्ष, अभिलेख, फिल्मक वास्तविक प्रति आ रचनात्मक भूमिकाक सत्यापन चाही।

एहि लघु प्रबन्धक उपलब्धि स्थानीय नाटकदल आ मैथिली चलचित्रक अवहेलित इतिहासकेँ एकत्र चिन्हब अछि। आलोचनाक अगिला चरणमे मुद्रित पोस्टर, कार्यक्रमपत्रक, गीतक अधिकार, दर्शकीय वितरण आ मूल दृश्य-रचनाक परीक्षण आवश्यक रहत। संस्थागत प्रतिष्ठा कम रहब कलात्मक हीनताक प्रमाण नहि, जेकाँ समानान्तर उत्पादन स्वयं उत्कृष्टताक प्रमाण नहि।

३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

पैंतीसम निबन्ध विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, उद्योग-प्रबन्धन आ स्थानीय भाषाक आर्थिक भविष्यक सम्बन्धक विश्लेषण करैत अछि। लेखक निवेशकक स्वाँट-परीक्षण—सामर्थ्य, दुर्बलता, अवसर आ संकट—केँ मैथिली भाषाक स्थिति बुझबाक माध्यम बनबैत छथि। ई रूपक उपयोगी अछि, कारण भाषा-बाजारमे प्रकाशन, डिजिटल सेवा, शिक्षण, विज्ञापन, रोजगार आ स्थानीय सामग्रीक वास्तविक माँग समाहित अछि। तथापि वित्तीय निवेशकक लाभ-प्रेरणा आ भाषिक समुदायक सांस्कृतिक अधिकार अलग उद्देश्य छथि; दुनू केँ एकटा व्यावसायिक कार्यतालिकामे पूर्णतः नहि समेटल जा सकैत अछि।

सूचना-प्रौद्योगिकी, लाइसेंस शुल्क, प्रकाशन, पाठकीय आधार आ डिजिटल साधनक उदाहरण भाषा-सम्बन्धी अर्थव्यवस्थाक व्यावहारिक सीमा देखबैत अछि। मूल पाठमे यूनेस्को अथवा अन्य प्रकाशन-संस्थासँ सम्बन्धित तुलनात्मक आँकड़ाक उल्लेख अछि; ई आँकड़ा जकर समयक अछि, ओही समयक मानि कऽ उद्धृत करबाक चाही। देशक कुल पुस्तक उत्पादन अथवा अंग्रेजी बाजारक हिस्सेदारी आधारपर मैथिलीमे निवेशक निश्चित उपलब्धिक अनुमान नहि कयल जा सकैत। स्थानीय पाठकक वास्तविक खरीद, संस्थाक संग्रहण आ दीर्घकालीन डिजिटल खर्च अलग जाँचब आवश्यक अछि।

निबन्धक मुख्य योगदान भाषा-संरक्षणकेँ केवल भावात्मक आग्रह नहि, आर्थिक संरचना आ तकनीकी पहुँचक प्रश्न बनायब अछि। मुदा सामुदायिक भाषा-नीतिक अन्तिम लक्ष्य केवल निवेशक लाभ नहि, ज्ञानक न्यायपूर्ण उपलब्धता,

शिक्षण आ रचनात्मक स्वायत्तता सेहो अछि। एहि द्वैध उद्देश्यकें स्वीकार कयलासँ निबन्धक विचार अधिक संतुलित होइत अछि।

३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

छत्तीसम प्रबन्ध मैथिली कोशकारिताक इतिहासमे जयकान्त मिश्रक स्थानक विवेचन करैत अछि। दीनबन्धु झा, भवनाथ मिश्र, मैथिली अकादेमी, मतिनाथ मिश्र 'मतंग' आ अन्य कोश-परियोजनाक पृष्ठभूमिमे लेखक शब्दकोश-निर्माणक दीर्घ परम्परा चिन्हैत छथि। एहि सामग्रीक महत्त्व केवल प्रकाशित पोथीक नामगणना नहि, कोशक प्रकार, संकलनक सीमा आ पाठकक प्रयोजनक प्रश्न उठब अछि। कोशक ऐतिहासिक प्राथमिकताक दावा प्रथम संस्करण आ प्रकाशन-साक्ष्यक मिलानसँ निर्धारित होयबाक चाही।

लेखक अद्यतन क्षेत्रकार्य, स्थानीय शब्द, उदाहरण-वाक्य, प्रयोगक भेद, उच्चारण-संकेत आ अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपिक उपयोगक आग्रह करैत छथि। ई शब्दकोशविज्ञानक सशक्त प्रस्ताव अछि। केवल प्रविष्टिसंख्याक विस्तार उपयोगी होइतहुँ उत्कृष्ट कोशक एकमात्र कसौटी नहि; अर्थभेद, व्याकरणिक वर्ग, विश्वसनीय उद्धरण, परस्पर संदर्भ, व्युत्पत्ति आ प्रयोगक क्षेत्र सेहो निर्णायक अछि। पारिभाषिक शब्दक तिथि आ मान्य स्रोत केलासँ एकहि शब्दक ऐतिहासिक बदलाओ सेहो खुलि सकैत अछि।

प्रबन्धक उपलब्धि जयकान्त मिश्रक कार्यकें भविष्यक व्यापक मैथिली कोश-परियोजनासँ जोड़ब अछि। एहि विचारक वास्तविक मूल्य खण्ड ४६-४७क विशाल थिसॉरस अध्ययनमे पुनः देखल जा सकैत अछि, जतेक प्रविष्टि हो ततेक प्रमाण-जाँचक आवश्यकता बढ़ैत अछि। शब्दसंकलनक संख्या आ शब्दार्थक विश्वसनीयता दुनूकें अलग प्रकाशित सूचक बनायब एक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय सुधार होयत।

३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली

सैंतीसम प्रबन्ध पञ्जी तालपत्रक कथित लगभग एगारह हजार छवि-आधारित अवलोकनसँ प्राप्त पद, उपाधि, स्थाननाम आ सामाजिक सम्बन्धक शब्दावली प्रस्तुत करैत अछि। 'सांघिविग्रहिक', 'धर्माध्यक्षक', 'भाण्डागारिक',

‘राजवल्लभ’ आ अन्य प्रशासनिक पद ऐतिहासिक समाजक संस्थागत संरचनाक संकेत दैत छथि। एहि शब्दसभक वास्तविक अर्थ निर्धारण लेल प्रसङ्ग, हस्तलेखक रूप, अभिलेखक काल आ विभिन्न प्रयोजनमे पदक प्रयोग देखब आवश्यक अछि। शब्दनामक मात्र उपस्थितिसँ प्रशासनिक अधिकारक निश्चित स्वरूप सिद्ध नहि होइत।

पाठक भीतर गोत्र, मूल, वंशानुक्रम, बस्ती, राजा आ वंशजक क्रमक अनेक ऐतिहासिक दावे भेटैत अछि। एहि दावासभमे पञ्जीक समकालीन लेख, बादक प्रतिलिपि, मौखिक वंशस्मृति आ लेखकक व्याख्याक तह अलग करबाक आवश्यकता अछि। ‘कतेक पुरान’ सन अनुमानकेँ निश्चित कालक्रम नहि मानल जाय। पञ्जीक पाठसम्मत अभिलेखीय अध्ययन लेल छविक स्थायी संकेतांक, तालपत्र क्रम, पंक्ति-संख्या, लिप्यन्तरण आ संदिग्ध अक्षरक चिह्नांकन अनिवार्य अछि।

एहि प्रबन्धक मूल उपलब्धि पञ्जीकेँ केवल विवाह-वंशक सूची नहि, सामाजिक शब्दावली आ इतिहासक संभावित अभिलेख बनायब अछि। तथापि कथित छवि-गणनाक स्वतन्त्र सत्यापन आ शब्दार्थ-पुनर्परीक्षणक बिना सम्पूर्ण ऐतिहासिक निष्कर्ष प्रकाशित तथ्य नहि बनत। आगामी पञ्जी-समीक्षाक विस्तृत खण्डसभक सँग एहि छोट पद-संग्रहक प्रमाण-सम्बन्ध स्पष्ट रूपसँ दर्ज रहबाक चाही।

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

अडतीसम निबन्ध बाणभट्टक ‘कादम्बरी’सँ यूरोपीय दीर्घ आख्यान आ मैथिली उपन्यासक तुलनाक व्यापक परिधि रचैत अछि। लेखक ‘पिलग्रिम्स प्रोग्रेस’, रिचर्डसनक ‘पैमेला’, फील्डिंगक ‘टॉम जोन्स’ आ अन्य कृतिसभक सन्दर्भ दैत छथि। एहि ऐतिहासिक तुलनाक उपयोगिता कथात्मक रूपक विविधता बुझबमे अछि, मुदा ‘प्रभाव’ स्थापित करबाक लेल केवल रूपगत साम्य पर्याप्त नहि। अनुवाद उपलब्धि, लेखकक पठन-साक्ष्य, समकालीन पाठकीय संसार आ कथात्मक प्रविधिक विशिष्ट ग्रहणक प्रमाण अपेक्षित अछि।

मैथिली उपन्यासमे हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’ आ ‘द्विरागमन’, ललितक ‘पृथ्वीपुत्र’ आ आन कृतिसभक सामाजिक पृष्ठभूमिक चर्चा अछि। स्त्रीशिक्षा,

ग्राम्य संरचना, कृषकजीवन, वर्गगत असमानता आ सामाजिक हास्य एहि साहित्यक महत्वपूर्ण कथाविषय छथि। मुदा सामाजिक विषयक समानता अंग्रेजी उपन्यासक प्रत्यक्ष प्रभावक निर्णायक आधार नहि; एकहि ऐतिहासिक दबावमे स्वतंत्र रूपसँ समान विषय उत्पन्न भऽ सकैत अछि। रूप-सम्बन्ध देखबाक लेल कथावाचक, बहुस्वर, समयक गति आ विडम्बनाक कलात्मक व्यवस्था मिलान करब आवश्यक अछि।

निबन्धक उपलब्धि मैथिली उपन्यासकें व्यापक विश्व-आख्यानक तुलनात्मक संदर्भमे रखब अछि। तथापि वंशवृक्षक सरलीकरणक बदला पाठक क्रिया-प्रक्रिया, मुद्रणसंस्कृति आ सांस्कृतिक स्वायत्तताक साक्ष्यपर विचार कयला सँ 'प्रभाव'क प्रश्न अधिक वैज्ञानिक बनत। साहित्यिक समानता आ ऐतिहासिक आश्रयक अन्तर एहि प्रबन्धक मूल समीक्षात्मक निष्कर्ष अछि।

३९. शब्द-विचार : सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली

उनचालीसम निबन्ध भारतीय लिपिक ध्वन्यात्मक आधार, संस्कृत शिक्षाशास्त्र, तिब्बती-सिक्किमी भाषिक परिवेश आ संगणकीय मैथिलीक कार्यप्रवाहकें एकसूत्रमे अनैत अछि। स्वर, व्यञ्जन, उच्चारणस्थान, उदात्त-अनुदात्त-स्वरित आ लिखित रूपक वर्णन पाठककें प्राचीन ध्वनि-अध्ययनक पद्धति देखबैत अछि। मुदा विभिन्न भारतीय भाषाक ध्वनिसमूहक एकरूपता व्यापक सामान्यीकरण अछि; भिन्न भाषाक ऐतिहासिक परिवर्तन, ध्वनितत्त्व आ लिपि-सम्पादनक विशिष्टता स्वतंत्र अध्ययन माँगैत अछि। लिपिक अक्षरक नाम समान भेला पर उच्चारणसाम्य स्वतः निश्चित नहि होइत।

सिक्किम, तिब्बती/भुटिया सम्बन्ध, स्थानीय व्यक्तिसँ संवाद आ अनुवाद-स्थानीयकरणक डिजिटल अनुभवक उल्लेख अनुभवजन्य सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। एहि अंशमे यात्राक वर्णन, वक्ताक कथन आ भाषावैज्ञानिक विश्लेषण अलग रखब आवश्यक अछि। कोनो व्यक्तिक बोलीक आत्मपहिचान वास्तविक सामाजिक तथ्य अछि, मुदा भाषासभक सम्पूर्ण ऐतिहासिक सम्बन्धक पर्याप्त प्रमाण नहि। डिजिटल परियोजनाक पुरान संकेत आ वेब-पता सेहो ओही समयक अभिलेख मानल जाय; वर्तमान उपलब्धताक परीक्षण अलग आवश्यक अछि।

निबन्धक सामर्थ्य शब्द-ध्वनि-लिपि-संगणना बीच सम्बन्धक खोजमे अछि। एकर सीमा विषयक तीव्र छुलाँगक कारण तर्कक कड़ी कतिपय ठाम नहि भेटब अछि। प्रत्यक्ष ध्वनिप्रतिलेख, लिपिरूपक तुलनात्मक छवि आ डिजिटल संकेतांकक सत्यापित सूचना जोड़लासँ ई मिश्रित विवरण एक उपयोगी भाषिक-तकनीकी शोध बनि सकैत अछि।

४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला : बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे

चालीसम निबन्ध बालकक कथाश्रवण, घरक वाचन-परम्परा, लोकगाथा आ बालकक अपन सामूहिक खेलकें कथासर्जनाक मूल संसाधन मानैत अछि। दादी-नानीक दीर्घ आख्यान आ बालकक स्वतः रचल खेलक अन्तर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: एक ठाम वयस्क कथावाचक अर्थनिर्माणक केन्द्र छथि, दोसर ठाम बालक स्वयं कथानक, नियम आ पात्र बदलैत अछि। बालसाहित्यक समीक्षा लेल एहि स्वायत्त कथाभावनाकें चिन्हब आवश्यक अछि।

निबन्ध संस्थागत बालसाहित्यक गुणवत्ता पर तीक्ष्ण आलोचना करैत अछि आ लिली रे, जगदानन्द झा 'मनु'क 'चोनहा' आदि उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। तथापि सम्पूर्ण संस्थागत प्रकाशनकें केवल किछु उदाहरणक आधारपर 'असफल' घोषित करब उचित नहि; प्रकाशन-सूची, पाठक-वय, भाषा-सुलभता आ चयनित मूल कथा-पाठक तुलनात्मक प्रमाण चाही। 'चोनहा'क बालमनोविज्ञान आ कथावस्तुक नवीनताक लेखकक प्रशंसा एक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि, अंतिम सत्यापित निष्कर्ष नहि।

बालकथाक सरल शब्द, स्पष्ट कथाविन्यास आ आत्मीय अनुभवपर लेखकक बल उपयोगी अछि। मुदा सरलता काव्यात्मक गरीबी नहि: पात्रक स्वतन्त्र निर्णय, चित्र, हास्य, आश्चर्य, सीमित भय आ वास्तविक सामाजिक सम्बन्धक सूक्ष्मता बालकथाकें अर्थवान बनबैत अछि। एहि पाठशालाक उपलब्धि लेखनकें बच्चाक वास्तविक कथन-रुचिसँ जोड़ब अछि; तकर विकसित रूपमे अलग आयुवर्ग, कथावाचनक परीक्षण आ बालपाठकक स्वतन्त्र प्रतिक्रिया समाविष्ट होयबाक चाही।

४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

एकचालीसम निबन्ध शीर्षकमे पाठकक रुचिक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा आरम्भमे ओकर वास्तविक केन्द्र पोथीक उपलब्धता अछि। मिथिलाक भीतर किताब नहि भेटब, नेपाल पठेबामे डाकखर्चक बाधा आ दूर देशमे रहनिहार मैथिलीभाषीक दूरीक समस्या सँ लेखक अन्तर्जालक सार्वजनिक उपलब्धता दिस बढ़ैत छथि। ई बदलाव महत्त्वपूर्ण अछि: 'किए पढ़थि' क उत्तर मात्र लेखकक आत्मप्रशंसा नहि, 'कतऽ आ कोना पढ़ि सकथि' क भौतिक व्यवस्था सेहो अछि। लेखक अपन मूल आ अनूदित गद्य-पद्यक वर्गीकरण करैत विदेहक डिजिटल अभिलेखक संकेत दैत छथि। एहि आधारपर निबन्ध पुस्तक-विपणनक विज्ञापन आ आत्मपरिचय मात्र नहि, अल्पवितरित भाषाक साहित्यक पहुँचपर लिखल दस्तावेज बनैत अछि।

पाठकक विश्वास अर्जित करबाक क्रममे लेखक उदय नारायण सिंह आ राजदेव मण्डल सहित आलोचक लोकनिक कथन, पद्यक पाँति आ रचनाक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि। तखन अध्ययनक मुख्य प्रश्न बनैत अछि जे उद्धृत प्रशंसा साहित्यिक प्रमाण कतेक अछि आ मूल रचना पढ़बाक स्वतन्त्र आवश्यकता कतेक। 'ढहैत भावनाक देवाल' आ 'सुनैत शून्यक दृश्य' सन बिम्बक उल्लेख शैलीक संकेत दैत अछि, मुदा ओकर सौन्दर्यगत निष्कर्ष पूर्ण कविता आ प्रसङ्गक अध्ययनसँ निकलत। आलोचकक प्रशंसा लेखकक प्रकाशित उपस्थिति प्रमाणित करैत अछि; ओ पाठकक व्यक्तिगत आस्वाद अथवा कृतिक निरन्तर मूल्यांकनक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। निबन्धमे आत्मसन्दर्भक बहुलता एहि दुनू भूमिकाक सीमाकँ कखनो-कखनो धुँधला करैत अछि।

आगाँ दीर्घ कृतिसूची, कविता-गजल, कथा-उपन्यास, अनुवाद आ आलोचनाशास्त्रक परिचय एहि निबन्धकँ एकटा प्रारम्भिक स्व-ग्रन्थसूची बनबैत अछि। एकर ऐतिहासिक उपयोगिता विशेष अछि, कारण लेखक अपन कार्यक उस कालक स्वरूप स्वयं दर्ज केने छथि। मुदा 'सभटा रचना अन्तर्जालपर उपलब्ध' सन कथनक परीक्षण लेल उद्धृत लिंक, उपलब्ध फाइलक वर्ष, पूर्णता, संस्करण आ स्थायी अभिलेखन अलग जाँचब आवश्यक अछि। डिजिटल उपलब्धता भौगोलिक अवरोध घटबैत अछि, मुदा पहुँच, तकनीकी साक्षरता आ पाठकक रुचि तीनू एक बात नहि। एहि सीमाक संग निबन्ध मैथिलीमे लेखक-

पाठक सम्बन्ध, प्रकाशनक अर्थशास्त्र आ आत्मपञ्जीकरणक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत अछि।

४२. वजन प्रबन्धन : एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव

बयालीसम निबन्ध स्वानुभवक वृत्तान्त अछि, चिकित्साशास्त्रीय मार्गदर्शिका नहि। लेखक सड़क-दुर्घटना, जाँघक हड्डी टूटब, दीर्घ उपचार, चलबामे कठिनाई आ शारीरिक श्रम घटलासँ वजन बढ़बाक क्रम सुनबैत छथि। एहि आरम्भक विशेषता संख्यात्मक स्मृति आ देहक पीडाक संयुक्त प्रस्तुति अछि। दुर्घटनाक बादक जीवनकेँ केवल चिकित्सकीय घटना नहि, आत्मविश्वास आ क्रियाशीलताक टूटल क्रमक रूपमे देखाओल गेल अछि। अपन बेटाक वजन घटेबाक अनुभवसँ लेखक पुनः प्रयासक प्रेरणा पबैत छथि; एतय दू पीढ़ीक अनुभव बीच अपन निर्णायक कथा बनैत अछि।

निबन्धमे संकुचित भोजन-अवधि, संशोधित कीटो-आहार, कारी कॉफी आ शारीरिक अभ्यासक विवरण भेटैत अछि। लेखक अपन वजन लगभग सय किलोसँ अस्सी किलो धरि घटल बतबैत छथि। एहि व्यक्तिगत निष्पत्तिक कथात्मक विश्वसनीयता लेखकक आत्मवृत्तान्तमे निहित अछि, मुदा एक व्यक्तिक अनुभवे सँ सामान्य पाठक लेल ई आहार-संयोजन सुरक्षित, उपयोगी अथवा चिकित्सकीय रूपसँ अनुशंसित सिद्ध नहि होइत अछि। निबन्धमे चिकित्सक लोकनिक प्रसारण-सन्दर्भ, यकृत, पोषण आ सहवर्ती रोग सम्बन्धी दावे लिखल अछि; हुनकर तिथि, मूल कथन, व्यक्तिपरिस्थिति आ वैज्ञानिक आधार बिना स्वतंत्र सत्यापनक स्वास्थ्य-सलाहक रूपमे दोहरायब अनुचित होयत। विशेषतः दिनभरि भोजन नहि करब आ सीमित आहारकेँ सार्वभौमिक नियम मानब नहि चाही।

रचनाक शिल्प स्मृतिलेखन, परिश्रमक आत्मकथा आ व्यावहारिक अनुभवक साझा कथनक बीच चलैत अछि। ‘अगिला शॉक’, ‘रहस्योद्घाटन’ सन उपशीर्षक उत्सुकता उत्पन्न करैत अछि, मुदा पाठक-विज्ञानक दृष्टिसँ अनुभव आ कारणात्मक निष्कर्ष अलग चिन्हबाक चाही। लेखक अपन सीमित शारीरिक क्षमता सँ पुनः दौड़बाक स्थितिमे पहुँचबाक कथा कहैत छथि, जे सहनशीलताक मानवीय पक्ष उद्घाटित करैत अछि। एहि निबन्धक साहित्यिक उपलब्धि

असाध्य प्रतीत होइत आत्मसंघर्षक विवेचन अछि; एकर सीमा व्यक्तिगत परीक्षणकें व्यापक स्वास्थ्य-सिद्धान्त बुझल जा सकबाक जोखिम अछि।

४३. एनी एर्नो आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार

तिरचालीसम निबन्ध दू भिन्न साहित्यिक प्रसङ्गकें एकहि शीर्षकमे राखैत अछि। प्रथम छोट विभागमे एनी एर्नोके संस्मरणात्मक लेखन आ नोबेल सम्मानक उल्लेख अछि; दोसर, अपेक्षाकृत पैघ विभाग कपिलेश्वर राउतक पाँच चयनित कथापर केन्द्रित अछि। ई संरचनागत असममिति स्वयं आलोचनाक विषय अछि। एर्नोके आत्मवृत्तात्मक स्मृति आ राउतक ग्रामीण जीवनवाला कथासभमे स्त्री-अनुभव, श्रम आ सामाजिक इतिहासक समान अध्ययन-क्षेत्र सम्भव अछि, मुदा मूल निबन्ध एहन तुलनाक व्यवस्थित तर्क कम विकसित करैत अछि। एर्नो सम्बन्धी छोट टिप्पणीकें विस्तृत तुलनात्मक निष्कर्ष मानब उचित नहि।

कपिलेश्वर राउतक 'कुमारी भोजन', 'थरथरी', 'बड़का खीरा', 'पुनर्नवा' आ 'भुम्हुर आगि'क प्रसङ्गमे लेखक ग्रामीण जीवनक पाँच रूप देखबैत छथि। 'कुमारी भोजन'मे विधवा सियावती, बेटीक विवाहजन्य ऋण आ पर्व-परम्पराक प्रसङ्ग सामाजिक अधिकारक प्रश्न खोलैत अछि। 'थरथरी'मे जाडक रात्रि, खेत आ जमीन्दार-श्रमिक सम्बन्धक वातावरण महत्त्वपूर्ण अछि। 'बड़का खीरा'मे पशुपालनक लोकज्ञान आ कृषि-विज्ञानक बीच पीढ़ीगत संक्रमणक संकेत अछि। 'पुनर्नवा'क खेल आ मृत्युकें स्त्रीक निर्णयाधिकारसँ जोडल गेल अछि। 'भुम्हुर आगि'मे साधु-समाजक भोज आ जातिगत श्रेणीकरणक तनाव देखल जाइत अछि। लेखकक सारांश कथाक वैचारिक दिशा चिन्हैत अछि; मुदा कृतिक औपचारिक सफलता जाँचबाक लेल कथावाचक, संवाद आ अन्तिम दृश्य मूल कथापाठसँ पुनः देखब आवश्यक होयत।

निबन्धक ठोस योगदान सांस्कृतिक सूक्ष्मताकें साहित्यक मुख्य अर्थ-वाहक मानब अछि। 'इहैत-इहैत' सन पशुपालन सम्बन्धी पुकार, पर्वक माटि, स्थानीय खेल आ भोजक सामाजिक मर्यादा आन भाषामे सरल पर्यायसँ नहि समेटल जा सकैत अछि। एकर अनुवाद केवल शब्दान्तर नहि, प्रसङ्गक पुनर्संरचना माँगैत अछि। तथापि समानान्तर साहित्यक महत्त्व सिद्ध करबा लेल एकरा मूलधारक सामान्यीकृत विरोधी छविसँ नहि, पाँचू कथाक विशिष्ट शिल्पसँ विकसित करब

अधिक फलदायी होयत। एतय लोक-शब्दावली, सामाजिक स्त्रीकरण आ स्त्रीक क्रियाशीलता निर्णायक आलोचनात्मक बिन्दु बनैत अछि।

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

चवालीसम निबन्ध विदेहक शरदिन्दु चौधरी विशेषांकक सम्पादकीय प्रसङ्गसँ शुरू होइत अछि। लेखक जीवित रचनाकारपर केन्द्रित विशेषांककें पुरस्कार-केन्द्रित प्रतिष्ठा-प्रणालीसँ अलग मूल्य दैत छथि। साहित्यिक सार्वजनिकताक दृष्टिसँ ई बहस सार्थक अछि: कोनो लेखकक योगदान नियमित अभिलेखन, मूल पाठ उपलब्धता आ आलोचनात्मक संवादसँ सेहो पहिचानल जाइत अछि। मुदा पुरस्कारसँ विशेषांक 'बेसी महत्त्वपूर्ण' होयबाक कथन मूल्यगत सम्पादकीय पक्ष अछि, वस्तुनिष्ठ तुलनात्मक माप नहि। विशेषांकक सम्पूर्ण सामग्री, सहभागी लेखक आ पाठकीय प्रतिक्रियाक स्वतन्त्र अध्ययन बिना ओकर साहित्यिक परिणाम निश्चित नहि कहि सकैत छी।

निबन्धक बादक भाग समानान्तर साहित्य, मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न दिस विस्तृत होइत अछि। 'The Book of Bihari Literature' आ विद्यनन्द झाक अनुवादक प्रसङ्गमे मूल पाठक आलोचक अनुवादक सांस्कृतिक सूक्ष्मताक कमीक आरोप करैत छथि। 'ओलक सन्ना' सन पदक उदाहरण प्रासङ्गिक अछि, किएक तँ पाक-परम्पराक शब्दक अर्थ परिवेशसँ बनैत अछि; परन्तु एक पदक उल्लेख मात्रसँ पाँचू अनुवादक समग्र गुण-दोष तय नहि होयत। मूल मैथिली कथा, प्रकाशित अंग्रेजी पाठ आ सम्भावित अन्य पर्यायक तुलनात्मक सारणी एहन निर्णायक आवश्यक प्रमाण होयत। अनुवादक प्रशिक्षण सम्बन्धी व्यक्तिगत अनुमानकें पाठगत विश्लेषणक स्थान नहि देबाक चाही।

शरदिन्दु चौधरी विशेषांकक शीर्षक आ विविध समानान्तर साहित्य-विमर्श बीच सम्पादकीय दूरी सेहो देखाइत अछि। एहि कारण निबन्धकें केवल एक लेखकक अध्ययन नहि, विदेहक संपादकीय बहसक मिश्रित दस्तावेजक रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि। एकर महत्त्व उपेक्षित लेखकक प्रकाशन, अनुवादक सांस्कृतिक उत्तरदायित्व आ संस्थागत प्रतिष्ठाक पुनर्विचारमे अछि। सीमा अछि विषयगत विचलन आ उद्धरणधारित आरोपसँ प्रत्यक्ष पाठसमीक्षा दिस बढ़बाक अपर्याप्तता।

४५. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

पैंतालीसम निबन्ध प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर केन्द्रित विशेषांकक सम्पादकीय सूचना प्रस्तुत करैत अछि, मुदा मुख्य विस्तार उमेश मण्डलक पाँच कथा, समानान्तर साहित्यक आवश्यकता आ प्रतिनिधित्वक विवादमे जाइत अछि। एहि मिश्रित संरचनाक अध्ययनमे विशेषांकक मूल उद्देश्य आ सम्पादकीय विचारधाराक सम्बन्ध अलग चिन्हबाक चाही। स्त्री रचनाकारक नामपर प्रकाशित विशेषांकक उपलब्धि मूल्याङ्कन लेल प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क वास्तविक रचनासभ, विषय, भाषा आ काव्यात्मक पद्धतिक पर्याप्त पाठ आवश्यक अछि। संलग्न निबन्धमे एहन स्वतंत्र समीक्षाक अपेक्षित विस्तार नहि भेटब एकर प्रमुख सीमा अछि।

सम्पादकीय विवेचन 'नराशंसी'क वैदिक उल्लेखसँ समानान्तर साहित्यक ऐतिहासिक वंशक्रम बनावय चाहैत अछि आ आधुनिक मैथिली साहित्यक संस्थासभक बहिष्करणक आलोचना करैत अछि। ई ऐतिहासिक प्रतिज्ञा रोचक अछि, मुदा वैदिक पदक तत्कालीन अर्थ, प्रसङ्ग आ आधुनिक साहित्यक आन्दोलनक संकल्पनात्मक समानता अलग सत्यापन माँगैत अछि। पुरान ग्रन्थमे 'समानान्तर' सन सम्भावित भाव भेटब आधुनिक आन्दोलनक निर्बाध वंशावलीक पर्याप्त प्रमाण नहि। एतय भाषाशास्त्रीय साक्ष्य, साहित्यक संस्थाक अभिलेख आ नव कृतिसभक वास्तविक शिल्प तीन स्तरपर तर्क विकसित होबाक चाही।

उमेश मण्डलक कथासभक चयनक लेखकक अपन श्रेष्ठता-निर्णय कहि प्रस्तुत कयल गेल अछि। चयन स्वयं उपयोगी प्राथमिक सूचना अछि; मुदा लेखकक आत्मचयन आ आलोचकक मूल्याङ्कन भिन्न होइत अछि। पाँचू कथाक घटना, पात्र, कथन-दृष्टि, संवाद आ स्थानीय शब्दावलीक परीक्षणसँ समग्र साहित्यक विशिष्टता ठोस रूपमे देखाओल जा सकैत अछि। एहि निबन्धक वैचारिक उपलब्धि जीवित रचनाकार, स्थानीय भाषा आ समानान्तर पत्रिकाक एक संग चर्चा अछि; एकर सम्पादकीय अपूर्णता शीर्षकमे निर्दिष्ट रचनाकारक पर्याप्त स्वतन्त्र मूल्याङ्कन नहि करब अछि।

४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

छियालीसम निबन्धमे 'The Science of Words'क २०२२ सालक Diorama International Film Festival सम्बन्धी प्रस्तुति, पञ्जीकरण-निर्देश आ मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवादक जानकारी सम्मिलित अछि। एतय साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिकता प्रश्नक रूपमे खुलैत अछि: स्थानीय भाषाक कथा कोना आन भाषाक पाठक आ अन्य माध्यमक मंच धरि पहुँचैत अछि? अनुवादक रूपमे लेखकक अपन भूमिका विशेष ध्यानाकर्षक अछि, मुदा अनुवादक नाम आ उत्सवमे सूचीबद्ध होयब सौन्दर्यगत सफलता सिद्ध नहि करैत अछि। कृतिक प्रकाशन-सन्दर्भ, उत्सवक अभिलेख आ अंग्रेजी कथाक पाठ-साम्य अलग प्रमाण छथि।

निबन्धमे उत्सवक वेबसाइट, पंजीकरण, पुष्टिकरण आ प्रवेशक तकनीकी विवरण एक समयविशेषक उपयोगी दस्तावेज अछि। एकर ऐतिहासिक महत्त्व डिजिटल साहित्यक आरम्भिक वितरण-व्यवस्था देखबमे अछि, वर्तमान सेवा-सूचना देबमे नहि। तिथि, स्थल आ प्लेटफॉर्म सम्बन्धी जानकारीकेँ मूल पाठक तत्कालीन उल्लेख मानि सुरक्षित रखब चाही; वर्तमान संचालन वा लिंकक उपलब्धता स्वतः मानि नहि सकैत छी। एहि भेदक बिना साहित्यक इतिहास आ क्षणिक प्रचार-सूचना एक दोसरामे मिलि जाएत।

रचनाक बादक भाग फेर समानान्तर साहित्य, भाषिक प्रतिनिधित्व आ अन्तर्राष्ट्रीय अनुवाद-विवाद दिस मुडैत अछि। एहि विषयसमूहक अन्तर्सम्बन्ध सम्भव अछि, मुदा प्रत्येक पुनरावृत्त तर्कक योगदान देखाएब आवश्यक अछि। समानान्तर आन्दोलनक वैश्विक पहिचानक तर्क लेल केवल भाषा-पार उपस्थिति नहि, अनुवादक पाठ, पाठक-प्रतिक्रिया आ वास्तविक चयन-प्रक्रियाक प्रमाण सहायक होयत। निबन्धक मूल उपलब्धि मैथिली कृतिक अनुवादक माध्यमसँ नव सार्वजनिक मंचपर पहुँचबाक विशिष्ट प्रकरण दर्ज करब अछि; सीमा प्रचार-वृत्तान्त, ऐतिहासिक दावा आ विस्तृत समीक्षा बीच स्पष्ट विभाजनक अभाव अछि।

४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि

सैंतालीसम निबन्ध बहुविषयक सम्पादकीय संकलन सन देखाइत अछि। वैदिक पुरोहितवर्ग, लोकगीतमे सीता आ मलाहक संवाद, बंजारा समुदायक स्वयं-परिचय, लोककथा, जातिगत शब्दप्रयोग आ साहित्यिक संस्थाक आलोचना एहि पाठमे आएल अछि। एहि वैविध्यक भीतर एकटा केन्द्रीय प्रयत्न लोकसमुदायक अपन आवाजकें शास्त्रीय अथवा संस्थागत एकरूपीकरणसँ मुक्त करब अछि। उदाहरणतः बाहरक लोक द्वारा प्रयुक्त समुदाय-नाम आ समुदायक अपन पहिचान बीच अन्तर लोकसंस्कृति-समीक्षाक मूल नैतिक प्रश्न थिक। मुदा मौखिक साक्षात्कार, कथित वैदिक इतिहास आ सम्पादकीय टिप्पणीकें प्रमाणक एहि श्रेणीमे राखला पर तर्क कमजोर भऽ जाइत अछि।

सीता-मलाह गीतक अंश लोककथाक बहुअर्थकता प्रकट करैत अछि; एहि प्रकारक गीतकें केवल आदर्श धार्मिक कथाक सरलीकृत अनुवाद मानब नहि चाही। गीतक सन्दर्भ, गायक, स्थान, गानक अवसर आ पाठभेद जँ उपलब्ध हो तँ स्त्रीक विनोद, वर्गगत मोलभाव आ स्थानीय मिथकीय स्मृतिक विवेचन सम्भव होयत। एहि निबन्धमे वर्णित बंजारा वा आन समुदाय सम्बन्धी सामान्य कथनकें सामुदायिक जीवनक पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि मानब उचित अछि। लोकपरम्परा स्वयं एकरूपी नहि; भिन्न क्षेत्र आ समयमे ओकर बहुवचन स्वरूप होइत अछि।

पाठ डिजिटल जोखिम, आत्मछवि, पर्यावरण आ समानान्तर साहित्यक घोषणासँ सेहो सम्बन्ध रखैत अछि। ई सम्पादकीय विस्तार समाजक प्रश्नसभकें एहि साहित्यिक आन्दोलनक मूल्य-मानकसँ देखबाक संकेत दैत अछि, मुदा विषयगत क्रम अक्सर अत्यल्प संक्रमणसँ बदलैत अछि। एकर शक्ति लोकवाणी, सामाजिक श्रेणीकरण आ सांस्कृतिक विविधताक प्रति सजगता अछि; सीमा अत्यन्त भिन्न साक्ष्य-श्रेणीक बीच ऐतिहासिक निष्कर्षक तीव्रता अछि। समीक्षाक विकसित रूपमे लोकगीतक अभिलेख, समुदाय-परिचयक प्रत्यक्ष स्रोत, वैदिक पदक पाठान्तर आ सम्बद्ध कृतिक मूल उद्धरण अलग-अलग प्रस्तुत होबाक चाही।

४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था : एकटा विमर्श

अइतालीसम निबन्ध साहित्य अकादेमीसँ सम्बद्ध मैथिली साहित्यिक संस्थासभक पुरान आ नव सूचीकेँ एक-दोसरक सामने राखैत अछि। एहि सूची-आधारित प्रस्तुतिक महत्त्व अछि: साहित्यिक प्रतिनिधित्वक विवादकेँ लेखक नाम, पता आ संस्थागत मान्यताक औपचारिक अभिलेखक सहायता सँ उठबैत छथि। लेखक दू संस्थाक हटाओल जाएब आ तीन नव संस्थाक जुड़ब सम्बन्धी दावा करैत छथि। एहि बदलावक वास्तविक प्रशासनिक अर्थ बुझबाक लेल सूची जारी करनिहार संस्था, प्रकाशन-तिथि, सूची संशोधनक नियम, संस्थाक उद्देश्य आ अधिकृत निर्णयपत्र स्वतंत्र जाँचब आवश्यक अछि।

निबन्धक कठोर भाषा संस्था-सत्ता आ साहित्यिक प्रतिनिधित्वपर असन्तोष व्यक्त करैत अछि। मुदा लेखकक 'गैर साहित्यिक' सन मूल्याङ्कनकेँ स्वयंसिद्ध तथ्य नहि मानब चाही। संस्थाक विधान, नियमित साहित्यिक आयोजन, प्रकाशन, सदस्यता आ सार्वजनिक लेखापरीक्षा सन कसौटी विकसित केलाक बाद तुलनात्मक निष्कर्ष सम्भव होयत। व्यक्तिगत सम्बन्ध वा परामर्शदात्री समितिसँ नजदीकीक संकेत हित-संघर्षक जाँच आरम्भ कऽ सकैत अछि, मुदा केवल संकेत स्वयं हित-संघर्ष सिद्ध नहि करैत अछि। एहि अन्तरकेँ नहि राखला पर संस्थागत आलोचना व्यक्तिगत आरोपक आवरण बनि सकैत अछि।

मूल प्रबन्धक विशिष्ट योगदान साहित्यिक सार्वजनिक निर्णय-प्रक्रियाक पारदर्शिताकेँ आलोचनाक विषय बनायब अछि। पुरान आ नव सूचीक वास्तविक मिलान एकटा पुनरुत्पाद्य सारणीमे देखाओल जा सकैत अछि: संस्था, पुरान स्थिति, नव स्थिति, तिथि आ प्राथमिक दस्तावेज। मैथिलीक साहित्यिक संस्थासभक सामाजिक उपयोगितापर बहस तखने अधिक विश्वसनीय बनत जखन नीति-निर्णय, संगठनक वास्तविक काज आ लेखकक मूल्यगत आपत्ति स्पष्ट अलग रहत।

४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

उनचासम निबन्ध हरिमोहन झाक 'कन्यादान'क अंग्रेजी अनुवाद 'The Bride' सम्बन्धी बहससँ समानान्तर मैथिली साहित्यिक भाषिक-ऐतिहासिक प्रश्न दिस

जाइत अछि। लेखक अनुवादक भूमिका, मैथिलीक स्वतन्त्र भाषा-स्थिति आ संस्थागत मान्यताक कालक्रमक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। मुख्य प्रतिज्ञा ई अछि जे कोनो भाषाक ऐतिहासिक अस्तित्व पुरस्कार अथवा संवैधानिक मान्यतासँ आरम्भ नहि होइत। ई भेद साहित्यिक इतिहासक लेल मूलभूत अछि: संस्थागत स्वीकृति एक राजनीतिक-प्रशासनिक घटना अछि; भाषिक समुदाय, साहित्यिक परम्परा आ लिखित अभिलेख ओकरा सँ पहिनहुँ रहि सकैत अछि। मुदा ऐतिहासिक निरन्तरताक प्रत्येक दावाक लेल प्रमाणित पाठ, कालक्रम आ भाषावैज्ञानिक आधार अलग अपेक्षित अछि।

निबन्धमे संविधानक अष्टम अनुसूची सम्बन्धी वर्षक त्रुटि इंगित कएल गेल अछि आ १९९३ आ २००३क अन्तरपर प्रश्न उठाओल गेल अछि। एहि उदाहरणसँ अनुवादक आमुख अथवा प्रकाशकीय परिचयक तथ्य-सटीकताक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। कोनो श्रेष्ठ मूल कृतिक अंग्रेजी प्रस्तुति जँ भाषिक इतिहासक आधारभूत तथ्य गलत देत तँ नव पाठकक सामने समूची भाषा-परम्पराक विकृत छवि बनि सकैत अछि। तथापि एहि विशिष्ट त्रुटिक आधारपर अनुवादक पूर्ण कलात्मक मूल्याङ्कन तय नहि होयत। तकर लेल मूल उपन्यासक भाषा, हास्य, संवाद, सामाजिक आलोचना आ अंग्रेजी कथनक प्रसङ्ग-दर-प्रसङ्ग मिलान आवश्यक अछि।

पञ्जी, जातिगत परिचय, गङ्गेश उपाध्याय आ साहित्यिक संस्थासभपर मूल लेखकक तीव्र आलोचना निबन्धमे विस्तारित अछि। एहि प्रसङ्गसभमे ऐतिहासिक दस्तावेज, परम्परागत कथन, अनुवादक व्याख्या आ लेखकक आरोपक बीच स्पष्ट भेद राखब शोधक अनिवार्य शर्त अछि। जकरा लेखक अप्रमाणित अथवा पूर्वाग्रही मानैत छथि, ओकरा प्रतिपक्षक मूल पाठ बिना स्वतः अन्तिम निर्णय नहि मानब। निबन्धक उपलब्धि मैथिलीक स्वायत्त भाषिक इतिहासक अनुवाद-सम्पादनक केन्द्रीय नैतिक प्रश्न बनायब अछि; एकर सीमा किछु ठाम प्रामाणिक पाठ-तुलनाक अपेक्षाकृत कम विस्तार आ विवादात्मक भाषाक तीव्रता अछि।

५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्तसमागमक पुनर्पाठ

पचासम निबन्ध संस्थागत साहित्यिक राजनीति आ ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'क व्यंग्य परम्पराक एक पाठीय संरचनामे जोड़ैत अछि। एक दिस

साहित्य अकादेमीक मान्य संस्थासभ, परामर्शदात्री समिति, अनुवाद आ पुरस्कार-संबन्धी निर्णयक आलोचना अछि; दोसर दिस मध्ययुगीन प्रहसनक धूर्त पात्रसभक सहायतासँ आधुनिक सत्ता-व्यवहारक व्याख्या होइत अछि। एहि रूपकक साहित्यिक शक्ति अछि—प्रहसनक कपट, स्वार्थ आ सत्ता-लिप्साक रूपरेखा आधुनिक अनुभवक एकटा आलोचनात्मक भाषा उपलब्ध करबैत अछि। मुदा व्यंग्यात्मक साम्य वास्तविक संस्थागत अनियमितताक स्वतन्त्र प्रमाण नहि होइत।

मूल पाठमे राजदेव मण्डलक मूल्याङ्कन, निर्णायक लोकनिक भूमिका आ कथित उपेक्षाक विषयमे नाम सहित कठोर आरोप अछि। शोध-समीक्षामे एहि कथनसभकेँ मूल लेखकक आरोपक रूपमे पहिचानब चाही; सम्बन्धित कृतिक स्वीकृत/अस्वीकृत प्रविष्टि, पुरस्कार-वर्षक नियम, निर्णायकक लिखित निर्णय, हित-संघर्षक अधिकृत विवरण आ प्रतिपक्षक उत्तर उपलब्ध भेला परहँ सार्वजनिक निष्कर्ष विश्वसनीय बनत। 'द्रोण' आ 'एकलव्य'क रूपक संस्थागत असमानताक अनुभवकेँ नाटकीय तीव्रता दैत अछि, मुदा प्रतीकात्मक पात्र-विन्यास न्यायिक वा ऐतिहासिक साक्ष्यक विकल्प नहि।

'धूर्तसमागम'क कथापर लेखकक टिप्पणीमे संस्कृत प्रहसन, मैथिली गीत आ लोकविनोदक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। ई खण्ड अलग साहित्यिक समीक्षाक माँग करैत अछि: प्रहसनक संरचना, साधु-शिष्य पात्र, संवादक बहुभाषिकता आ हास्यक सामाजिक धारक अध्ययन। जँ एहि मूल पाठक सुसंगत विवेचनकेँ आधुनिक संस्थागत बहससँ स्पष्ट सूत्रमे जोडल जाय, तँ निबन्ध भारतीय नाट्य-व्यंग्य आ साहित्यिक सार्वजनिकताक सशक्त तुलनात्मक अध्ययन बनि सकैत अछि। उपलब्ध रूपमे एकर उपलब्धि व्यंग्यक ऐतिहासिक सामर्थ्य याद करायब अछि; सीमा व्यंग्यात्मक अभियोग आ दस्तावेजी आरोपक सीमा अस्पष्ट रहब अछि।

५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श

एकावनम प्रबन्धक शीर्षक २०२२क मैथिली अनुवाद पुरस्कार सम्बन्धी विवाद सूचित करैत अछि, मुदा मूल पाठक विस्तार पुरस्कारक तर्कसँ बहुत आगाँ 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन, कथापाठ, पुस्तक-लोकार्पण, सहभागी लेखक आ

साहित्यिक संस्थासभक बहस धरि पहुँचैत अछि। एहि वृत्तान्तक महत्त्व अछि, कारण एकहि समयक मैथिली साहित्यिक सार्वजनिक जीवनक अनेक बिन्दु—पुरस्कारक प्रतिष्ठा, गोष्ठीक आत्मसंगठन, कथाकारक सक्रियता आ पुस्तक-वितरण—दर्ज भऽ जाइत अछि। शीर्षकक अपेक्षा विषयवस्तु व्यापक होयब सम्पादकीय संरचनाक विशेषता सेहो अछि आ एकर अस्पष्टता सेहो।

पुरस्कारक निर्णयक सम्बन्धमे मूल लेखक निर्णायक लोकनिक मतभेद, पक्षधरता आ संस्थागत व्यवस्थापर टिप्पणी करैत छथि। एहि दावासभक शोधगत परीक्षण लेल पुरस्कारक अधिकृत घोषणा, निर्णायक-मण्डलक सार्वजनिक दस्तावेज, मूल अनूदित पुस्तक आ स्रोत भाषाक मूल ग्रन्थ आवश्यक होयत। केवल पुरस्कार पेनिहार अथवा निर्णायकक नामक आधारपर अनुवादक गुण-दोष निर्णय नहि बनैत अछि। साहित्यिक आलोचनाक मूल प्रश्न अनुवादमे अर्थ, शैली, मुहावरा, सांस्कृतिक सन्दर्भ आ कथन-विन्यास कतेक सुरक्षित रहल, से अछि। आन्तरिक बहसकें तथ्यरूपेँ दोहरायब आ तकर पाठगत परीक्षण दुनू भिन्न कार्य छथि।

रहुआ संग्राममे आयोजित गोष्ठीक विस्तृत कथा-सूची, सहभागी नाम आ पोथी-लोकार्पणक उल्लेख निबन्धक मूल्यवान दस्तावेजी अंश अछि। एहि सूचीक स्थिर रूप पाठककें एक समकालीन साहित्यिक नेटवर्क देखबैत अछि, यद्यपि सूचीमे नाम उपस्थित रहब समूचा आयोजनक गुणवत्ता अथवा संस्थाक प्रतिनिधित्वक पूर्ण माप नहि। निबन्धक अन्य भागमे कमलानन्द झाक समालोचनापर विवाद अछि; एतयो सम्बद्ध मूल समीक्षा आ आक्षेपित कृतिक पूर्ण पाठक मिलान अनिवार्य अछि। एहि बहुअंशीय लेखनक ऐतिहासिक मूल्य 'साहित्यिक घटना-सूची'क रूपमे अधिक स्पष्ट अछि; एकर आलोचनात्मक सीमा विषयान्तर आ आरोपक प्रमाणिक स्तरक असमानता अछि।

५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) प्रसंग

बावनम निबन्ध मैथिली परामर्शदात्री समितिक गठन आ साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत अछि। मूल लेखक सदस्यसूची देबाक संग सामाजिक पृष्ठभूमि आ समानान्तर लेखकसमुदायक अनुपस्थितिपर तीव्र आपत्ति करैत छथि। प्रतिनिधित्वक ई बहस महत्त्वपूर्ण अछि, कारण भाषा-

संस्थाक परामर्शक अधिकार केवल व्यक्तिक प्रतिष्ठासँ नहि, विविध विधा, क्षेत्र, लिंग आ सामाजिक अनुभवक सुनवाईसँ सेहो सम्बद्ध अछि। मुदा जातिगत वर्गीकरण, मनोनयनक प्रेरणा आ भविष्यक पक्षपात सम्बन्धी लेखकक प्रत्येक निष्कर्षकेँ अधिकृत सदस्यता-अभिलेख, चयन-नियम आ वास्तविक निर्णयसभसँ अलग जाँचब आवश्यक अछि। व्यक्तिक पहचान सम्बन्धी अनुमानकेँ प्रमाणक बदला प्रयोग नहि कयल जाय।

निबन्धक दोसर विस्तृत भाग कला-आस्वादन दिस मुडैत अछि। मोहनजोदडोक कांस्य नारी-मूर्तिक अंगविन्यास, मुद्रा, आभूषण आ सौन्दर्य-निर्णयक चर्चा सँ लेखक कलाक औपचारिक गुण चिन्हैत छथि। ई प्रसङ्ग सम्पादकीय विवादसँ स्वतन्त्र एकटा समालोचनाशास्त्रीय प्रश्न खोलैत अछि: कला मूल्याङ्कनमे दृश्य-वस्तुक प्रत्यक्ष रूप, ऐतिहासिक कल्पना आ दर्शकक अर्थारोपण कतेक अलग? मूर्तिक प्रसिद्ध नाम, काल, आकार आ संग्रहालय-स्थिति जाँचबाक विषय छथि; दृश्य-वर्णनमे लेखकक निजी आस्वादन कलाक समूचा ऐतिहासिक अर्थ नहि बनैत अछि।

दुनू विभागकेँ जोडनिहार व्यापक सूत्र 'निर्णायकक दृष्टि' थिक। समिति साहित्यक प्रतिनिधित्व निर्धारित करबाक शक्ति रखैत अछि, जखन कि कला-आलोचक दृश्य-वस्तुक महत्त्वक व्याख्या करैत छथि। दुनू प्रकरणमे निर्णयक विधान, प्रमाण आ वैकल्पिक दृष्टिक प्रश्न उठैत अछि। मुदा ई सूत्र मूल पाठमे स्पष्ट रूपसँ निर्मित नहि, पाठक द्वारा निकसल सम्भावित अन्तर्सम्बन्ध अछि। रचनाक सामर्थ्य संस्थागत चयन आ सौन्दर्य-निर्णयक सत्ता पर प्रश्न उठब अछि; सीमा दू असमान विषयक बीच व्यवस्थित संक्रमणक अभाव अछि।

५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक : संस्था, आन्दोलन आ आलोचना

तिरपनम निबन्ध आकारमे छोट अछि, मुदा सम्पादकीय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण घोषणा करैत अछि। लेखक मिथिला स्टूडेन्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णयकेँ परम्परागत साहित्यिक संस्था आ स्वघोषित नेतृत्वक समानान्तर सामाजिक सक्रियताक सन्दर्भमे देखैत छथि। एतय साहित्यिक पत्रिकाक कार्य केवल कविता-कथाक प्रकाशन नहि, सामाजिक आन्दोलनक काज, प्रभाव आ अन्तर्विरोधक सार्वजनिक समीक्षा सेहो मानल गेल अछि। एहि विषयगत

विस्तारक सम्भावना अछि, कारण भाषा-आन्दोलन साहित्य, शिक्षा, युवा-संगठन आ सार्वजनिक नीति सभसँ जुड़ैत अछि।

निबन्धक सभसँ स्पष्ट सिद्धान्त ई अछि जे विशेषांक 'अभिनन्दन-ग्रन्थ' नहि। लेखक कहैत छथि जे संस्थापर प्रकाशित आलेखसभमे आक्षेप सेहो अछि, आ आलोचनाक आलोकमे सुधार सम्भव अछि। एहि कथनमे सम्पादकीय स्वाधीनताक मूल्य अछि: विशेषांक आयोजनक केन्द्रमे प्रशंसा-समर्पणक बदला बहस आ आत्मसमीक्षा राखब। मुदा निबन्ध स्वयं विशेषांकक सभ आलेखक तर्क, स्रोत, मतभेद आ संस्थाक प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहि करैत अछि। तँ मूल विशेषांक प्राप्त भेला बिना ओकर आलोचनात्मक सन्तुलन अथवा उपलब्धिक सम्पूर्ण निर्णय नहि होयत।

ई लघु सम्पादकीय मैथिली पत्रकारिताक आन्दोलन-समीक्षा लेल एक प्रारम्भिक घोषणा रूपमे पठनीय अछि। विकसित अध्ययनमे संस्थाक कार्यक्रम, सार्वजनिक घोषणापत्र, आर्थिक पारदर्शिता, सदस्यलोकनिक विविधता आ आलोचनाक प्रत्युत्तर पृथक जाँचब चाही। मूल पाठक उपलब्धि कठोर सार्वजनिक बहसकें साहित्यिक प्रकाशनक विधिसंगत काज मानब अछि; सीमा तर्कक घोषित उद्देश्यक तुलनामे संक्षिप्त प्रमाण-विस्तार अछि।

५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी : संगणक, छायांकन, कुँजीपटल, अन्तर्जाल आ ई-प्रकाशन

चौवनम प्रबन्ध मैथिलीमे संगणकीय लेखनक प्रारम्भिक व्यावहारिक इतिहासक विस्तृत सामग्री अछि। लेखक देवनागरी टंकण, लिप्यन्तरणक कुँजीपटल, फॉन्ट, युनिकोड, PDF-निर्माण आ वेबसाइट प्रकाशनक क्रमवार उपाय बतबैत छथि। माइक्रोसॉफ्टक प्राचीन प्रणाली, हिन्दी IME, बराह, प्रीति फॉन्ट आ तिरहुता सम्बन्धी पुरान साधनसभक नाम एतय तकनीकी इतिहासक प्राथमिक साक्ष्य छथि। एहि विशिष्टताकें जतनसँ पढ़ब आवश्यक अछि: जे निर्देश अपन मूल लेखनकालमे उपयोगी छल, से आजुक उपकरण, परिचालन-प्रणाली अथवा सुरक्षा-मानकमे जरूरी नहि चलत। विधिक ऐतिहासिक उपयोगिता आ वर्तमान व्यवहार्यता अलग समीक्षाक विषय छथि।

प्रबन्धक सबसे ठोस भाषावैज्ञानिक प्रश्न लिपि-स्वरूप आ पाठ-संकेतक भेद अछि। पुरान ASCII-आधारित फॉन्टमे अक्षरक दृश्य सही देखाइतहुँ वास्तविक पाठक युनिकोड खोज, क्रमबद्धता, प्रतिलिपि आ दीर्घकालीन संरक्षण कठिन भऽ सकैत अछि। लेखक युनिकोडक आवश्यकता संकेत करैत छथि आ PDFक पठनीयता बनाम संशोधनीयताक लाभ-हानि चर्चा करैत छथि। एतय लिपिक सौन्दर्य आ अक्षरक डिजिटल संकेतांकक बीच अन्तर स्पष्ट होइत अछि। मैथिली, तिरहुता आ कैथी-संबन्धी डिजिटल दीर्घजीविताक आलोचना लेल पुरान फाइलक वास्तविक एन्कोडिंग, रूपान्तरण-परीक्षण आ खोजनीयता जाँचब एक उपयोगी आगामी चरण अछि।

जालस्थल निर्माण, बहु-ब्राउजर परीक्षण, प्रकाशन-प्रवाह आ लिखित सामग्रीक संजालसम्पर्क सम्बन्धी सुझाव प्रबन्धकें स्वतःअध्ययन मार्गदर्शिकाक गुण सेहो दैत अछि। मुदा एक-एक बटनक नाम, पुरान प्लेटफॉर्म आ 'असीमित' निःशुल्क सेवा सम्बन्धी कथन समयबद्ध छथि। प्रस्तुत लेखनक मूल्य तकनीकी सूची केलासँ अधिक मैथिलीकें डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रमे स्वावलम्बी बनेबाक वैचारिक आग्रहमे अछि। २०२६क पाठक लेल स्थायी मानक—युनिकोड पाठ, मुक्त संगत प्रारूप, सुरक्षित अभिलेखन, पहुँचयोग्यता, संस्करण-नियन्त्रण आ दीर्घकालीन लिंक—ऐतिहासिक निर्देशसँ अलग अनुशीलित करब चाही।

५.५. अन्तर्जाल आ मैथिली

पचपनम निबन्ध अन्तर्जालकें मैथिली लेखक आ पाठकक बीच चौबीसो घंटा उपलब्ध सार्वजनिक मंचक रूपमे कल्पित करैत अछि। नियमित प्रकाशन, दूरीक बाधा घटब, कम खर्च आ प्रवासी समुदायसँ निरन्तर संवाद लेखकक मुख्य तर्क छथि। एहि कल्पनामे अन्तर्जाल मात्र प्रेषण-उपकरण नहि, सीमित मुद्रित वितरण-व्यवस्थाक वैकल्पिक साहित्यिक सार्वजनिकता अछि। तथापि प्रकाशनक खर्च 'शून्य' बुझब व्यावहारिक दृष्टिसँ अधूरा अछि; उपकरण, नेटवर्क, संरक्षण, सम्पादन आ दीर्घकालीन रखरखाव वास्तविक श्रम आ संसाधन माँगैत अछि। वितरणक बाधा घटब आ वितरणक समस्या पूर्ण समाप्त होयब दुनू अलग बात अछि।

निबन्धमे डोमेन-नामक खरीद, पुरान माइक्रोसॉफ्ट फ्रन्टपेज, गूगल आ वर्डप्रेसपर जालवृत्त तैयार करबाक निर्देश अछि। ई अंश आधुनिक तकनीकी

पाठक लेल इतिहास-सामग्री छथि; वर्तमान सेवा अथवा सुरक्षित निर्माण-विधि नहि। तत्कालीन संचार-परिवेश बुझबाक लेल लेखकक उल्लेखनीय चिन्ता स्पैम, झूठ नामसँ टिप्पणी, जाल-अपराध आ साहित्यिक संचारक दुरुपयोग अछि। एहि कारण लेखन डिजिटल लोकतन्त्रीकरणक उत्साहक संग विश्वसनीयता आ उत्तरदायित्वक प्रश्न सेहो उठबैत अछि।

मुद्रणक आगमन आ उपन्यासक ऐतिहासिक प्रतिष्ठाक तुलना द्वारा लेखक डिजिटल साहित्यकें मुद्रित साहित्यक सहचर मानैत छथि। ई कथन दीर्घकालीन साहित्यिक अध्ययन लेल फलदायी अछि: माध्यम बदलैत अछि, मुदा सम्पादन, प्रमाण, पाठ-संस्करण, आलोचना आ पाठकक मूल्यांकन आवश्यक रहैत अछि। अन्तर्जाल प्रवासी लोकनिक सहभागिता बढ़ाबि सकैत अछि, मुदा सीमित पहुँचवला पाठक आ लुप्त होइत डिजिटल सामग्री सेहो ध्यान माँगैत अछि। निबन्धक उपलब्धि मैथिली ई-प्रकाशनक आरम्भिक मूल्य-दृष्टि अछि; सीमा आजुक संदर्भमे अप्रासंगिक भेल तकनीकी निर्देश आ अत्यधिक सामान्यीकृत लाभ-दावा अछि।

५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार

छप्पनम निबन्ध आत्मविश्वास, नैतिक आचरण, पर्यावरण-संवेदना, डिजिटल सत्यता आ भाषा-प्रौद्योगिकीकें एक छोट सम्पादकीय रूपमे समेटैत अछि। आरम्भमे लेखक दोसरक दृष्टिसँ अत्यधिक संचालित आत्मछविक आलोचना करैत छथि आ कर्मठता तथा स्वाधीन विवेककें महत्त्व दैत छथि। पुरस्कारक मानक आ दीर्घ संघर्षक मूल्य बीच प्रश्न उठबैत सुभाष चन्द्र यादव आ सुशील सन लेखकक प्रसङ्ग प्रस्तुत करैत छथि। एहि दृष्टिसँ सफलता केवल संस्थागत सम्मान नहि, जीवनक काज आ अपन नैतिक निष्ठासँ सेहो मूल्यांकित होइत अछि। मुदा व्यक्ति-सभक जीवनक सम्पूर्ण मूल्याङ्कन लेल हुनकर वास्तविक रचना आ ऐतिहासिक जीवन-सन्दर्भ अलग अपेक्षित अछि।

निबन्ध गलत समाचार नहि बनायब, साइबर-अपराधसँ बचब, कमजोर लोककें प्रताड़ित नहि करब, प्रकृतिक रक्षा करब आ पशु-पक्षी सहित सहजीवनक आग्रह करैत अछि। एहि सूत्रसभमे संचारक नैतिकता, सामाजिक सम्मान आ पर्यावरणीय न्याय एकत्र उपस्थित अछि। लेखक 'समानान्तर धारा'कें एहि व्यापक नैतिक दृष्टिक नाम देबाक संकेत करैत छथि। तथापि नैतिक

घोषणासभक व्यावहारिक परीक्षण लेल उदाहरण, संघर्षपूर्ण परिस्थिति आ मूल्यसभक आपसी विरोधपर अधिक विचार सम्भव अछि। इष्ट मूल्य गनायब आर ओकर अनुसरणक सामाजिक पद्धति विकसित करब एक नहि।

अन्तमे मैथिली संकेत भाषा, देवनागरी, मिथिलाक्षर, कैथी आ नेवारी सम्बन्धी संकेतक उल्लेख अछि। एतय 'संकेत भाषा'क शब्दार्थ सावधानी माँगैत अछि: श्रवणबाधित समुदाय द्वारा प्रयुक्त स्वायत्त दृश्य-हस्तचिह्न आधारित भाषा आ लिखित लिपिसभ एकहि भाषिक श्रेणी नहि। लिपि अक्षरांकनक तन्त्र अछि, जखन कि प्राकृतिक संकेत भाषाक अपन व्याकरण होइत अछि। एहि अन्तरकें स्पष्ट कयलासँ निबन्धक 'समावेशी संचार' अधिक सटीक बनत। एहि अन्तिम निबन्धक उपयोगिता व्यक्तिगत नैतिकता सँ भाषिक सार्वजनिकता धरि एक व्यापक सेतु बनायब अछि; एकर सीमा किछु तकनीकी पदक अवधारणात्मक अस्पष्टता अछि।

प्रथम खण्डक समग्र आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

'प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना'क प्रथम खण्डमे सत्ताइस सैद्धान्तिक प्रबन्ध आ उनतीस निबन्ध—कुल छप्पन मूल इकाई—उपस्थित अछि। पहिल विभागमे समीक्षाशास्त्र, रस-छन्द, नाट्य, भाषा-विज्ञान, नव्य न्याय, नारीवादी आ दलित साहित्य-विमर्शक कसौटी निर्मित करबाक प्रयत्न अछि। दोसर विभाग एहि कसौटीकें भाषा-संस्था, लोकसंस्कृति, अनुवाद, प्रकाशन, डिजिटल संचार आ सामाजिक सार्वजनिकताक अनुभवक संग जोड़ैत अछि। एहि कारण संकलन एकल विषयक व्यवस्थित पाठ्यपुस्तकसँ अधिक विस्तृत आलोचनात्मक कार्यशालाक रूपमे पठनीय बनैत अछि।

ग्रन्थक सबसे महत्त्वपूर्ण वैचारिक योगदान 'समानान्तर'क अर्थकें केवल संस्थागत विरोधसँ नहि, पाठ उपलब्धता, जाति-लिंगक समावेश, क्षेत्रीय शब्दावली, लोकस्मृति आ भाषिक स्वायत्तताक प्रश्नक माध्यमसँ विस्तारित करब अछि। तिरहुता, शब्द-प्रमाण, कृषि-मत्स्य शब्दावली आ डिजिटल मैथिलीक चर्चा साहित्यिक आलोचनाकें भाषाविज्ञान तथा तकनीकी इतिहाससँ जोड़ैत अछि। एतय एकटा सावधान आलोचनात्मक नियम उठैत अछि: समाजक उपेक्षित आवाजकें स्थान देब साहित्यिक अध्ययनक नैतिक आवश्यकता अछि, मुदा ओहि कृतिक शिल्पक विश्लेषण आ तथ्यक प्रमाण-परीक्षण निरन्तर आवश्यक रहत। पक्षधरता तथ्यक स्थान नहि लऽ सकैत अछि,

जेकाँ तथाकथित निरपेक्षता सामाजिक बहिष्करणकें स्वतः न्यायसंगत नहि बनबैत अछि।

संकलनक संरचनात्मक सीमा विषयक अत्यन्त व्यापक फैलाव, किछु लेखमे समान सामग्रीक पुनरावृत्ति, क्षणिक तकनीकी निर्देश आ तीव्र विवादात्मक भाषा अछि। संस्थागत निर्णय, अनुवादक गुण-दोष अथवा ऐतिहासिक प्राथमिकतापर लिखल आरोपसभक स्वतंत्र स्रोत-पुष्टि नितान्त जरूरी अछि। संगहि, लेखकक अपन रचनाक परिचय अथवा लेखकक स्वतन्त्र चयनकें स्वतः साहित्यिक श्रेष्ठताक निर्णायक प्रमाण नहि मानब चाही। एहि सीमासभक स्पष्ट पहिचान समीक्षा-प्रक्रियाकें दुर्बल नहि, अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि।

एहि प्रथम खण्डक अध्ययनसँ निष्कर्ष निकलैत अछि जे मैथिली साहित्यक आधुनिक आलोचना कें एकहि शास्त्रीय अथवा पश्चिमी पद्धतिमे बन्द करबाक आवश्यकता नहि; मुदा बहुपद्धतिगत आलोचना केवल सिद्धान्तक नामगणना नहि होयबाक चाही। भारतीय रस-ध्वनि, नव्य-न्यायक प्रमाण-भेद, समाजशास्त्रीय परीक्षण, भाषा-साक्ष्य आ आधुनिक पाठ-विवेचनकें प्रसङ्गानुकूल अलग-अलग प्रयुक्त करब अधिक उपयुक्त अछि। प्रत्येक मूल दावाक प्रमाण, प्रत्येक साहित्यिक निर्णयक पाठ-साक्ष्य आ प्रत्येक ऐतिहासिक निष्कर्षक सीमा अलग चिन्हल रहला परहि समानान्तर दृष्टि स्थायी शोध-मूल्य प्राप्त करैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना : सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन। विदेह, संलग्न मूल संयुक्त संस्करण; प्रथम खण्डक सैद्धान्तिक प्रबन्ध १-२७ आ निबन्ध २८-५६।

खण्ड ४१

प्रबन्ध — निबन्ध — समालोचना

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक छप्पन सैद्धान्तिक प्रबन्ध आ निबन्धक मूल पाठाधारित आलोचना संकलित अछि।

रस, छन्द, नाट्य, अनुवाद, नव्य न्याय, नारीवादी आ दलित विमर्शसँ आरम्भ भेल अध्ययन भाषा-विज्ञान, तिरहुता, लोकसंस्कृति, साहित्यिक संस्था आ डिजिटल मैथिली धरि विस्तार पबैत अछि।

भारतीय आ पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धतिक सँग स्रोत-साक्ष्य, प्रतिपक्ष, भाषिक स्वायत्तता आ समानान्तर साहित्यिक वैचारिक प्रश्नपर विस्तृत विचार कएल गेल अछि।

प्रत्येक समीक्षामे मूल लेखकक विचार, तकर आलोचनात्मक परीक्षण, साहित्यिक उपलब्धि आ प्रमाणगत सीमा स्पष्ट चिन्हल गेल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय



विदेह



अभिलेखागार